सुलतान की सेना मे प्रत्येक जाति के अच्छे से अच्छे घोड़े जैसे एराकी, अरबी, पटी, तेज और ताजी आदि थे, जिन पर सवार तुर्क सैनिक तीरन्दाजी और कमनैती में अत्यन्त प्रवीण थे ॥ ६ ॥

ऐसे असिव असवार—असिव—(अशिव) भयंकर, भयावने। अग्गेल गोलं—सेना के अग्र भाग में, हरावल में। भिरे—भिड़े। जून—(युवन्) जवान, वीर। जेते—जितने। सुतत्त—सुतत्त्व, मोक्षतत्त्व। अमोल—अमूल्य, गौरवशाली।

ऐसे भयंकर सवार गोरी की सेना के अग्रभाग मे थे। उनसे युद्ध मे जो जो वीर भिडे वे सभी अमूल्य और गौरव-शाली मोक्ष-तत्त्व को प्राप्त होगए अर्थात् सब के सब मारे गए ॥७॥

तिनं मद्धि—तिन मद्धि—उनके मध्य में। सुल्तान साहाब आयं—सुल्तान शहाबुद्दीन गोरी स्वयं थे। इसे रूप सों—इस प्रकार। फौज बरनाय जाय—फौज का वर्णन किया जा सकता है।

उन (सैनिको और सवारों) के मध्य मे स्वयं शहाबुद्दीन गोरी विद्यमान थे। उनकी सेना का इस प्रकार से वर्णन किया जा सकता है ॥८॥

तिनं घेरियं—तिनं घेरियं—इन्हें घेर लिया। चिहौं ओर—चारों ओर से। घनघोर नीसान बाजं—खूब जोर के बाजे बज रहे थे।

इस प्रकार जिनका ऊपर वर्णन किया गया है उन सब को महाराज पृथ्वीराज ने घेर लिया। उनके चारो ओर युद्ध के घनघोर बाजे बज रहे थे ॥९॥

बज्जिय घोर—बज—बजा। सुमरि—स्मरण करके। काम क्रम—काम करते हो। बीज—बिजली। घट—घटा। गगन मग्ग भई—

धड़। कहीं—कहीं। मध्य—मस्तक। कर—हाथ। अन्तदुरि—अन्तोदरी, अन्तड़ियाँ। जुट्टि—भिड़कर। फुट्टि—फूट गए। उर—वक्षस्थल। दन्त मन्त—दन्ती, हाथी। हय—घोड़े। कुम्भ—मस्तक। असंडह—सूँड। रुंड—धड़। पुपरि—खोपड़ी। हिन्दवान रान—हिन्दुओं के राजा। भय भानमुख—क्रोध से जब मुँह लाल हुआ। गहिय—ग्रहण की, पकड़ी। तेग—तलवार। चहुआन—चौहान।

न किसी की हार होती थी न किसी की जीत। कोई भी योद्धा रोकने से नहीं रुकता था—युद्ध से बाज नहीं आता था। योद्धागण युद्ध करते थे और लड़ते लड़ते धरती पर गिर पड़ते थे। कहीं किसी का धड, कहीं किसी का मस्तक, कहीं किसी का हाथ, कहीं किसी का चरण और कहीं किसी की अंतड़ियाँ बिखर गई थीं। तेज तलवार के वार से कहीं सिर गिर पड़ता था और कहीं दूसरी जगह धड जा पड़ता था। कहीं योद्धाओं के परस्पर भिड़ने से वक्षस्थल विदीर्ण हो जाते थे। हिन्दूपति महाराज पृथ्वीराज चौहान ज्यों ही क्रुद्ध होकर तलवार हाथ में लेते थे त्यों ही कहीं हाथियों के मस्तक पड़े हुए नजर आते थे; तो कहीं उन की सूँड़ें गिरती दिखाई देती थी, कहीं घोड़ों की खोपड़ियाँ फूटती थीं तो कहीं उनके धड़ पड़े दृष्टिगत होते थे ॥१२॥

गही तेग—गही तेग—तलवार पकड़ी। गज जूथ—हाथियों के झुंड। कोप—कुपित, क्रुद्ध। केहरि—सिंह।

हिन्दूपति महाराज पृथ्वीराज ने हाथ में तलवार ली और उसको लेकर वह शत्रुओं पर इस प्रकार टूट पड़े जैसे हाथियों के झुंड पर कुपित सिंह टूट पड़ता है ॥१३॥

करे रुण्ड—करी-कुम्भ—हाथियों के मस्तक । हुकि—ललकार कर। भारे—बड़े ।

उन्होंने योद्धाओं को खंड खंड करके रुंड-मुंड कर दिया और गजों के कुंभस्थल फाड डाले जिसको देखकर उनके बड़े बड़े शूर-सामन्त भयंकर गर्जना करने लगे ॥१४॥

करी चीह—करी चीह चिक्कार—हाथी चिंघाड़ने और चीखने लगे। करि कल्प—हाथियों का झुंड । भग्गे—भागे। मदं तज्जियं—अपनी मस्ती को भूलकर । लाज ऊमङ्ग मग्गे—लाज की उमंग में निमग्न हुए ।

मदमस्त हाथी अपनी मस्ती को भूलकर और दीर्घ चिंघाड मार कर युद्ध से भाग खड़े हुए और इस तरह लज्जा जनित कार्य मे निमग्न हुए ॥१५॥

दौरे गजं—दौरे गजं अंध—हाथी अन्धाधुन्ध दौड़ा। चहुआन केरो—पृथ्वीराज चौहान का । गिरद्दं—गर्द, धूल । चिहौं चक्क—चारों ओर, चारों दिशाओं ।

महाराज पृथ्वीराज के आक्रमण के समय उनका हाथी अन्धाधुन्ध दौड़ा जिसके दौडने से चारों दिशाओं धूल से व्याप्त हो गईं ॥१६॥

गिरद्दं उड़ी—गिरद्दं उड़ी—धूल उड़ी । भान—सूर्य । अन्धार रैन—रात्रि का सा अँधियारा । गई सुधि—सुध बुध भूल गई, होश हवास उड़ गए । सुज्झै नहि मज्झि नैनं—आँखों से कुछ दिखाई नहीं देता था ।

इसमें इतनी धूल उड़ी कि सूर्य ढक गया और रात्रि का सा अन्धकार छा गया । उस समय सारी सुध-बुध खोगई और आँखों को भी कुछ नजर नहीं आता था ॥१७॥

सुन्दरी पद्मावती का दूल्हा पृथ्वीराज चौहान सुलतान मुहम्मद गोरी को कैद करके दिल्ली नगर के निकट पहुँच गया ॥२२॥

बोलि विप्र सोधे—विप्र—ब्राह्मण। सोधे लग्न—मुहूर्त सोध कर। शुभ घरी परट्टिय—शुभ घडी परखवाई। हर बाँसह—हरे बाँस की। भाँवरि—फेरे। गाँठिय—गंठबन्धन करके। चौरी—वेदी, मंडप। जु—जो। प्रत्ति वर—सुन्दर प्रीति की या शुभ विवाह की। डण्ड्यो—दंड लिया, दंडित किया। अट्ठ सहस—आठ हजार। हय—घोडे। वर—श्रेष्ठ। सुवर—सुन्दर, बलवान्। षट भेस—छहों भेषों के याचकों को। द्रुग्गा—दुर्ग, गढ, महल। हुजर—हजूर।

ब्राह्मणों को बुलाकर शुभ मुहूर्त निकलवाया और शुभ घड़ी निश्चित हुई तथा हरे बाँसो का विवाह का मडप बनवाया गया। तब महाराज पृथ्वीराज ने पद्मावती के साथ गंठबन्धन करके भाँवरे लीं। उस यज्ञ वेदी मे ब्राह्मण लोग वेद मंत्रो का उच्चारण करते हुए होम कर रहे थे। इस प्रकार धूमधाम से दूल्हा पृथ्वीराज का दुलहिन पद्मावती से विवाह हो गया। शाहबुद्दीन गोरी को दंडित करके उससे जो आठ हजार बलवान घोड़े ले लिए थे वे सब विविध याचको को आदर-पूर्वक दान करके महाराज पृथ्वीराज किले पर चढ गये ॥२३॥

चढ़े राज द्रुग्गह—सुमत—सुबुद्धिवाले। हिन्दवान सिरताज—हिन्दुओं के सिरमौर अर्थात् हिन्दू-पति।

परम बुद्धिमान् हिन्दू-पति महाराज पृथ्वीराज अत्यधिक हुलास और आनन्द के साथ राज-महल पर चढ़ गये ॥२४॥

मलिक मोहम्मद जायसी

इस प्रकरण मे गोरा की वीर-गति या सुलतान अलाउद्दीन के पंजों से राजा रतनसेन के छुटकारे की कथा है । राजा रतनसेन की रानी पद्मावती अति रूपवती थी। सुलतान अलाउद्दीन को जब उसके रूप-लावण्य का पता लगा तो वह उस पर मुग्ध हो गया और उसे प्राप्त करने की चेष्टा करने लगा। सुलतान ने चित्तौड पर आक्रमण कर दिया। पर जब कई वर्ष चित्तौड को घेरे पडे रहने पर भी उसे सफलता न मिली, तब उसने राजा रतनसेन से सधि कर ली और राजा के यहाँ मेहमान के रूप मे गया। राजा ने सुलतान के आतिथ्य-सत्कार मे कोई बात उठा न रखी। लौटते समय सुलतान को किले से बाहर विदा करने के लिए राजा स्वयं आया। उस समय सुलतान ने धोखे से राजा को कैद कर लिया। राजा शाही कैदी हो गया, और रानी पद्मावती राजा को कैद से छुडाने का उपाय सोचने लगी। रानी ने गोरा और बादल दोनो वीरो को बुलाया और दिल्ली चलने के लिए कहा। दोनों वीर तैयार हो गए। १६०० डोले तैयार किए गए जिनमे शस्त्रधारी योद्धा थे और जिन्हे चार-चार योद्धा उठाए हुए थे। सुलतान को सूचना पहुँचाई गई कि पद्मावती आपकी रानी बनने को तैयार है, पर एक बार उसे राजा रतनसेन से बात करने दी जाय। सुलतान ने तुरन्त आज्ञा दे दी। जब डोले राजा के पास पहुँचे तो उनमे से सब वीर निकल पडे और राजा को कैद से छुडा लाये।

सुलतान को जब इसका पता चला तो उसने उनका पीछा

करने के लिए अपनी सेना भेजी। राजपूत वीर बड़ी वीरता से लड़े परन्तु गोरा ने जो वीरता दिखाई वह अत्यधिक सराहनीय थी। उसने अनेकों को तलवार के घाट उतार दिया और कइयों को मसल डाला। अन्त में गोरा लड़ते-लड़ते थक गया, दुश्मनों ने उसे घेर लिया और वह घायल हो कर युद्ध-क्षेत्र में गिर पड़ा। इस प्रकार दुश्मनों के दाँत खट्टे करके गोरा ने वीरगति प्राप्त की। पर राजा चित्तौड़ पहुँच गया। मूल पुस्तक के पृष्ठ ११ पर 'गोरा-बादल-खंड' नामक शीर्षक भूल से छपा है। पृष्ठ १७ पर 'गोरा-बादल-युद्ध-खंड' छपना चाहिए।

सोरह सै चंडोल—चडोल—डोलियाँ। कुँवर—राजपुत्र, राजपूत वीर। सजोइल = सुसज्जित। बिवानू—विमान, पालकी। भानू—सूर्य। ढारा = डुलने लगे, हिलने लगे लटकाए गए। सुरंग—सुन्दर रंग के। ओहार—ओवार, परदा। कहत चले—प्रकट करते हुए चले। कँवल—कमल, यहाँ पद्मावती से अभिप्राय है। बेली = लता, यहाँ सखी से अभिप्राय है।

सोलह सौ डोलियाँ सुसज्जित की गई और उनमें राजपूत वीरों को सुसज्जित करके बिठाया गया। रानी पद्मावती का भी विमान सजा और उसमें एक लुहार को इस प्रकार छिपा कर बिठाया गया कि उसका पता सूर्य को भी नहीं चल सकता था। डोलियों और पालकियों को अच्छी तरह सुसज्जित करके उनके चारों ओर चँवर लटकाये गए और उन पर रंगीन परदे और मोतियों की झालरें डाली गई। इस तरह सजा कर वे सब डोलियाँ रवाना की गई। बलवान् गोरा और बादल उनके साथ हो लिये और यह प्रकट करते हुए चले कि रानी पद्मावती दिल्ली को जा रही हैं। उन डोलियों पर हीरा आदि

रत्न झूल रहे थे और उन डोलियो (के सौन्दर्य) को देखकर देवता लोग भी चकरा जाते थे। यह भी प्रकट किया गया कि डोलियों के साथ सोलह सौ सखियाँ जा रही हैं भला जब कमल ही न रहा तो बेले कैसे रह सकती है ? अर्थात् जब पद्मावती ही चित्तौर मे नहीं रही तो सखियाँ रह कर क्या करेंगी ?

राजहिं चली—ओल—ज़ामिन—जमानत । तुरि—घोडे। खिची—बढ़ीं ।

वहाँ रानी ज़ामिन होकर राजा को छुडाने चली, साथ मे तीस हज़ार घोडे और सोलह सौ पालकियाँ भी बढीं ।

राजा बँदि जेहि के—जेहि के सौंपना—जिसके सुपुर्द किया गया था। गा—गया। तेहि पहँ—उसके पास । अगमना—आगे चढ़कर। टका लाख दस—दस लाख रुपये। अँकोरा—घूँस, रिश्वत। पायँनाए—पैर पकडकर। बिनवौ—विनयपूर्वक कर दीजिए। विनती करै—प्रार्थना करती है। आइ हौ दिल्ली—मै दिल्ली में आई हूं। मोहि स्यो—मेरे पास। कुंजी—चाबी, कुंजी। देखि अँकोर भए जल पानी—घूँस को देख कर पानी पानी होगया, अर्थात् पसीज गया।

राजा रतनसेन को बंदी बनाकर जिस व्यक्ति के सुपुर्द किया गया था, गोरा आगे बढकर उसके पास गया। उसे दस लाख रुपये रिश्वत के लिए और उसके चरण पकडकर यह प्रार्थना की कि आप जाकर बादशाह से प्रार्थना कर दें कि रानी पद्मावती आई हुई हैं और कहती हैं कि मै अब दिल्ली मे आगई हूं पर चित्तौड़ की कुंजी मेरे पास है और साथ ही यह भी विनती करती हैं कि चित्तौड़ गढ़ के खजाने और सारे भडारो की चाबियां भी मेरे पास हैं। यदि

एक घड़ी के लिए आज्ञा मिल जाय तो मैं राजा को चाबियाँ देकर देहली के राज-महलों मे आजाऊँ। यह सुनकर वह रखवारा (रक्षक) सुलतान के पास गया क्योंकि वह रिश्वत देखकर पसीज गया था।

लीन्ह अँकोर हाथ—जिसके हाथ से उसने (रखवारे ने) रिश्वत ली थी उसी के हाथ में उसने अपने प्राण भी अर्पित कर दिए। फिर गोरा ने उसे जिधर चाहा उधर ही चलाया क्योंकि रिश्वत ले लेने पर वह किसी प्रकार इनकार नहीं कर सकता था ॥२॥

लोभ पाप कै नदी—सत्त—सत्य। हाथ जौ बोरा—हाथ जिसने डुबो दिया, जिसने हाथ में रिश्वत ले ली। नीक—अच्छा। ठाकुर केर—स्वामी का। बिनासै काजू—काम बिगाड़ देता है। भा—हुआ। जिउ—जीव, मन। घिउ—घी। दरब—द्रव्य, धन। जावत—यावत, जितने। नखत—नक्षत्र। तराईं—तारे। जोरि कर—हाथ जोड कर। लेइ सौंपौं—सुपुर्द कर आऊँ।

रिश्वत लोभ और पाप की नदी है जो इस नदी मे हाथ डुबोता है उसका सत्य बह जाता है, अर्थात् जो रिश्वत ले लेता है वह सच्चा रह ही नहीं सकता। जिस राजा के राज्य मे घूँस चलती है वहाँ राज्य-प्रबन्ध ठीक नही हो सकता, वहाँ (रिश्वत खाने वाले नौकर) स्वामी का काम भी बिगाड देते हैं। घूँस लेने से उस रखवाले का मन पिघल कर नरम हो गया और द्रव्य के लोभ से 'उसने डोलियो की देखा तक नहीं। उसने बादशाह के सामने सिर झुका कर कहा, "ऐ जगत के सूर्य, पद्मावती रूपी चाँद आपके यहाँ चला आया है, जितने नक्षत्र और तारे हैं वे सोलह सो डोलियों मे उसके साथ आये हैं। चित्तौर में जितना राज-कोप है उस सब की चाबियाँ वह अपने साथ ले आई है।

वह हाथ जोड कर खडी प्रार्थना करती है कि यदि एक घडी की आज्ञा मिल जाय तो वे चावियाँ वह राजा को सौंप दे।"

इहाँ उहाँ कर—इहाँ = यह लोक । उहाँ = वहाँ, परलोक। कैलास—स्वर्ग, यहाँ शाही महल ।

पद्मावती कहती है "जो मेरे इस लोक और परलोक के स्वामी हैं जिनके दर्शनो की मुझे दोनो लोकों मे आशा है, पहले उनके दर्शन करा दीजिए फिर मुझे बडी खुशी से शाही महलों मे भेज देना" ॥३॥

आग्या भई जाई एक घरी—आग्या भई—आज्ञा मिल गई। छूंछि जो घरी फेरि विधि भरी—खाली घड़ी फिर विधाता ने भर दी अर्थात् परमात्मा की दया से निराश रानी आशान्वित हो गई। कीन्ह जोहारू—प्रणाम किया। उठा कोपि—क्रोध कर उठा। जस छूटा—जैसे ही वह बन्धन से मुक्त हुआ। सिंह जस गाजा—सिंह की भाँति गरजा। खाँडै—तलवारें। तीख तुरंग—तीव्रगामी घोडा। जुगति—युक्ति। टेकी बागा—लगाम पकडी। जिउ ऊपर—प्राण रक्षा के लिए।

बादशाह अलाउद्दीन ने आज्ञा दे दी कि रानी पद्मावती (अपने पति राजा रतनसेन से) एक घडी के लिए जाकर मिल ले। इस प्रकार विधाता ने खाली घडी को फिर भर दिया अर्थात् विधाता की दया से निराश रानी फिर आशान्वित होगई। आज्ञा पाते ही रानी पद्मावती का विमान राजा रतनसेन के पास आया और साथ की डोलियों से सब स्थान (सारी भूमि) घिर गई। पद्मावती के वेश मे जो लुहार इस पालकी मे बैठा हुआ था, उसने पालकी से निकल कर राजा की हथकडी और बेडी काट दीं और राजा को प्रणाम किया। राजा जैसे ही मुक्त हुआ, त्यों ही वह क्रोध करके

उठ खड़ा हुआ। घोड़े पर सवार हो लिया और सिंह की तरह गरजने लगा।

गोरा और बादल दोनों वीरों ने अपने राजा की रक्षा के लिए अपनी तलवारें म्यान से खींच ली और दूसरे राजपूत वीर भी डोलियों से निकल कर सुसज्जित हो गए। उनके घोड़े बड़े ही शीघ्रगामी थे और इतनी तेजी से उड़ते थे कि उनके सिर आकाश को छूते थे फिर भी उन वीरों ने किसी युक्ति से उनकी लगामें हाथों से पकड़ रखीं। जिस जिस वीर ने प्राण रक्षा के लिए खड्ग सँभाला उस मरने वाले वीर ने हजारों को मौत के घाट उतारा।

भई पुकार साह सौं—बादशाह के पास पुकार हुई, जहाँ-पनाह, वे चाँद और तारे नहीं हैं जैसा कि हमने पहले समझा था! जिन पर छल से ग्रहण लगाया था वे ही अब ग्रहण लगाकर जाते हैं, अर्थात् जिस राजा रूपी चाँद को छलकर ग्रहण रूपी आपने पकड़ा था, वे ही राजा और उसके साथी अब आप को ग्रस रहे हैं।

लेइ राजा चितउर—मिरिग—सुग। खरभले—खलबली पड़ गई। चढ़ा साहि—बादशाह ने चढ़ाई कर दी। चढि लाग गोहारी—आक्रमण के लिए पुकार होने लगी। कटक—सेना। अपूर—अपार। परी जग कारी—संसार में अन्धकार छा गया। गहन छूटि पुनि चाहे गहा—ग्रहण एक बार छूट कर फिर ग्रसना चाहता है (फिर लगना चाहता है)। चहुँ दिसि आवे लोपत भानू—चारों दिशाओं से सूर्य ढकता आ रहा है। गोइ—गेंद। उलटि—लौट कर। जुरौं—भिड़ूँ। चौगान—पोलो का खेल। तुरुक—तुर्क, यवन। जोरा—प्रतिद्वन्द्वी। खेलार—खिलाड़ी। गोइ लेइ जाऊँ—गेंद को ले जाऊँ, बाजी मार लूँ।

अब राजपूत वीर राजा रतनसेन को लेकर चित्तौड़ की ओर

चले। उनके छूट जाने से मुसलमानो मे इस प्रकार खलबली मच गई जैसे सिंह के छूटने पर मृगों के झुंड मे मच जाती है। राजा के कैद से निकल भागने का समाचार पाकर बादशाह ने उन पर चढाई कर दी। चारो ओर आक्रमण करने की पुकार होने लगी। बादशाह की सेना इस कदर अपार और अनगनित थी कि सारे ससार मे अँधेरा छा गया। यह देखकर गोरा ने बादल से कहा, ग्रहण छूट गया है परन्तु वह फिर लगना चाहता है, अर्थात् राजा रतनसेन रूपी चन्द्रमा अलाउद्दीन रूपी राहु के चंगुल से एक बार छूट आया है परन्तु वह राहु उसे फिर ग्रसना चाहता है—फिर कैद करना चाहता है। चारो दिशाओं से वह सूर्य को छिपाता आता है अर्थात् चारो दिशाओं से राजा रतनसेन पर शत्रु आक्रमण करने को तत्पर है। अब इसी मैदान मे गेंद खेलनी चाहिए, अर्थात् इसी को युद्ध क्षेत्र बना देना चाहिए। हे गोरा, तू राजा को लेकर आगे बढ और मैं अब लौट कर शत्रु से युद्ध करूँगा। इस चौगान के खेल को खेलना तुर्क क्या जाने ? मै इसका बडा खिलाडी हूँ इस लिए अकेला ही खेलूँगा, अर्थात् मै युद्ध विद्या मे बडा प्रवीण हूँ यवनों को इसका क्या ज्ञान है ? जब मैदान मे गेंद को निकाल ले जाऊँगा, याने रणक्षेत्र मे विजयी होऊँगा, तब मेरा नाम यथार्थ मे बादल रहेगा।

आजु खडग चौगान—आज मै खड्ग रूपी चौगान (गेंद मारने का डंडा) को हाथ मे लेकर और वैरियो के सिरो को गेंद बना कर बादशाह के सामने हट कर खेलूँगा जिससे सारे संसार मे कहानी—कीर्ति—फैल जायगी ॥५॥

तब आगमन होइ गोरा—आगमन होई—आगे बढ कर। संके

जाते हैं। डुंगवै—टीला, किला। जमकातर—यमकाज, दोधारा अस्त्र, एक तरह का खाँडा। डाहौं—गेरूँगा। साँकरे—संकट में। निबाहौं—निस्तार करूँगा।

तब वीरवर गोरा ने आगे बढ़ कर बादशाह की सेना को लल-कारा और कहा—मैं आज दिल खोलकर रण-क्रीडा करूँगा और युद्ध मे अपना दबदबा बैठाऊँगा—नाम कमाऊँगा। मैं, सफेद पर्वत-राज हिमालय की भाँति अचल होऊँगा और मेरा अंग (पैर) टाले भी नहीं टलेगा। जिस प्रकार शरद् मे अगस्त्य के उदय होने पर आकाश से मेघ-घटा विलीन हो जाती वैसे ही आज मुझे देख कर बादशाह की सेना तितर-बितर हो जायगी। मै आज अपने एक सिर को शेषनाग के सहस्त्र फणों के समान देखूँगा। उसी प्रकार अपने दो नेत्रों को इन्द्र के सहस्रो नेत्रों के तुल्य समझूँगा। अपनी भुजाओं को चतुर्भुज विष्णु की उन बाँहों के समान समझूँगा जिन से कंस सदृश बलवान इस दुनियाँ में न रहे और दूसरो की तो गणना ही क्या है? आज मै भीम बन कर रण मे गरजूँगा और राजा रतनसेन को वापिस चित्तौड के किले मे प्रवेश करा दूँगा। आज मैं हनुमान हो कर शत्रुओं पर खांडा गिराऊँगा और संकट से स्वामी का निस्तार करूँगा।

होइ नल नील—मेंड—बाँध। टेकौं—रोकूँ। कटक—सेना। टेंट—टेंटा, आड़ा, टेढ़ा।

आज मैं नल-नील बन कर समुद्र पर बाँध बाँध दूँगा और सुमेरु पर्वत की तरह युद्ध मे अटल और टेढ़ा (कठोर) होकर बादशाह की सेना को रोक दूँगा ॥७॥

ओनई घटा चहूँ—ओनई—उमड़ी हुई। टोरे माहीं—विचलित

नहीं होता है। देव—दैत्य। आदी—बिलकुल, पूरा। वादी—वैरी हरद्वानी—हरद्वान नामक स्थान की, जहाँ की तलवार प्रसिद्ध थी। सेल—भाला। बीजु—बिजली। पानी—कान्ति, चमक। सोह्व बान—सीधे बाण। गाजा—वज्र। वासुकि—सर्पों का एक राजा। नेजा—भाला। इन्दू—इन्द्र। आइ न बाज—आकर न लगें, आकर न पड़ें। जस मैमंत सूंड बिनु हाथी—जैसे बिना सूँड का मदमस्त हाथी हो। पहिलि—प्रथम। उठौनी—चढ़ाई। आवत आई—आते आते ही।

चारो ओर से उमड़ती हुई युद्ध की घटा घिर आई और बाण मेघ की झड़ी की तरह बरसने लगे। तमाम शत्रु मुसलमान गोरा के पास आ पहुँचे तो भी वह अपने स्थान से विचलित नहीं हुआ जैसे पूरा दैत्य हो। उनके हाथों मे हरद्वान की बनी हुई मजबूत तलवारे थीं। उनके भाले इस प्रकार चमकते थे मानो उन पर बिजली का पानी चढ़ा हो। सीधे बाण इस प्रकार आते थे जैसे वज्र हों जिनसे वासुकी भी भयभीत हो उठता कि कहीं वे उसके सिर मे आकर न लगे। जब नेजे उठते थे तो इन्द्र भी मन मे डर जाता था कि कहीं हिन्दू जानकर मुझ पर न आ पडे। बिना सूँड के मस्त हाथी के समान गोरा ने, अपने सब साथी, अपने साथ ले लिए। फिर सब ने मिल कर पहले आक्रमण कर दिया और शत्रु के आते ही युद्ध प्रारंभ किया।

रुंड मुंड अब—रुंड—धड। मुंड—सिर। स्यों—सहित। कूँड=लोहे की ऊँची टोपी, शिरस्त्राण।

उन्होंने ऐसी भयंकर लडाई की कि दुश्मनों के रुंड-मुंड, कवच और टोप के सहित टूट टूट कर गिरने लगे। घोड़े कंधे रहित होने लगे और हाथी सूँड विहीन होने लगे ॥८॥

भइ बगमेल सेल—बगमेल—घोड़ों का बाग से बाग मिलाकर चलना, सवारों की पंक्ति का धावा। गज-पेल—हाथियों का पेलना या धक्के देना। सहस कुँवर सहसौ सत बाँधा—एक हजार राजपूत थे सभी सत (शपथ) से बँधे हुए थे अर्थात् विचलित होने वाले न थे। भार-पहार—पहाड़ जैसे भारी थे। जूझ कर काँधा=कंधे को हाथ में लेकर युद्ध करते थे, अर्थात् प्राणों का हथेली पर रख कर लड़ते थे। बाग न मोर—घोड़े की लगाम न मोड़ी। मुवै—मरता है। जिउ—प्राण। अधर धर मारे=धड़ या कबंध अधर में वार करता है। निरारे—बिल्कुल, यहाँ से वहां तक। परहि रुहिर होइ राते—खून में लाल हो कर गिर पड़ते हैं। माते—मस्त। खुरखेह—जानवरों के खुरों की धूल। भोगी—विलासी।

सवारों की पंक्ति का धावा हुआ, घनघोर बरछे चलने लगे, और हाथियों के दल का आक्रमण हुआ। ऐसे अवसर पर अकेला गोरा युद्ध-स्थल में कूद पड़ा। उसके साथ जो एक हजार पर्वत जैसे डील वाले योद्धा थे वे सभी दृढ़-प्रतिज्ञ थे, वे प्राणों को हथेली पर रख कर लड़ने लगे। वे लोग गोरा के सामने एक एक कर मरने लगे। इन्होंने घोड़े की बागें नहीं मोड़ीं और घाव उनके मुख पर ही लगे, अर्थात् युद्ध में इन्होंने पीठ न दिखाई। जिस प्रकार पतंगे अग्नि में घुस कर अपने प्राण न्यौछावर करते हैं—एक मरता है उसके पीछे दूसरा उसी तरह प्राण देता है, ठीक उसी प्रकार का ढंग चित्तौड़ के योद्धा दिखा रहे थे। सिर कट कट कर गिरने लगे और वीरों के सिर कट जाने पर उनके धड़ अधर में ही वार करते थे। यहां से वहां तक कंधे ही कंधे लोट रहे थे। कोई खून से लथपथ हो रहे हैं। कोई घायल होने से मतवाले होकर घूमते थे।

कुछ भोगी-विलासी घोड़ों के खुर से उडी हुई धूल में भर गए और इस प्रकार प्रतीत होने लगे जैसे भस्म रमाये हुए योगी (साधु) पड़े हों।

घरी एक भारत—भारत भा—महाभारत हुआ, विकट युद्ध हुआ। निबरे—निपट गये, समाप्त हो गये।

एक घडी भर घमासान युद्ध हुआ, और दोनो ओर के सवारों की मुठभेड़ हुई। लड़ते लडते सब राजपूत समाप्त हो गये और गोरा अकेला रह गया।

गोरे देखि साथि सब—आपन काल नियर भा बूझा—अपना काल निकट आया समझ लिया। ठटा—समूह। विदारै—विदीर्ण करता है। करवारू—तलवार। स्यों घोड़े—घोडे सहित। कबंध—धड़। निनारे—अलग। माठ मजीठ जनहुँ रन डारे—मानों मजीठ (लालरंग) के माठ (मटके) रणक्षेत्र में उलट दिये गये हों। फाग—होली। चाँचरि—फाग इत्यादि के गीत, होली के स्वाँग। धूका—पहुँचा। रुहिर—रुधिर। भभूका—अंगारे सा लाल।

गोरा ने जब देखा कि मेरे सब साथी युद्ध-क्षेत्र में मर गए तो वह समझ गया कि अब मेरा भी अन्त समय निकट है। वह सिंह के सदृश क्रोधित होकर रण में धँस गया और लाखों से भी अकेला नहीं मरता (मूल पुस्तक मे 'भों' के स्थान पर 'सों' पाठ चाहिए)। हाथियों के समूह को उसने इस तरह हाँक दिया जैसे पवन मेघ-माला को उड़ा देती है। जिस के सिर पर वह क्रोधित होकर तलवार मारता था वह असवार (अश्वारोही) घोड़े सहित पृथ्वी पर गिर पड़ता था। उन अश्वारोहियों के सिर और धड़ अलग अलग होकर पृथ्वी पर लोटने लगे और रक्त-रंजित युद्ध क्षेत्र ऐसा

प्रतीत होने लगा मानो वहाँ लाल रंग के मटके उँडेल दिए गए हों, अथवा ऐसा जान पडता था कि होली खेलकर सिन्दूर का छिडकाव किया गया हो अथवा फाग खेलने के बाद—होली के स्वाँग करके—अंत मे आग लगा दी गई हो। हाथी और घोड़ा जो कोई दौडकर वहाँ पहुँचा उसे उसने अंगारे के समान रक्त से लाल कर दिया।

भई अग्या सुलतानी—यह देखकर सुलतान ने आज्ञा दी कि इसे जल्दी वश मे करो। आगे राजा रतनसेन असली माल (पद्मावती) को साथ लिए जा रहा है ॥११॥

सबै कटक मिलि—छेका—घेर लिया। टेका—पकड़ा। जहि दिसि उठै सोई जनु खावा—जिस ओर सिर उठाता उसे मानो खाये डालता था। धरावा—बंधन मे उलझाता। मुए पाछ—मरने के बाद। घिसियावा—घसीटे। मुख सोंहहि—मुख के सामने। देहि नहिं पीठी—पीठ नहीं दिखाते। सरजा—सिंह, एक वीर। गाजा—गरजा। बाजा—भिड़ा। बरियारू—बलवान। सॉग—सेल, भाला। झुकि—जोर से। आन्त भुइँ खसी—आँतें जमीन पर गिर पड़ी।

सुलतान की सारी सेना ने मिलकर गोरा को घेर लिया, परन्तु वह गरजता हुआ सिंह पकडा नहीं जाता था। जिस तरफ वह मुँह उठा देता था उसे मानो वह खा डालता था—उस दिशा मे मैदान साफ हो जाता था। और जहा से आगे बढ़ता था वहाँ फिर पीछे हट कर नहीं आता था। सिंह जीते जी अपने को नहीं बँधने देता, पर मरने के उपरान्त चाहे उसे कोई घसीटे। शेर सामने की ओर ही देखता है, जब तक जीता है युद्ध मे पीठ नहीं दिखाता। उस काल एक 'सरजा' नाम का वीर सिंह के समान गरजता हुआ गोरा

के सम्मुख आकर भिडा। वह सिंह के समान सवार ज्योंही वीर सिंह गोरा के पास पहुँचा त्योंही उसने अपना भाला उठा कर इतने जोर से मारा कि वह गोरा के पेट मे धँस गया और जब उसने अपना भाला जोर से वापस खींचा तो गोरा की आँतें पृथ्वी पर गिर पड़ीं।

मूल पुस्तक मे 'मारेसि माँग' के स्थान पर 'मारेसि साँग' पाठ चाहिए।

भाट कहा धनि—उस समय एक भाट ने कहा—"हे गोरा तू धन्य है, तू आज रावण जैसा वीर प्रमाणित हो गया है क्योकि आँते समेट कर तू फिर से घोडे पर सवार हो रहा है"॥११॥

कहेसि अंत अब—भुइँ—पृथ्वी। खसे—गिरने पर। खेह—धूल। सारदूल—शार्दूल, बाघ। निहाऊ—निहाई, सुनारों और लुहारों का लोहे का घन, जिस पर वे धातु को रख कर कूटते या पीटते है। ओडन—ढाल। गुरुज—गुर्ज, गदा। काँध गुरुज हुत—कधे पर गदा थी। बरिबंडा—बलवान्। सदूर=(शार्दूल) सिंह। बाजा—आघात पड़ा। गाजा—बिजली।

गोरा ने सोचा कि मेरा अन्त आगया है, अब मुझे पृथ्वी पर गिरना ही है और अन्त मे गिरने पर मिट्टी से भरना ही है इस प्रकार कह कर और गरज कर वह सिंह सरजा रूपी बाघ पर टूट पडा। (उसने बडे जोर से अपने खड्ग का प्रहार किया परन्तु) सरजा ने उस वार को अपनी साँग पर ले लिया। साँग पर खड्ग इस प्रकार बजी मानों लोहे के घन पर चोट पडी हो अर्थात् सरजा की साँग इतनी मजबूत थी कि गोरा की तलवार उसको काट न सकी। गोरा ने अपनी तलवार का दूसरा वार

सरजा के कधे पर किया, परन्तु सरजा ने उसे अपनी ढाल से बचा लिया। गोरा ने तीसरा वार उसके फौलादी टोप पर किया, परन्तु क्योकि उसके कधे पर गदा रखी थी, इससे कोई घाव न हुआ। इस पर बलवान सरजा बडा कुपित हुआ (और उसने अपने भुजदण्डो को सॅभाला) जो ऐसे प्रतीत होते थे मानो बाघ के भुजदण्ड हों। क्रोध करके तथा गरजकर उसने अपनी तलवार का वार किया। उसका ऐसा आघात हुआ मानो सिर पर बिजली गिरी हो।

गोरा परा खेत—सुर पहुँचावा पान—देवताओं ने पान का बीड़ा अर्थात् स्वर्ग का निमन्त्रण दिया।

वीर गोरा रणक्षेत्र मे गिर पड़ा, देवताओं ने उसे पान का बीडा—स्वर्ग का निमंत्रण—दिया। इधर बादल राजा रतनसेन को सुरक्षित ले गया और उन्हे चित्तौड़ के पास पहुँचा दिया।

लंका में युद्ध का आरंभ

रिपु के समाचार—जब शत्रु के समाचार मिल गये, तब रामचंद्र ने सब मंत्रियों को पास बुलाया और कहा कि लका के चार विशाल द्वार हैं, उन पर किस प्रकार लगा जाय—आक्रमण किया जाय—इसका विचार करो।

तब कपीस ऋच्छेस—कपीस—बंदरों का राजा सुग्रीव। ऋच्छेस—ऋच्छों (भालुओं) के राजा जांबवान। मंत्र—सलाह, राय। रावण—पक्ष की। अनी—समूह, दल। कटक—सेना।

तब सुग्रीव, जांबवान और विभीषण ने हृदय मे सूर्यकुल-भूषण

आये कीस काल—प्रेरे—प्रेरित किये गये, भेजे गये। छुधावंत—क्षुधायुक्त, भूखा। अट्टहास—बहुत जोर से हँसना।

ये बंदर काल के भेजे हुए—काल की प्रेरणा से—आये हैं। मेरे सब राक्षस भूखे हैं, उन्हें ब्रह्मा ने घर बैठे बिठाये भोजन दिया है, यह कहकर दुष्ट रावण बहुत जोर से हँसा।

सुभट सकल चारिहु—टिट्टिभ—पानी के पास रहने वाली एक छोटी चिड़िया। उताना—उत्तान, पीठ को जमीन पर लगाए हुए, चित, सीधा। सूत—सोता है।

फिर राक्षसों से उसने कहा—हे वीरो, सब चारों दिशाओं मे जाओ, पकड पकडकर सब भालुओं और वानरों को खाओ। महादेव जी कहते हैं—हे पार्वती, रावण को ऐसा अभिमान था जैसे छोटे से टिटहरी पक्षी को होता है जो पैर ऊपर करके सोता है (कि आकाश टूट कर गिरेगा तो पैरों पर रोक लूँगा)।

चले निसाचर—आयसु—आज्ञा। भिंडिपाल—भिंदिपाल, एक अस्त्र, छोटा सा डंडा। सांगी—एक तरह का बरछी। तोमर—एक तरह का पुराना अस्त्र जिसमें लकड़ी के डंडे में आगे की ओर लोहे का बड़ाफल लगा रहता था। परिघ—लोहे का डंडा।

राक्षस आज्ञा लेकर और हाथों में भिंडिपाल, बरछी, तोमर, मुग्दर, प्रचंड गदा त्रिशूल, तलवार, फरसा और पर्वत के टुकड़े ले लेकर चले।

जिमि अरुनोपल—अरनोपल—अरुण (लाल) उपल (पत्थर) निकर—समूह। मनुजाद—मनुजों (मनुष्यों) को खाने वाले राक्षस।

जैसे लाल पत्थरों के समूह को देख कर दुष्ट मांसाहारी पक्षी टूटते हैं (पत्थरों पर पडने से) चोंच टूट जाने का दु:ख उन्हें नहीं

धरि कुधर खंड—कुधर—पर्वत। बहुरि—फिर। प्रचारहीं—ललकारते थे।

बडे बलवान भालू और बंदर पर्वतो के टुकड़े लेकर लंका दुर्ग पर फेकते थे। और झपटकर राक्षसो के पैर पकड कर और उन्हे पृथ्वी पर पटक कर भाग जाते और फिर फिर ललकारते। बहुत चंचल और नौजवान प्रतापी वानर और भालू उछल उछल कर किले पर चढ गये। और महलो में जहाँ तहाँ घुस कर रामचन्द्र जी का यश गाने लगे।

एकु एकु निसि—एक एक राक्षस को पकड कर वे वानर भाग चले। फिर किले के कँगूरो से नीचे पृथ्वी पर कूदते थे, वे स्वय ऊपर होते थे और राक्षस नीचे होते थे।

राम प्रताप प्रबल—बरुथा—झुंड, समूह।

रामचन्द्र जी के प्रताप से प्रबल वानरो का समूह राक्षस वीरो के समूह को मसलने लगा। फिर वानर किले पर जहाँ तहाँ चढ गये और रामचन्द्र जी के प्रताप-रूपी सूर्य की जयजयकार करने लगे।

चले निसाचर निकर—जैसे जोर की हवा चलने पर बादलो का समूह उड जाता है ऐसे ही राक्षसों के झुंड भाग चले। लंका मे बडा हाहाकार मच गया स्त्रियाँ और बालक दुखी हो कर रोने लगे।

सब मिलि देहि—गारी—गाली।

सब मिल कर रावण को गालियाँ देते थे कि इसने राज्य करते हुए मृत्यु को बुलाया है। रावण ने जब अपनी सेना का व्याकुल होना तथा बडे बडे वीरों का युद्ध से लौटना कान से सुना तो वह बहुत क्रुद्ध हुआ।

जब मेघनाद को व्याकुल जाना, तब वह उसे रथ मे डालकर घर को ले आया।

अंगद सुनेऊ कि—बालि के बेटे अंगद ने सुना कि हनुमान अकेले ही गढ पर गये हैं तो रण-बाँकुरा वह भी खेल से उछल कर उसके (किले के) ऊपर चढ गया।

जुद्ध बिरुद्ध क्रुद्ध—दोनो बंदर युद्ध मे भीषण क्रोध कर और रामचन्द्र जी के प्रताप को हृदय मे स्मरण करके दौडकर रावण के राजमहल पर चढ गये, और कोसलाधिपति रामचन्द्र जी की दुहाई मचाने लगे।

कलस सहित गहि—कलशो सहित पकडकर महल को गिरा दिया। यह देख कर रावण भयभीत होगया। स्त्रियां हाथो से छाती पीटने लगीं, और कहने लगीं कि दोनो उत्पाती, बंदर फिर आगये हैं।

कपि लीला करि—वे दोनो बंदर अंगद और हनुमान खेल कर के उन्हें डराते थे और रामचन्द्र जी का सुयश सुनाते थे। फिर हाथो मे सोने के खंभे पकड कर उन्होने एक दूसरे से कहा—उत्पात आरंभ करो।

गरजि परे रिपु—वे गर्ज कर शत्रु की सेना मे कूद पडे और भुजाओ के अनन्त बल से राक्षसो को मसलने लगे। किसी को लात मार कर और किसी को थपेड मार कर कहने लगे कि रामचन्द्र जी को नहीं भजने उसका फल लो।

एक एक सन—एक को एक से भिड़ा कर मसल देते थे और उनके सिर तोड कर इधर-उधर फेंकते थे। वे रावण के सामने जाकर गिरते थे और ऐसे फूटते थे जैसे दही के कूंडे।

महा महा मुखिया—जो वडे वडे मुखिया मिलते थे, उनके पैर पकड कर प्रभु रामचन्द्र जी के पास फेंक देत थे। विभीषण उनके नाम रामचन्द्र जी को बनाते जाते थे, और रामचन्द्र जी उन्हे अपने अपने धाम (वैकुंठ) भेजते जाते थे।

खल मनुजाद—मनुष्य और ब्राह्मण का मास खाने वाले दुष्ट लोग वह गति (वैकुंठ धाम) पाते थे, जिसे योगी जन मॉगते हैं। महादेव जी कहते हैं, हे पार्वती रामचन्द्र जी का हृदय वडा कोमल है, और वे वड़े दयालु हैं। वे यह सोचते हैं कि राक्षस वैर-भाव से ही सही पर मेरा नाम स्मरण तो करते हैं।

देहिं परम गति—ऐसा जी मे सोचकर वे उन्हें परम गति (मोक्ष) दे देते थे। हे भवानी, बताओ, ऐसा कृपालु और कौन है! यह सुनकर भी, ऐसे स्वामी को जो मनुष्य भ्रम त्याग कर नहीं भजते, वे मदबुद्धि वडे भाग्यहीन हैं।

अंगद अरु हनुमत—मंदर—पुराणानुसार एक पर्वत जिससे देवताओं ने समुद्र को मथा था।

अवधेश रामचन्द्र कहने लगे कि अंगद और हनुमान ने किले मे प्रवेश किया है। लका मे वे दो बंदर किस प्रकार शोभा देते थे, जैसे दो मंदर पहाड समुद्र मथ रहे हो।

भुजबल रिपु दल—अपनी भुजाओं के बल से शत्रु सेना को मर्दन कर के दिन का अंत देखकर दोनों बंदर बिना थकावट के ही कूद पडे, और वहाँ आये जहाँ भगवान राम थे।

प्रभु पद कमल—उन्होंने प्रभु रामचन्द्र जी के चरण-कमलों मे अपने सिर नवाये। उन अच्छे वीरों को देखकर रघुनाथ जी मन में प्रसन्न हुए। राम ने कृपा कर उन दोनो को देखा, जिससे उनकी थकावट दूर हो गई और वे परम सुखी हो गये।

गये जानि अंगद—प्रदोष—संध्याकाल, सूर्य के अस्त होने का समय ।

अंगद और हनुमान को लौट गया जान कर अनेक वीर भालू और वानर लौट पड़े । राक्षस सायंकाल (अंधकार) का बल पाकर रावण की जयजयकार करते हुए दौड़े ।

निसिचर अनी—राक्षसो की सेना देख बंदर फिर वापस लौटे । और वे वीर जहाँ तहाँ कटकटा कर भिड़ गये । दोनों दलों के वीर ललकार ललकार कर लड़ते थे और हार नहीं मानते थे ।

महावीर निसिचर—बलीमुख—(सं० बलिमुख) बंदर ।

सभी राक्षस बड़े वीर और काले थे और वानर अनेक रंगो के भारी भारी थे । दोनो ओर के दल प्रबल थे और दोनो मे समान बल वाले योद्धा थे । वे क्रोध करके अनेक प्रकार से भिड़ते थे ।

प्राविट-सरद—प्राविट—वर्षा ऋतु । पयोद—बादल । अनिप—सेनापति । छारा—धूल ।

मानो वर्षा ऋतु और शरद ऋतु के बहुत से बादल वायु की प्रेरणा से लड रहे थे। अकम्पन और अतिकाय नामक राक्षस-सेनापतियों ने अपनी सेना को विचलित होते देख माया की। क्षणभर मे अत्यन्त अंधकार हो गया और रक्त, पत्थर तथा धूल की वृष्टि होने लगी।

देखि निबिड तम—खभार—चिंतित, घबराहटयुक्त ।

दसों दिशाओं मे घोर अँधेरा देखकर वानरों की सेना मे घबराहट छा गई । वे एक दूसरे को न देख पाते थे और जहाँ तहाँ पुकार मचा रहे थे ।

सकल मरमु रघुनायक—इस सारे रहस्य को रामचन्द्र जी ने

मेघनाद ने जब यह कानों से सुना कि वानरों ने फिर आकर गढ घेर लिया है, तब वह वीरवर किले से उतरा और डंका बजाकर उनके सामने चला और बोला—

कहँ कोसलाधीस—धन्वी—धनुर्धर।

अयोध्यापति दोनों भाई कहां हैं, जो सारे जगत मे धनुर्धर प्रसिद्ध हैं। नल, नील, द्विविद, सुग्रीव तथा बल की सीमा अर्थात् बडे बलवान अंगद और हनुमान कहाँ हैं।

कहाँ विभीषनु—भाई से वैर करने वाला विभीषण कहाँ है? आज मैं उस दुष्ट को आग्रह करके मारूँगा। ऐसा कहकर उसने कठिन बाण धनुष पर चढाये और अत्यधिक क्रुद्ध होकर धनुष को कान तक खींचा।

सर समूह सो—वह बाणों का समूह छोडने लगा, वे ऐसे मालूम पडते थे, मानो बहुत से पंखवाले साँप दौडते हों। वानर जहाँ तहां गिरते हुए दिखाई पडने लगे, उस समय कोई उसके सामने खडा न हो सका।

जहँ तहँ भागि—प्राण अवसेजा—प्राणावशेष, मरणासन्न।

वानर और भालू डरकर जहां तहां भाग चले। सबको लडाई की इच्छा भूल गई। ऐसा एक भी भालू या वानर युद्ध मे नहीं दिखाई पडा जिसको उसने मरणासन्न न कर दिया हो।

दस दस सर—उसने सब को दस दस बाण मारे, जिससे वानर वीर धरती पर गिर पडे। तब महाबली मेघनाद सिंहनाद करके गरजने लगा।

देखि पवन सुत—सैल—पर्वत। उपारा—उखाड़ा। रिस—क्रोध

हनुमान वानर सेना को व्याकुल देखकर क्रुद्ध हो काल के

उसने ऐसा अँधेरा कर दिया कि अपना ही फैलाया हुआ हाथ न सूझता था।

कपि अकुलाने—यह माया देखकर बंदर व्याकुल हो गये। वे सोचने लगे कि इस तरह तो सबका मरण हुआ। इस कौतुक को देखकर राम मुसकराये। सब वानरों को उन्होंने डरा हुआ जाना।

एक बान काटी—दिनकर—सूर्य। तिमिर—अन्धकार। निकाया—समूह।

उन्होंने एक ही बाण से सारी माया काट डाली जैसे सूर्य अंधकार के समूह को नष्ट कर देता है। फिर राम ने भालुओं और वानरों को कृपा की दृष्टि से देखा जिससे वे इतने प्रबल हो गये कि रोकने पर भी युद्ध करने से न रुकते थे।

आयसु माँगि राम—आयसु—आज्ञा। सरासन—धनुष।

तब लक्ष्मण राम से आज्ञा माँगकर धनुष बाण हाथ में लेकर अंगद आदि वानरों के साथ अत्यंत क्रोध से चले।

छतज नयन—छतज—क्षतज, खून, लाल। उर—छाती। निभ—समान।

लक्ष्मण की आँखें लाल, छाती चौड़ी और भुजाएँ लंबी थीं। शरीर हिमालय पर्वत के समान श्वेत पर कुछ ललाई लिये था। इधर से रावण ने योद्धाओं को भेजा जो नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्र लेकर दौड़े।

भूधर नख—बिटप—वृक्ष। आयुध—अस्त्र।

पर्वत, नख और वृक्ष-आदि अस्त्रों से सज्जित बंदर रामचन्द्र जी की जय-जयकार करते हुए दौड़े। तब जोड़ी से जोड़ी भिड़ गये। इधर उधर दोनों ओर जय की इच्छा कम न थी।

मेघनाद-वध

रावण की सेना दिन पर दिन कम हो रही थी। भूधराकार शरीर कुंभकर्ण मारा गया, तब रावण रात भर चिंता में पड़ा रहा। उसके पुत्र मेघनाद ने अपने पुरुषार्थ की कहानियाँ सुनाईं और विश्वास दिलाया कि कल मैं अपना पुरुषार्थ दिखाऊँगा।

एहि विधि जल्पत—खगकेतू—खगराज, गरुड़।

इस तरह बकते-बकते सवेरा हो गया। चारों दरवाजों पर अनेक वानर आ डटे। इधर काल के समान वीर वानर और भालू थे, और उधर बड़े रणधीर राक्षस। वीर अपनी अपनी जय के लिए लड़ते थे। हे गरुड़! युद्ध का वर्णन नहीं किया जा सकता।

मेघनाद मायामय—माया के रथ पर चढ़कर मेघनाद आकाश में चला गया, और अट्टहास कर (खूब जोर से हँस कर) गरजा जिससे वानरों की सेना में भय छा गया।

सक्ति सूल तर—वह शक्ति, त्रिशूल, तलवार, कृपाण, अस्त्र-शस्त्र, वज्र और अनेकों हथियार फरसा, परिघ, तथा पत्थर डालने लगा और अगणित बाणों की वर्षा करने लगा।

दस दिसि रहे—दसों दिशाओं में आकाश में बाण छा गये मानो मघा नक्षत्र के मेघ की झड़ी लग गई हो। धरो, धरो, मारो की आवाज ही कान से सुनाई पड़ती थी, पर जो मारता था उसे कोई नहीं जानता था।

मेघनाद-वध

रावण की सेना दिन पर दिन कम हो रही थी। भूधराकार शरीर कुंभकर्ण मारा गया, तब रावण रात भर चिंता में पड़ा रहा। उसके पुत्र मेघनाद ने अपने पुरुषार्थ की कहानियाँ सुनाई और विश्वास दिलाया कि कल मैं अपना पुरुषार्थ दिखाऊँगा।

एहि विधि जलपत—खगकेतू—खगराज, गरुड़।

इस तरह बकते-बकते सवेरा हो गया। चारों दरवाजों पर अनेक वानर आ डटे। इधर काल के समान वीर वानर और भालू थे, और उधर बड़े रणधीर राक्षस। वीर अपनी अपनी जय के लिए लड़ते थे। हे गरुड़! युद्ध का वर्णन नहीं किया जा सकता।

मेघनाद मायामय—माया के रथ पर चढ़ कर मेघनाद आकाश में चला गया, और अट्टहास कर (खूब जोर से हँस कर) गरजा जिससे वानरों की सेना में भय छा गया।

सक्ति सूल तर—वह शक्ति, त्रिशूल, तलवार, कृपाण, अस्त्र-शस्त्र, वज्र और अनेकों हथियार फरसा, परिघ, तथा पत्थर डालने लगा और अगणित बाणों की वर्षा करने लगा।

दस दिसि रहे—दसों दिशाओं में आकाश में बाण छा गये मानो मघा नक्षत्र के मेघ की झड़ी लग गई हो। धरो, धरो, मारो की आवाज ही कान से सुनाई पड़ती थी, पर जो मारता था उसे कोई नहीं जानता था।

, बुद्धि, बल और वाणी से इनकी विवेचना नहीं हो सक्ती। ऐसा विचार कर जो तत्वज्ञ और विरक्त हैं, वे सब तर्कों को त्याग कर रामचन्द्रजी को भजते हैं।

व्याकुल कटक—मेघनाद ने वानर-सेना को व्याकुल कर दिया, फिर वह दुर्वचन कहता हुआ प्रकट हुआ। जामवंत ने कहा—अरे दुष्ट, खडा रह, यह सुनकर उसे बडा क्रोध बढा।

वूढ जानि सठ—(मेघनाद बोला) अरे दुष्ट, तुझे बुड्ढा जान कर मैंने छोड दिया। हे नीच, अब तू मुझे ही ललकारने लगा है। ऐसा कह कर उसने तीक्ष्ण त्रिशूल चलाया, जांबवंत उसी त्रिशूल को पकड कर दौडा।

मारेसि मेघनाद—घुर्मित—चक्कर खाकर। और मेघनाद की छाती मे उसने मार दिया। देवताओं का वह शत्रु चक्कर खाकर ज़मीन पर गिर पडा। जांबवान ने फिर क्रोधित होकर उसके पैर पकड कर घुमाया और ज़मीन पर पटक कर उसे अपना बल दिखलाया।

वर प्रसाद सो—वरदान के प्रभाव से वह मारने से भी नहीं मरा, तब जाम्बवन ने उसकी टाँग पकड़ कर उसे लंका पर फेंक दिया। इधर देवर्षि नारद ने गरुड़ को भेजा, वह शीघ्र ही राम के पास आ पहुँचा।

खगपति सब धरि—गरुड ने क्षण भर मे माया-निर्मित साँपो के सारे समूह को खा लिया, इससे सब माया से रहित होगये, और वानरो का समूह बडा प्रसन्न हुआ।

गिरि पादप—वानर क्रुद्ध होकर पर्वत, वृक्ष, पत्थर, न

धारण किये हुए दौड़े। राक्षस बहुत व्याकुल होकर किले पर भाग कर चढ़ गये।

मेघनाद के—अजय मख—वह यज्ञ जिसके पूरा करने पर कोई जीत न सके।

(जब) मेघनाद की मूर्छा भंग हुई, (तब) उसे पिता को देख कर बड़ी लज्जा लगी। वह अजय यज्ञ करने का मन में निश्चय कर तुरंत ही पहाड की गुफा में चला गया।

इहाँ विभीषण मंत्र—इधर विभीषण ने यह सलाह की और वह रामचन्द्र जी से बोला—हे अतुल बल वाले नाथ सुनो, अपवित्र, दुष्ट मायावी तथा देवताओ को सताने वाला मेघनाद यज्ञ कर रहा है।

जौं प्रभु सिद्ध होइ—हे स्वामी, यदि उसका यज्ञ सिद्ध हो गया, तो हे नाथ फिर वह आसानी से जीता न जा सकेगा। यह सुनकर राम ने बहुत सुख माना और अगद आदि वानरों को बुलाकर उन्होंने कहा—

लछिमन संग—हे भाई, तुम सब लक्ष्मण के साथ जाओ और जा कर यज्ञ को विध्वंस करो। हे लक्ष्मण, तुम रण में उसको मारना, देवताओ को डरा हुआ देखकर मुझे अत्यंत दुख हो रहा है।

मारेहु तेहि बल—हे भाई, सुनो उसको बल और बुद्धि के उपाय से मारना, जिससे उस राक्षस का नाश हो। जाम्बवंत, सुग्रीव और विभीषण तीनों जन सेना के साथ रहना।

जब रघुवीर—अनुसासन—आज्ञा। निषंग—तरकस।

जब रघुनाथ जी ने आज्ञा दी, तब कमर मे तरकस कसकर

और धनुषबाण सजाकर, तथा प्रभु के प्रताप को हृदय मे धरकर वीर लक्ष्मण बादल के समान गंभीर वाणी से बोले—

जौं तेहि आज—जो आज उसे बिना मारे आऊँ तो रघुपति रामचन्द्र का सेवक न कहलाऊँ। राम की शपथ है कि चाहे सौ शिव भी उसकी सहायता करे तो भी मै उसे आज मार डालूँगा।

रघुपति चरन—अनंत—शेष, लक्ष्मण।

रघुपति के चरणों मे सिर नवाकर लक्ष्मण जी तुरत चल दिये। उनके साथ अंगद, नील, मयंद, नल तथा हनुमान आदि योद्धा थे।

जाइ कपिन्ह—वानरों ने जाकर मेघनाद को बैठा हुआ देखा, जो रक्त और भैंस की आहुति दे रहा था। बंदरो ने सपूर्ण यज्ञ विध्वस कर दिया, फिर भी जब वह न उठा, तब वे उसकी बडाई करने लगे।

तदपि न उठइ—फिर भी जब वह नहीं उठा, तब वानरो ने जाकर उसके बाल पकड लिये और उसे लात मार मार कर भाग चले। तब वह त्रिशूल लेकर दौडा, और वानर दौडकर वहां आ गये, जहां लक्ष्मण आगे खड़े थे।

आवा परम क्रोध—मेघनाद अत्यंत क्रोध का मारा हुआ आया, और बार बार घोर शब्द से गरजने लगा। हनुमान और अंगद क्रोध करके दौडे, उसने उनकी छाती मे त्रिशूल मारकर उन्हे पृथ्वी पर गिरा दिया।

प्रभु कहं छाँडेसि—फिर उसने तीक्ष्ण त्रिशूल लक्ष्मण जी पर चलाया, लक्ष्मण ने बाणों से मार कर उसके दो टुकडे कर दिये। हनुमान और अंगद फिर उठकर उसे क्रोध करके मारने लगे, परन्तु उसको चोट नहीं लगती थी।

फिरै बीर रिपु मरइ—शत्रु (मेघनाद) मारने से भी न मरता था, अतएव हृदय मे हारकर वीर हनुमान और अंगद वापिस लौट चले। तब वह घोर चिग्घाड़ करके दौड़ा। काल के समान क्रुद्ध उसे आते देख कर लक्ष्मण ने तीक्ष्ण बाण छोड़े।

देखेसि आवत—पवि (वज्र) के समान भयंकर बाणों को आता हुआ देख कर वह दुष्ट तुरंत ही अंतर्धान होगया। वह अनेक प्रकार के वेष धर कर युद्ध करता था, कभी प्रकट होता था, और कभी छिप जाता था।

देखि अजय रिपु—अहीसा—सर्पराज, शेप, लक्ष्मण।

शत्रु को अजेय देख कर वानर डरे, तब लक्ष्मण जी अत्यन्त क्रुद्ध हुए। लक्ष्मण ने मन मे ऐसा विचार किया कि इस पापी को मैंने बहुत खिला लिया है, (अब इसका अंत कर देना ही उचित है)।

सुमिरि कोसलाधीस—दापा—दर्प, घमंड, शक्ति, उत्साह।

राम के प्रताप को स्मरण कर के लक्ष्मण ने उत्साह तथा जोश के साथ बाण चढ़ाया और फिर बाण छोड दिया, जो उसकी छाती के बीच मे लगा। मरते समय उसने सब छल छोड़ दिया।

रामनुज कहॅ—लक्ष्मण कहाँ है, राम कहाँ है, ऐसा कह कर उसने प्राण छोड दिया। अंगद और हनुमान कहने लगे, हे मेघनाद तेरी माता धन्य है, जिसने ऐसा वीर जना।

बिनु प्रयास—बिना कष्ट के सहज मे ही हनुमान ने उसे उठा लिया, और वे उसे लंका के दरवाजे पर रख आये। उसका मरण सुनकर देवता और गंधर्व आदि सब विमान पर चढकर आकाश मे आये।

वरषि सुमन—वे फूल बरसाकर दुन्दुभी बजाते थे, और श्रीरामचन्द्र जी का विमल यश गाते थे। 'लक्ष्मण की जय हो' 'जगत् के आधार' की जय हो, हे प्रभु आपने सब देवताओं का उद्धार कर दिया। ऐसी स्तुति करके देवता और सिद्ध चले गये, और लक्ष्मण कृपा के समुद्र रामचन्द्र जी के पास आये।

गीतावली से

तू दसकठ भले कुल जायो—बिरंचि-बर—ब्रह्मा का वरदान। जमलोक पठायो—यमलोक भेज दिया, मार दिया। श्रीमद—धन का अभिमान। ब्यलीक—छल। कारुनीक—करुणा करने वाले।

लका का युद्ध प्रारभ होने के पहले रामचन्द्र जी ने अंगद को दूत बनाकर रावण के पास भेजा था। इन पहले तीन पदों मे अंगद-रावण-संवाद है। हे रावण, तुम अच्छे कुल मे उत्पन्न हुए हो, तिस पर शिवजी की सेवा, ब्रह्मा जी के वरदान और अपने अत्यधिक बाहुबल से तुमने जगत् मे सुयश प्राप्त किया है। जिन्होने खर, दूषण, त्रिशिरा, कवंध आदि शत्रुओ और वाली को यमलोक भेज दिया है—मार दिया है, मैं उनका दूत हूँ, और उन पवित्र-चरित्र रामचन्द्र जी का शुभ संदेशा कहने मैं आया हूं। तुम धन के अभिमान से अथवा राज्य के अभिमान से या मोहवश, जान कर या बिना जाने जानकी को हर लाये हो. सो हमारा समझाया—हमारी सीख सुनकर जानकी को वापिस कर दो तथा छल छोड कर उस करुणामय प्रभु का भजन करो। जिससे तुम्हारा कल्याण होगा,

सुनु खल मैं तोहिं—हे दुष्ट, सुन मैंने तुझे बहुतेरा समझाया पर मोहवश ऐसे घमंड में तू भर गया है कि जान बूझ कर विष खाना चाहता है। जगत्प्रसिद्ध वीर बालि का बल तू जानता है न, या अब भूल गया है। उसको भी रामचन्द्र जी ने बिना किसी दिक्कत के एक ही बाण से मार दिया और अपने शरणागत सुग्रीव पर प्रेम दिखाया। तुम भी अपने कर्मों का फल पावोगे, जबर्दस्ती तुमने अच्छी जगह बैर बढ़ाया है। जब तुम्हें वानर और भालू अपने चपेटों के लपेट से मारेंगे तब तू पछतायगा। मैं ही तुम्हारे दाँत तोड़ने में समर्थ हूँ, परन्तु क्या करूँ इसके लिए मैंने प्रभु से आज्ञा नहीं पाई। अब तुम शीघ्र ही रामचन्द्र जी के बाणों से छिन्न-हृदय होकर सुदूर युद्ध-क्षेत्र में सोवोगे और जिस विभीषण ने रघुनाथ के चरणों में चित्त लगाया है, उसे ही तेरा अविचल राज्य मिलेगा। तुलसीदास कहते हैं, इस प्रकार वचन कहकर बालि का बेटा अंगद गरजता हुआ वहाँ से चल दिया।

कौतुक ही कपि—कुधर—पहाड़। बियो—दूसरा। फर—फल, वह तेज अगला भाग जिससे चोट मारी जाती है। हयो—मारा। बिहर्यो—टुकड़े टुकड़े होगया, यहाँ बिहर्यो अथवा 'बिदर्यो' पाठ होना चाहिये।

मूर्छित लक्ष्मण को देखकर जब वैद्यराज सुषेण ने रात्रि के भीतर ही सजीवनी बूटी लाने को कहा तब हनुमान उड़कर पहाड़ की ओर गये पर सजीवनी बूटी को न पहचान सकने के कारण सारा पहाड़ ही उठाकर चल दिये, रास्ते में जब वे अयोध्या पर से गुजर रहे थे, तब भरत जी ने उन्हें बाण से बींधा. इस सर्ग की भरत-हनुमान-भेंट तथा अयोध्या में लक्ष्मण जी की मूर्छा से उत्पन्न भावों का ही इन चारों पदों में वर्णन है।

ाइयों ने जिस स्नेह से उन्हे छाती से लगा लिया, वह कहा नही
ाता। हनुमानजी ने उन्हे फिर सारा समाचार सुनाकर कहा—
ुझे देर हो रही है। वह सुनकर भरत जी दु.ख से संतप्त हो गये
ौर बोले—तुम पहाड समेत मेरे बाण पर चढ जाओ, मै तुम्हे
ीघ्र ही रामचन्द्र जी के पास भेज दूँगा। यह सुनकर हनुमान जी
 हृदय मे गुप्तरूप से गर्व पैदा हुआ। (वे उनके बाण पर चढ़े
ौर जब देखा कि उनके लिए यह कोई बडी बात नहीं है) तो तीर
 उतर कर उनका सुयश कहना चाहा, भरत जी ने अपने गुणों
 उन्हे जीत लिया उनका मन भरत के प्रेम में डूब गया तथा
भरत जी धन्य हैं भरत जी धन्य हैं" यह कहते हुए प्रेम मे मग्न हो
र वे मौन रह गये। तुलसीदास कहते हैं कि यह समुद्र तो
 सगर के पुत्रो द्वारा) खोदा गया है, (देवता और दानवो द्वारा)
था गया है, (हनुमान जी द्वारा) लाँघा गया है, (नल नील
ारा) बाँधा गया है, और (अगस्त जी द्वारा) पिया गया है,
कन्तु रामचन्द्र जी के भाई भरत जी की महिमा के समुद्र को
र कर भला कौन कवि पार कर सकता है!

होतो नहि जग जनम—धुर—भार। अभिमत—इच्छित, मन-
ाहा। सृजि—पैदा कर। अघ औगुन—पाप और अवगुण।

हनुमान जी कहने लगे—जो संसार में भरत का जन्म न हुआ
ोता, तो तलवार की धार के समान कठिन मार्ग पर चलकर प्रेम
ात का कौन आचरण करता? पर्वतों के भार से भी अधिक भारी
र्य और धर्म के भार को पृथ्वी पर कौन उठाता? सब सद्गुणों
ा सम्मान करके तथा उनका हृदय मे धारण कर पाप और
अवगुणों का कौन निरादर करता? जो राम-पद—रामचन्द्र जी के
रणों का प्रेम—शिवजी को सुलभ नहीं है उसे सत्पुरुषों के लिए

कौन सुलभ करता ? तथा अपने सुयश-रूपी कल्पवृक्ष को पैदा कर तुलसीदास को कौन इच्छित फल देता। तुलसीदास को राम-महिमा कथन के लिए कौन प्रेरित करता ?

सुनि रन घायल—सुवन-सोक—पुत्र का शोक। हुलसत—प्रसन्न हो कर। अंब—माता। अवक—आँख। अबु—जल। पैंत—दाँव घात। सुढर—अनुकूल। पवनज—पवनपुत्र हनुमान।

जब माता सुमित्रा ने सुना—लक्ष्मण जी युद्ध मे घायल पडे हैं, और उन्होंने अपने स्वामी के काम के लिए वीर श्रेष्ठ मेघनाद से खूब ललकार कर लोहा लिया है, युद्ध किया है, तो उन्हे पुत्र की दशा से तो शोक हुआ, पर इस बात से सतोष हुआ कि उन्होने रघुनाथ जी की भक्ति को स्वीकार किया है। इस कारण क्षण क्षण मे उनका शरीर शोक से सूखा जाता था, फिर दूसरे ही क्षण मे आनद से हरा हो जाता था। माता सुमित्रा के नेत्र जल से भर गये और उन्होने स्वभाव से कहा कि यद्यपि धनुष उनके पास है (अर्थात् धनुष उनके हाथ में होते हुए उन्हे और किसी की सहायता की आवश्यकता न हो) फिर भी वे बुरे मौके मे भाई से बिछुड गये हैं। (यह कह के शत्रुघ्न से बोलीं) हे प्यारे, तुम इस हनुमान के साथ जाओ। यह सुनते ही शत्रुघ्न हाथ जोडकर खडे होगये। उनका शरीर पुलकायमान हो गया, और वे ऐसे प्रसन्न हुए मानो दैवयोग से उनके दाँव पूरे और अनुकूल पड गये हो। माता और छोटे भाई की यह दशा देख हनुमान और भरत आदि को वडा दुःख हुआ। तुलसीदास कहते हैं तब माता (कौसल्या) ने उन सब को समझा कर सचेत किया।

हनुमान जी की बड़ी भारी पूँछ से भयानक आग की लपटें निकलने लगीं। उनको देखकर ऐसा मालूम होता था मानों काल ने लंका को निगलने के लिये जीभ निकाली है अथवा आकाश-गंगा मे पुच्छल तारे भरे हुए हैं, अथवा योद्धा वीर रस ने तलवार निकाली है, अथवा इन्द्र-धनुष है, अथवा बिजलियो का समूह है, अथवा मेरु पर्वत से आग की बडी नदी बह चली है। तुलसीदास जी कहते हैं कि उस भीषण दृश्य को देख करके राक्षस और राक्षसियाँ घबडा कर कहती हैं कि इस बन्दर ने बगीचा तो उजाड ही दिया था अब नगर भी जला डालेगा।

जहाँ तहाँ बुबुक—बुबुक—आग की लपटें। बुबुकारी देत—जोर जोर से रोते हैं, ढाहें मारते हैं। निकेत—घर। भामिनी—स्त्री। महिस—भैंसा। बृषभ—बैल। छेरी—बकरी।

जहाँ तहाँ आग की लपटे निकलते देखकर लंका-निवासी घबडा कर चिल्लाने लगे, "दौडो, दौडो, आग लगी है और घर जल रहा है। पिता कहाँ हैं, माता कहाँ हैं, भाई और बहने कहाँ हैं, स्त्री कहाँ है, भाभी कहाँ है, छोटे छोटे बच्चे कहाँ हैं, ऐ भोले भोले अभागो, भागो। हाथियों को खोल दो, घोडों, बैलों, भैंसो, बकरियों को छोड़ दो। सोते हुओ को जगाओ, जगाओ, जगाओ" तुलसी-दास जी कहते हैं कि राक्षसिनियाँ उस भयंकर दृश्य को देख कर घबड़ा कर कहती हैं "हे प्यारे, हमने तुमसे कई बार कहा था कि इस बन्दर से झगड़ा न करो।"

बड़ो बिकराल बेष—बिकराल—भयंकर। सविषाद—दुःख सहित। मरुत—हवा। मारतंड—सूर्य। बावनो—बामन अवतार। बामदेव—शिवजी। बादि—व्यर्थ।

हनुमान के बड़े भयानक रूप को देख कर और उनके सिंहनाद को सुनकर मेघनाद उठ खडा हुआ। रावण दुख से भरकर कहने लगा "इसने वेग मे हवा को, प्रताप मे करोडों सूर्य को, भयंकरता मे काल को और बड़े होने मे वामन भगवान् को जीत लिया है।" तुलसीदास जी कहते हैं कि चतुर राक्षस मन मे पछता कर कह रहे हैं कि जिसका दूत ऐसा भयानक है वह मालिक तो अभी आने को बाकी है। (तब न जाने लका की क्या दशा हो) श्रीरामचन्द्र जी के क्रोध करने पर तो शिव जी की भी कुशल कैसी? अर्थात् शिवजी भी उनके क्रोध से नहीं बचा सकते। ऐसे भयानक वीर से वैर मोल लेना व्यर्थ है।

पानी पानी पानी—परानी—भागती। कान कियो न—ध्यान न दिया। घने घर घालिहै—बहुत से घर नष्ट करेगा। मँदोवै—मंदोदरी।

गजगामिनी रानियाँ व्याकुल होकर पानी, पानी कहती हुई भगती जा रही हैं। उन्हे न अपने कपड़ो की खबर है, न मणियो से जडे गहनो की। वे सूखे मुँह से कहती हैं कि कोई किस तरह हमारी रक्षा करेगा। तुलसीदास जी कहते हैं कि मंदोदरी हाथ मल कर और माथा धुन कर कहती है कि मैने कल कितना समझाया लेकिन किसी ने मेरे कहने पर ध्यान न दिया। बिचारे विभीषण ने भी बार बार पुकार करके कहा कि यह बन्दर बड़ी बला है, बड़ी आफत है यह बहुत से घरो को नष्ट कर देगा। (लेकिन उसकी भी बात किसी ने न मानी।)

रानी अकुलानी—जरत—जलती हुई। केसरीकुमार—हनुमान। मींजि-मींजि—मल मल कर। पगार—पर। उदो—जल गया। धयो—धोया। लुनियत—काटती है।

रानियाँ जलती हुई घबड़ाकर भागती जाती हैं और हनुमान

के भयकर वेष को देख नहीं सकतीं। रावण की स्त्रियाँ हाथ मल मलकर और सिर धुन धुनकर रह गईं। किसी के घर का एक तिल भी बाहर न निकला, सब असबाब जल गया, न मैने निकाला, न तूने निकाला, सबको अपनी जान के लाले पड़े थे. चीज वस्तु को कौन सँभालता? मदोदरी गुस्सा हो कर मेघनाद को देखकर दुख से भर कर कहती है कि यह सब इस दाढ़ीजार का किया हुआ है जिसको हम सब भोग रहे हैं।

एक करै धौज—धौज—दौड़। सौंज—सामान। औंजि—घबड़ा कर। परे गाढ़े—विपत्ति में पड़ गया है। डाढ़त—जलते हुए। पावक—आग। गाल को बजावनो—गाल बजाना, डींग मारना। रावरे—आप।

कोई दौडा जाता है, कोई कहता है सामान निकालो, कोई गर्मी से घबडाकर पानी पीकर कहता है 'मुझ से आया नहीं जाता' कोई आग की लपटो से घिर जाने के कारण विपत्ति मे पड गया है, कोई जलता हुआ निकाला गया है, कोई खड़े खडे तमाशा देख रहा है और कहता है 'आग बडी भयानक है', कोई कहता है कि अच्छे बंदर को पकडा है (जिसने इतनी आफत ला दी है)। लेकिन इतना सब होने पर भी बालकों की सी बुद्धि वाला (रावण) डींग मारना नहीं छोड़ता। कोई कहता है दौडो दौडो, आग बुझाओ। इस पर दूसरा कहता है कि आप लोग क्या पागल हो गये हैं, यह कोई दूसरी ही आग है, इसको समुद्र या सावन का मेह भी नहीं बुझा सकता, हम लोग किस गिनती मे हैं?

हाट बाट हाटक—हाट-बाट—बाजार रास्ते। हाटक—सोना। कनक-कराही—सोने की कड़ाही। तलफति—तप रही है। ताय—ताप, गर्मी। पागि पागि—चासनी में डुबा डुबाकर। भाय सों—प्रेम से। कृसानु—अग्नि। पवमान—वायु। सुरारि—देवताओं का वैरी अर्थात् रावण।

बाजारो मे, सड़को पर सोना घी की तरह पिघल कर खूब बह चला। लका सोने की कडाही हो गई जो आग की गर्मी से तप रही है। उसमे बलवान राक्षस पकवानों की तरह पक रहे हैं, उन्हे प्रेम से अच्छी तरह चासनी मे सान सान कर हनुमान ने ढेर लगा दिया है। अग्नि पाहुना (अतिथि) है, वायु परोसने वाला है और हनुमान जी चित्त मे प्रसन्न होकर आदर पूर्वक भोजन करा रहे हैं। तुलसीदास जी कहते हैं इसको देखकर शत्रु-स्त्रियां (राक्षसियाँ) गाली दे देकर कहती हैं कि पागल रावण ने महाराज रामचन्द्र से वैर मोल लिया है (यह सब उसी का फल है)।

रावन सो राजरोग—राजरोग—राजयक्ष्मा, क्षयरोग। विराट उर—विराट् पुरुष का हृदय। सुख-रौंर—सुख से रक, सुखहीन। बिसोक—शोक रहित, रोग रहित। ओत—आराम, चैन। मनाक—थोड़ा। रजाय—आज्ञा। समीर-सूनु—पवन पुत्र हनुमान। सोधि—खोजकर। सरवाय—संपुट, प्याला, कसोरा। जातुधान—राक्षस। बुट—बूटी। पुटपाक—मुँह बंद पात्र मे रखकर या मिट्टी में लपेट कर औषधि पकाने की क्रिया। जातरूप—सोना। जारि—जलाकर। मृगांक—एक दवाई जो राजयक्ष्मा में उपयोगी होती है।

विराट् पुरुष के हृदय मे रावण रूपी क्षयरोग बढ़ने लगा जिस के कारण वह सब सुखो से रहित हो व्याकुल रहने लगा। इस रोग को दूर करने के लिए देवता, सिद्ध तथा मुनि सभी प्रकार की दवाएँ कर के हार गये पर विराट् पुरुष का रोग न छूटा और उसे ज़रा भी आराम न हुआ। रामचन्द्र की आज्ञा से रसायन मे सिद्ध-हस्त हनुमान ने समुद्र पार करके कसोरा ढूँढ कर राक्षस रूपी बूटियो की सहायता से लंका के सोने और रत्नो का पुटपाक बना कर यत्न से उसे जलाकर मृगांक नामक रस बना डाला।

अंगद को संदेस

अंगद जीति—चित्त चिता—दिल की आग, क्रोध। तिलोदक—अर्घ्य।

रामचन्द्र जी के अश्वमेध यज्ञ के घोडे को लव और कुश ने पकड़ लिया था और घोड़े की रक्षा करने वाली सेना तथा स्वयं शत्रुघ्न और लक्ष्मण को उन्होंने घायल कर दिया था। हनुमान, जांववंत, विभीषण और भरत भी उनको जीत न सके, तव राम स्वयं रणभूमि मे गये, और देखने से तथा वातचीत से पहचान गये कि ये उनके ही पुत्र हैं, अत. उन्होंने उनसे स्वयं न लड़कर अंगद को उनसे लड़ने की आज्ञा दी, क्योंकि वे जानते थे कि अंगद का दिल उनकी ओर से साफ नहीं है, वह उनको अपने पिता का मारने वाला समझता था। इसी कारण राज्याभिषेक के वाद रामचन्द्र जी ने जब अपने सभी साथी संगियों और सेवकों को, उन्होंने जो कुछ मांगा, देकर प्रसन्न किया था तव उसने और कुछ नहीं माँगा था केवल यही कहा था—

"आजु मोसन युद्ध माँडहु एक एक अनेक कै।
वाप को तव हौ तिलोदक दीह देहुँ विवेक कै।"

अर्थात् मैं आपसे केवल युद्ध मांगता हूं। जब मैं आप से वदला ले लूँगा तभी अपने वाप को अर्घ्य दूँगा। इस पर रामचन्द्र जी ने कहा था—

'कोऊ मेरे वंश में करि है तोसों युद्ध।
तव तेरो मन होइगो अंगद मों सो शुद्ध।"

इसी वात को याद करके और लव-कुश को अपना पुत्र पहचान कर रामचन्द्रजी ने अंगद से कहा—"हे अंगद इन्हें (लव और कुश

को) जीत कर पकड लाओ या अपने बल से इन्हें मार कर भगा दो। इनको मारकर अपने दिल की आग को बुझाओ और पिता को अर्घ्य दो।"

लव द्वारा विभीषण का उपहास

२. तव दौरिकै—तब दौड कर विभीषण ने बाण हाथ मे लिया पर लव उसे देखते ही हँस दिया और बोला—

३–४. आउ विभीषण—रण दूषण—कायर। जूझ जुरे—युद्ध आरम्भ होते ही। जी के—प्राणों के। मूल पुस्तक मे 'जूझि जुरै भले भए जी के' के स्थान मे 'जूझ जुरै जो भगे भय जी के' पाठ चाहिए।

हे कायर विभीषण आ, तू ही तो अपने कुल का भूषण है (भाव यह है कि कलंकित करने वाला है) जो (लंका मे) युद्ध प्रारम्भ होते ही प्राणों के भय से भाग कर शत्रु से आ कर मिल गया।

५–६. देववधू—देववधू—सीता। छुद्र—क्षुद्र, नीच। छिद्र—दोप, कमजोरी, मर्म।

जब रावण सीता को हर लाया था उसी समय तू उसे छोड़कर क्यों नहीं चला आया ? असली बात यह है कि तू अपने प्राणों के भय से रामचन्द्र की शरण आया था और ऐ नीच तूने अपने कुल के सब छिद्र उन्हे बता दिये थे।

७ जेठो भैया—अन्नदा—अन्नदाता।

बडा भाई, जो तेरा अन्नदाता था, राजा था और पिता के समान था: उसकी पत्नी को, जो तेरी माता के समान थी, तू ने

अपनी पत्नी बना लिया। महाकवि केशव के अनुसार रावण की मृत्यु के अनन्तर रामचन्द्र जी ने विभीषण को आज्ञा दी थी कि "मयतनयनि के तिगरे दुख टारो" अर्थात् मंदोदरी को अपनी स्त्री बना लो जिससे वह पति-वियोग से दुखित न हो और विभीषण ने उसी के अनुसार मंदोदरी को अपनी स्त्री बना लिया था।

८. को जानै—कौन जानता है कितनी बार तूने उसे 'माँ' नहीं कहा होगा। अरे पापियों के सरदार उसे हा तूने पत्नी बना लिया। मूल पुस्तक में 'पापिनी' के स्थान में 'पापिन' चाहिए।

९-१०. सिगरे जग—सारे—में। हलाहल—तीव्र विष।

सारे संसार में अपनी हँसी कराता है और रघुवंशियों के साथ रहकर उन्हें भी पाप लगाता है। मूल पुस्तक में 'पाप नगावत है' के स्थान में 'पाप लगावत है' पाठ चाहिए। तुझे धिक्कार है जो तू आज भी जीवित है, अरे नीच जाकर विष क्यों नहीं पी लेता।

११-१२. कहु है अब—हिये—हृदय में। कपि—कंपा, पापी। [illegible]—[illegible]।

तेरे हृदय में कुछ कहता है कि नहीं, कह, क्या विचार कर तूने शस्त्र धारण किये हैं? अर्थात् तेरे जैसा पापी क्या मुझ से युद्ध कर सकता है? तू अब जाकर जंगली कंडों की आग में जल मर [illegible] समुद्र में डूब मर। मूल पुस्तक में 'अब [illegible]' के स्थान में 'अब आइ [illegible] की [illegible]' पाठ चाहिए।

१३. [illegible]—[illegible] में [illegible] कहूँ [illegible]

कोई जानता है पर जब तेरे जैसा पापी साथ मे है तो हार क्यो न हो ?

१४. भूतल के इन्द्र—मूल पुस्तक मे पहली पंक्ति मे 'बैठे हुते' के स्थान मे 'पौढे हुते' पाठ चाहिए क्यो कि पद्य मे जो वर्णन है वह रामचन्द्र का लेटी अवस्था का है, बैठी अवस्था का नहीं। ऐसे ही भगवानदीन जी की रामचन्द्रिका मे पाँचवीं छठी पंक्ति का पाठ इस प्रकार है—"देवातक नरांतक-अतक त्यो मुसकात विभीषण बैन तन कानन रुखाये जू।"

कुंभहर—कुंभ को मारने वाला सुग्रीव। कुंभकर्ण नासाहर—कुंभकर्ण की नाक काटने वाला सुग्रीव। अकंप—राक्षस का नाम। अच्छ—अक्षयकुमार, रावण का पुत्र। अकंप अच्छ-अरि—अकंप और अक्षयकुमार को मारने वाला हनुमान। देवांतक—रावण का एक सेनापति। नारांतक—रावण का एक मंत्री और सेनापति। अंतक—अंत करने वाला। देवांतक-नरांतक-अंतक—देवांतक और नारांतक का वध करने वाला, अंगद। बैन—वचन। तनु—तरफ। रुखाये—रुख किये हुए, ध्यान लगाये हुए। महोदर—बड़े पेट वाला अर्थात् कुंभकर्ण। मेघनाद-मकराच्छ-महोदर-प्राणहर—मेघनाद मकराक्ष और कुम्भकर्ण के प्राण हरने वाला अर्थात् लक्ष्मण।

मेघनाद, कुम्भकर्ण और मकराक्ष के मरने पर रावण ने रामचन्द्र के पास एक दूत के द्वारा सन्धि का प्रस्ताव भेजा था। दूत रामचन्द्र के पास से लौटा है और उनका वर्णन कर रहा है। वह कहता है—जिस समय मैं गया उस समय पृथिवी के इन्द्र श्रीराम-

सिंह का बच्चा हठ करके आनन्द से किसी हरिणी को मारता है, क्या उन्हीं हाथों से वह मदमस्त हाथियों को नहीं मारता। जिन हाथों से कुमार-श्रेष्ठ कोई राजकुमार सहज ही मे लाखो निशाने वेधता है क्या उन्हीं हाथों से अपने बाणो द्वारा वह सुअर, बाघ और सिंहों को नहीं मारता। इसलिये हे राजराजेश्वर महाराजा दशरथ, मेरी इस विचित्र बात को मानिए कि सिंह के बच्चे और प्रतापी राजकुमार मे बालक या वृद्ध का विचार न करना चाहिए अर्थात् पराक्रमी पुरुष की अवस्था का विचार न करना चाहिए।

१६ वज्र को अखर्ब—अखर्ब—बहुत बड़ा। पर्वतारि—इन्द्र। सुपर्व—देवता। गज्यो—नष्ट किया, चूर किया। अँगना—स्त्री। आसु—जल्दी ही। जलेस—वरुणदेवता। दंडक में—घड़ी भर में। कालदंड—यमराज की गदा। कलाखंड—(अशुद्ध पाठ है, कालखंड चाहिए) काल का खंडन करने वाला, ईश्वर। बिसदंड—कमल की नाल। बिडंबना—लज्जा की बात।

सीता के स्वयंवर मे पहुँचे हुए दूर दूर के राजा जब अपना विफल पराक्रम दिखा चुके थे, और कोई धनुष उठाने मे समर्थ न हुआ था, तब राजा बलि का सबसे बड़ा बेटा बाणासुर जो बहुत गुणी और सहस्रबाहु था, तथा लंकानरेश दशशिर रावण वहाँ पहुँचे और दोनों मे चलाचली चल उठी। दोनो अपने अपने बल का वर्णन करने लगे। पद्य-संख्या १६ से २० तक उसी का वर्णन है।

(रावण कहता है) मेरे जिन भुजदंडो ने वज्र के भारी गर्व को चूर कर दिया, जिन्होने इन्द्र को जीत लिया, जिनके डर से सब

के समान मँडराने लगे थे, गंगाजल ऐसा मालूम होता था मानो मकरंद की बूँदों की माला हो, पार्वती का अंचल उड़ रहा था, वही मानो पराग था, मेरी विशाल बाहु कमल की नाल के समान थी, उस समय की पल-पल की शोभा का क्या वर्णन करूँ। अनेक अस्त्रों-शस्त्रों, पार्वती और महादेव सहित कैलास को उठाकर मैंने कमल का दृश्य बना दिया था। (तात्पर्य यह है कि मैं तो इस शिवधनुष समेत शिवजी को ही उठा चुका हूँ, फिर इस धनुष को उठाना क्या कठिन है) ।

२०. खंडित मान भयो—मान—गर्व। जगती—संसार। निराकुल —घबराई हुई । लंकपती—रावण। रती—रत्ती। भूरि—बहुत। विभूति—संपत्ति, ऐश्वर्य ।

इस प्रकार रावण और वाण के संवाद के अनंतर रावण धनुप उठाने को बढ़ा, पर धनुप को उठा न सका, तब बंदी कहता है—सब का (बल का) गर्व खंडित हो गया। संसार के सब के सब राजा हार गए। रावण की बाहें व्याकुल होगईं, बुद्धि घबरा गई, बल और विक्रम थक गए। उसने करोड़ो उपाय किए, परन्तु धनुप भूमि से रत्ती भर भी अलग न हुआ, जिस प्रका योगी का मन अत्यधिक सपत्ति के प्रभाव से भी ज़रा विचलि नहीं होता।

२१ वर वाण शिखीन—बाग शिखीन—अग्नि बाणों से अशेष—समस्त। सुख ही—आसानी से । औटि—पिघला कर कलंकित—दोषी, अपराधी । पंककनंकहि—सोने का कीचड। 'पं कलंकहि' के स्थान पर 'पकं कनंकहि' पाठ चाहिए। खाऊस—खाक तुच्छ, नीच। सितिकंठ—महादेव। कठुला—माला।

परशुराम के यह पूछने पर कि शिव-धनुप किसने तोडा है, वामदेव रामचन्द्र कहने को उद्यत हुए, परन्तु 'रा' सुनकर परशुराम रावण समझ कर उस पर नाराज होगए और बोले—

हे सखा (कुठार के लिए सम्बोधन है) मैं अग्निवाणों से सारे समुद्र को सुखा कर आसानी से ही पार कर लूँगा और उस कलंकित (रावण) की लंका को पिघला कर समुद्र को फिर सोने के कीचड से भर दूँगा, तत्पश्चात् तुच्छ राक्षस को भली प्रकार भून करके देवो के दीर्घ दुख को दूर कर दूँगा और महादेव के कंठ का हार दशकंठ रावण के कंठो से बनाऊँगा।

२२. प्रचंड हैहेयादि—हैहयादि राज—हैहय आदि राजाओं, क्षत्रियों—हैहय नरेश सहस्रार्जुन को और अन्य क्षत्रियों को परशुराम ने २१ बार मारा था। दंडमान—दंड देने वाले। लेय—लेनेवाले। भूमि देयमान—भूमि देने वाले, परशुराम ने क्षत्रियों को मारकर ब्राह्मणों को भूमि प्रदान की थी। जेय—जीतने वाले। रच्छमान—रक्षा करने वाले। अमेय—अतुल। भर्ग—महादेव। 'अदेव देव जे अभीत रच्छमान लेखिए' के स्थान पर 'अदेव देव जेय भीत रच्छमान लेखिए' और 'अमेय तेज भर्ग भक्त' के स्थान पर 'अमेय तेज भर्ग भक्त' पाठ चाहिए।

शिवधनुप के टूटने पर क्रुद्ध परशुराम को देखकर भरत के 'ये कौन है ?' पूछने पर रामचन्द्र उत्तर देते हैं—

हे भरत! इन्हे प्रबल पराक्रमी हैहयराज सहस्रार्जुन आदि क्षत्रियो को दंड देने वाला, ब्राह्मणो को भूमि दान कर अखंड कीर्ति धारण करने वाला, असुरों और देवों को जीतने वाला भयभीत जनो की रक्षा करने वाला अतुल तेज-धारी, शंकरभक्त, भृगु-कुल मे श्रेष्ठ परशुराम समझो।

२३. टूटे टूटनहार तरु—शिवधनुप के टूटने से क्रोधित परशु-राम को शांत करने के लिए रामचन्द्र जी कहते हैं—

टूटने वाला वृक्ष स्वयं टूट जाता है, वायु को व्यर्थ ही दोष दिया जाता है। उसी तरह महादेव के धनुष के टूटने का आप हम पर क्रोध कर रहे हैं। हम पर क्रोध तो कर रहे हैं, पर (यह समझ लीजिए कि) काल की गति जानी नहीं जाती। होनहार तो होकर ही रहती है, वह मेटने से मिटाई नहीं जाती। होनहार होकर ही रहती है, और सबका मोह-मद छूट जाता है। होनहार के कारण ही तिनका वज्र हो जाता है और वज्र तिनके की तरह टूट जाता है। (तात्पर्य यह कि अब आपका घमंड भी मिट जायगा)।

२४. केसव हैहयराज—मासु—मांस। हलाहल—तीव्र विष। कौरन—ग्रास। मेद—चर्बी। महीपन—राजा लोग। घोरि—घोल कर। सिरानो—ठंढा हुआ। छीर—क्षीर, दूध। षडानन—देवताओं के सेनापति कार्तिकेय। सोनु—शोणित, खून।

(परशुराम शांत नहीं होते और गुस्से में भरकर वे अपने परशु से कहते हैं) हे कुठार! तूने हैहयराज सहस्रार्जुन के मांस-रूपी हलाहल विष के ग्रास खाए हैं। इसकी शान्ति के लिए राजाओं की चर्बी-रूपी घी घोल कर तुझे पिलाया पर तेरा हृदय शांत न हुआ। अतएव कार्तिकेय के मद-रूपी दूध को भी तूने पल भर में पी लिया। परन्तु तुझे तब तक सुख न मिलेगा जब तक तू रघुवंश के खून रूपी अमृत को न पी लेगा।

२५. कंठ कुठार जसै अब—असोक—अशोक, शोक का विरोधी भाव अर्थात् सुख। सोक—शोक, दुःख। समूरो—समूल, पूरा। चितसारि—चित्रसारी, रंगमहल। लोक—संसार, यश। अपलोक—अपयश।

(परशुराम रामचन्द्रजी पर जब इतना क्रोध करते हैं और उन्हे ललकारते हैं तब वे कहते हैं। मेरे गले पर आपका कुठार पडे या हार (फूलों की माला) पडे. चाहे सुख हो या अत्यंत दुःख भोगना पडे, चाहे यह शरीर रंगमहल मे सुख लूटे या चिता पर चढे चाहे चंदन से चित्रित हो या आग मे जलाया जाय, संसार मे यश मिले या अपयश हो, जो कुछ होना हो सो हो, परन्तु हे भृगुनन्दन ब्राह्मणों ने लडने के लिए सूर्यवंश म कोई शूर तैयार नहीं।

२६. सुनि सकल लोकगुरु—जामदग्नि—जमदग्नि का बेटा परशुराम। तपविसिख—तपस्या के बाण, शाप। अवेषन—अशेष, सब।

रामचन्द्र कहते हैं—हे सब लोकों के गुरु परशुराम! तुम्हारे पास जितने शापो की अग्नि और बाण हो, सब मुझ पर छोड दो, जिसने शिव के धनुष को खंड-खंड कर दिया वह मै तुम्हारे सब शापों और बाणो को अखंड (अविचल) रह कर सहूँगा। अर्थात् जब मैने शिवधनु भंग किया है तब मै दोषी हूँ सो आप मारिये, अथवा शाप दीजिए, सब सहना पडेगा पर मै आप पर हाथ न उठाऊँगा, क्योकि आप ब्राह्मण हैं।

२७ भगन भयो—साल—दुःख, कष्ट। धर—धरा पृथिवी। जोति नारायनी—नारायण का वह अंश जो परशुराम में था। सरासन—धनुष। सरु—सर, बाण। कियो सरासन जुक्त सर—धनुष को बाण से युक्त कर लिया है अर्थात् धनुष पर बाण चढा लिया है।

रामचंद्रजी के बहुत शांत करने पर भी जब परशुराम शांत न हुए, अपितु उन्होने रामचंद्रजी के गुरु विश्वामित्र की भी निंदा की और कहा कि "गाधि के नंद तिहारे गुरु जिन ते ऋपि वेष किये उबरे हैं". अर्थात् तुम्हारे गुरु विश्वामित्र भी ऋपि होने के

कारण बचे हैं, तब रामचन्द्रजी को क्रोध आगया और वे जहाँ पहले परशुराम को ब्राह्मण होने के कारण अवध्य कह रहे थे, वहाँ अब धनुषबाण लेने को तैयार हो गये और बोले—

हे भृगुनंद परशुराम, शिव का धनुष तो टूट गया, पर उसकी पीडा तुम्हे अब भी दुःख पहुँचाती है (और तुम किसी तरह नहीं मानते, सो अब) अपना परशु (फरसा) सभालो अब मैंने भी अपने धनुष पर बाण चढा लिया है, अब चाहे ब्रह्मा की सृष्टि व्यर्थ हो जाय, (नष्ट हो जाय) चाहे ईश (महादेव) का भी आसन डोल जाय, चाहे मेरा बाण सब लोकों को नष्ट कर दे, और चाहे शेषनाग पृथ्वी को सिर पर से गिरा दे, चाहे सातो समुद्र मिल जाँय, चाहे सब ओर भारी अधकार हो जाय, अर्थात् प्रलय हो जाय, (मूल पुस्तक मे 'तन' के स्थान मे 'तम' पाठ चाहिए) और चाहे तुम्हारे अदर की अत्यत पवित्र नारायणी ज्योति बुझ जाय अर्थात् तुम्हारे जीवन का अत हो जाय। परशुराम को भी भगवान् का अवतार माना जाता है, सो रामचन्द्र ने इन वचनो से यह सूचित किया कि अब तुम्हारे अवतार का समय बीत चुका।

२८ राम राम जब कोप—राम—रामचन्द्र। राम—परशुराम। वामदेव—महादेव।

जब रामचन्द्र और परशुराम ने क्रोध किया (मूल पुस्तक में 'कोय' के स्थान पर 'कोप' पाठ चाहिए) तो समस्त लोक अत्यधिक भय से परिपूर्ण होगए। तब महादेव स्वयं आए और उन्होंने दोनों रामदेवो (रामचन्द्र और परशुराम) को समझाया।

२६. जाके रथाग्र पर—सूर्य मडल विडंबन—सूर्यमंडल को लज्जित करने वाली। आखंडलीय—इन्द्र का। तनत्रान—कवच। वपु—शरीर।

जिसके रथ के आगे सर्पध्वजा शोभित है और जिसकी कांति सूर्यमंडल को लज्जित करती है, जिसने अपने शरीर पर इन्द्र का कवच धारण किया हुआ है, वही देवताओं को विपत्ति में डालने वाला देवांतक नाम वीर है।

३०. जो हंसकेतु भुजदंड—केतु—ध्वजा । निषंग—तरकस । अवगाह—मंथन । बामा—स्त्री ।

जिसकी हंसध्वजा है, जो भुजदंड पर तरकस धारण किए हुए है, जो प्रायः संग्राम-सागर को मथ डालता है, जिसने देवताओं और दैत्यों की स्त्रियां छीन ली हैं, वही खर का पुत्र मकराक्ष नामक वीर है।

लंका में युद्ध प्रारंभ होने पर रावण के दल के वीरों का परिचय देते हुए ये दोनों पद्य विभीषण ने कहे हैं।

३१ हन्यो विघ्नकारी बली बामैं—कुटिल । जामैं—क्षण । बिसल्योषधी—विशल्य करणी जड़ी । १. विशल्यकरणी—घाव को तुरन्त भरने वाली । २. सांवरणी—तुरन्त चमड़ा जमा देने वाली । ३ संजीवनी—मूर्छित को सचेत कर देने वाली । ४ संधानी—कटे हुए अंगों के पृथक् पृथक् टुकड़ों को जोड़ देने वाली । चार प्रकार की औषधियां द्रोण-पर्वत पर थीं ।

(जब लक्ष्मण शत्रु की शक्ति से मूर्छित हो गए थे, तब संजीवनी बूटी के लिए द्रोण पर्वत की ओर जाते समय) हनुमान ने विघ्नकारी—रास्ता रोकने वाले बली और कुटिल वीर (कालनेमि) को मार डाला और एक क्षण में ही द्रोण पर्वत पर पहुँच गए। वहां पर विशल्योषधि कौन सी थी यह न जान सके अतः प्रणाम करके सारे पर्वत को लेकर चल दिये।

३२. लसैं औषधि चारु—देवाधिकारी—इन्द्र । भौम—मंगल । पुरी भौम की—मंगल ग्रह ।

हनुमान द्रोण पहाड को लेकर आकाशमार्ग से चले तो सुन्दर ओषधियाँ चमकती थीं । उन्हें देखकर देवता और इन्द्र यों कहने लगे कि महामंगल को चाहने वाले हनुमान गरजते हुए जा रहे हैं, और उनके सिर पर द्रोण पर्वत मंगलग्रह की सी शोभा दे रहा है ।

३३ किधौं प्रात ही काल—अंशु—किरणें । अंशुमाली—सूर्य । संहारयो—मार दिया । ज्वालामुखी—अग्नि । काल—मृत्यु । जोर—जबरदस्ती ।

(चमकती हुई ओषधियों को देखकर कवि अनुमान करता है कि) मन में यह विचार कर कि प्रात काल होते ही (लक्ष्मण की) मृत्यु हो जायगी, हनुमान या तो सूर्य को मार कर उसकी किरणों को लिये जा रहे हैं (जिससे सूर्योदय हो ही न सके) या अग्नि को जबरदस्ती पकड़े लिये जा रहे हैं, जिसमें हवन करने से लक्ष्मण की मृत्यु का संयोग मिट जाय ।

३४. भगीं देखि कै संकि—संकि—डर कर । बाला—पत्नी । संकि—डर कर । दुरी—छिप गई । पुत्रिका—पुतली ।

राम को जीतने के लिए रावण यज्ञ करने लगा । अंगद, हनुमान आदि उसके यज्ञ के विध्वंस करने के लिए पहुँचे । जब वह किसी तरह यज्ञ छोड़कर न उठा तो बंदरों ने महलों में घुस कर उसकी रानियों को अपमानित करना शुरू किया—

(बंदरों को) देखकर डर कर रावण की रानियाँ भागीं और दौड़कर मंदोदरी की चित्रशाला में जाकर छिप गई । आनंद से फूला हुआ अंगद दौड़ कर वहाँ गया और वहाँ चित्र की पुतलियों

देख कर चकित रह गया। (वह जान न सका कि ये पुतलियाँ हैं या सची स्त्रियाँ।)

३५. गहै दौरि जाको—दरी—गुफा। विदारी—रहने वाला।

(अंगद मदोदरी को ढूँढने लगा, पर पहचान न सका) वह जिस ओर दौडकर किसी चित्र की पुतली को पकडता था उस दिशा को छोड मदोदरी दूसरी ओर भाग जाती थी। (मूल पुस्तक "तजै ताकि ताको" के स्थान मे "तजै ता दिसा को" पाठ चाहिए) अंगद जिस दिशा को छोड देता था मदोदरी उसी दिशा को भाग जाती थी। उसने सारी चित्रशाला को अच्छी तरह देख डाला। (पर मंदोदरी को पकड न सका) भला पर्वत की गुफा मे रहने वाला (वंदर) सुन्दरी स्त्री को पा ही कैसे सकता है ?

३६. तजै दृष्टि को चित्र—धन्या—स्त्री। लंक-रानी—मंदोदरी।

अगद चित्र मे वनी स्त्री (पुतली) को (पकड़ कर फिर) छोड देता है, यह देख कर एक देवकन्या हँस पडी। उस हँसी से से वह देवकन्या दिखाई पड गई। अगद ने उसे पकड लिया तब डर कर उसने मदोदरी को पहचनवा दिया।

३७ सु-आनी गहे केस—तमश्री—अंधेरी रात। सूर सोभानि सानी—सूर्य की किरणों से जटित। मृनाली-लता—पद्मनाल, कमल की डंडी।

अगद लकेश-रानी मंदोदरी के केश पकड कर ले आया, उस समय वह ऐसी मालूम हुई मानों सूर्य की किरणों से जटित अँधेरी रात हो। (मंदोदरी काली थी, और उसने रत्न-जटित स्वर्ण-भूषण पहने हुए थे।) फिर अंगद उसकी बाँह पकड़ कर चारों ओर खींचने लगा मानों हंस पद्मनाल को खींच खींच कर अस्त-व्यस्त कर रहा हो।

३८. छुटी कंठमाला—मंदोदरी की गले की माला छूट गई, हारों की लड़ें टूट गई। फूले हुए फूल (जो वेणी में बाँधे हुए थे) गिर पड़े, केश छूट गए, कंचुकी फट गई, सुंदर करधनी छूट गई। मानों महादेव ने कामपुरी को लूट लिया हो।

३९. विना कंचुकी स्वच्छ—वच्छोज—वक्षोज, स्तन,। श्रीफलै—वेलफल। कुंभ—घड़ा। सम्पूर्ण—पूर्ण हुए। भरे हुए। रूरे—सुन्दर।

कंचुकी के विना मदोदरी के सुदर स्तन इस प्रकार शोभा देते थे जैसे सचमुच के वेलफल हों या लावण्य से भरे पूरे वशीकरण के चूर्ण से लबालब भरे हुए सुन्दर सोने के घड़े हों।

४०. मनो इष्टदेवै सदा—इष्ट—पति। हाल गोला—गद।

या मदोदरी के पति (रावण) के इष्टदेव ही हैं या काम-सजीवनी वेल के फूलों के दो गुच्छे हैं या (दर्शकों) के चित्तों को चौगान खेल खिलाने के मूल कारण सोने के दो गेंद हैं जो देखने वालों के हृदयों का विमोहिन कर लेते हैं। जिस प्रकार चौगान खेल में जिस ओर गेंद जाता है, उसी ओर सब खिलाडी दौडते हैं, इसी प्रकार जिस ओर मंदोदरी के कुच हो जाते हैं, उसी ओर दर्शकों के चित्त चले जाते हैं।

४१. सुनी लंकरानीन—महामौन—मंत्र जपते समय का संकल्पित मौनावलंबन। मानी—अभिमानी। लंकवासी—रावण। साखाबिलासी—बंदर।

अभिमानी रावण ने जब लंका की रानियों की दीन वाणी सुनी तो उसने सकल्पित मौन छोड़ दिया और गदा लेकर उठ खड़ा हुआ। यह देख कर सब वानर भाग गए।

४२ जुद्ध जोई जहाँ—सौमित्रि—लक्ष्मण। कोदंड—धनुष। खंड-खंडी—खंड खंड कर दी। धुजा—ध्वजा, रथ का झंडा। धौर—सुन्दर। छत्रावली—रथ के ऊपर लगे छत्रों की पंक्ति। सैल-सृंगावली—पहाड़ की चोटियाँ।

इस पद्य मे रावण के युद्ध का वर्णन है। रावण के दस मुख तथा २० हाथ थे। दो हाथो से तो वह राम के साथ युद्ध कर रहा था तथा अन्य १८ हाथो से दूसरे १८ महारथियो के साथ।

जो जहाँ जिस भाति युद्ध करता था उस को वहीं उसी दिशा मे उसने रोक रखा, अपने अस्त्रो से उसने सबके शस्त्र काट दिये उसको कहीं भी घाव नहीं लगा (मूल पुस्तक मे "सस्त्र काढै सबै" के स्थान में "शस्त्र काटे सबै" पाठ होना चाहिए)। इतने में लक्ष्मण ने दौड कर धनुषबान लेकर उसके रथ की ध्वजा और सुन्दर छत्रावली इस प्रकार काट दी मानो पहाड़ की चोटियो को छोड़कर एक साथ ही हंसो की पंक्ति उड़ी हो।

४३. लच्छन सुभ लच्छन—रिस—रोस, बराबरी, युद्ध। रावण सों रिस छोडि दई—रावण से युद्ध करना बंद कर दिया। भूलि रहे—चकित हो गए। विचच्छण—बुद्धिमान।

लक्ष्मण ने बहुत से बाण छोड कर रावण के जो सिर काटे थे, वे फिर नवीन शोभा धारण कर निकल आए। यह देख शुभ लक्षण बुद्धिमान लक्ष्मण ने रावण से युद्ध करना छोड़ दिया। यद्यपि लक्ष्मण बड़े रण-पंडित (मूल पुस्तक मे 'नर' के स्थान 'रन' पाठ चाहिए) और वीरोचित गुण युक्त हैं तथापि शत्रु (रावण) के बल से खंडित (भग्न मनोरथ) होकर चकित होगए। मन, वचन और कर्म से रण-पांडित्य का अभिमान छोड कर शूरवीरों के सहायक रामचन्द्र जी से यो बोले।

४४. ठाढ़ो रन गाजत—ठाढ़ो—खड़ा हुआ। लायक—योग्य। हौं—मैं।

रावण खड़ा रण में गरज रहा है, किसी प्रकार भी भागता नहीं। सब प्रकार से योग्य प्रतिपक्षी को देख कर मैं तन मन से लज्जित हो रहा हूँ। हे मुनियों से वंदना किये जाने वाले ('मुनिजन वंदन' के स्थान पर 'मुनिजन वंदन' पाठ चाहिए) दुष्टों का नाश करने वाले सुखदायक रामचन्द्र जी सुनिए, यह रावण न टाले टलता है, न मारे मरता है, मैं धनुष रख कर इससे हार गया हूँ। हे जगनायक, आप रावण को क्यों नहीं मारते? देवता लोग दुखी होकर पुकार रहे हैं।

४५ जेहि सर मधु, मुर—मधु, मुर, महासुर, नरक, शख, कैटभ, खर, दूषण, त्रिशिरा, कबंध, कुंभकर्ण—ये सब बड़े बड़े असुरों के नाम हैं, जिन्हें भगवान ने मारा था। सर—शर, बाण। कर्कस—कठोर। मरदि—कुचल कर।

लक्ष्मण की इस प्रकार विनती करने पर जिस बाण से मधु और मुर राक्षसों को कुचल कर महासुर का मर्दन किया था, कठोर नरकासुर को मारा था शंखासुर (मूल में 'सेख' के स्थान पर 'संख' पाठ चाहिए) को मार कर उससे पाच-जन्य शंख लिया था, देवताओं की सेना को निष्कंटक किया था, कैटभ राक्षसके शरीर के टुकड़े टुकड़े किये थे, खर, दूषण, त्रिशिरा, कबंध, को मारा था और सात तालों को वेधा था, जिससे कुंभकर्ण को मारा उसी बाण से रामचन्द्र जी ने रावण के दसों सिर काट दिये और रावण के प्राण ले लिए, वे तनिक भी प्रतिज्ञा से न टले।

४६ राघव की चतुरंग—न माई (न अमाई)—नहीं समाता।

अश्वमेध यज्ञ के घोडे के पीछे जाती हुई रामचन्द्र की सेना का वर्णन है—रामचन्द्र की चतुरंगिणी सेना के समूह के चलने से उठी हुई धूल जल और स्थल मे छा गई, मानो वह रामचन्द्र के प्रताप-रूपी अग्नि का धुआँ है जो आकाश मे नहीं समाता, या ब्रह्मा ने पचतत्वो की सृष्टि को मिटा कर रेणुमयी एक नवीन सृष्टि की है, या पृथ्वी अपने संसार के भार के दु:ख को सुनाने के लिए स्वर्गलोक को जा रही है।

-

पृथ्वीराज

१. धर वाँका दिन पाधरा—धर—भूमि। वाँका—टेढ़ी, ऊँची-नीची, विकट। पाधरा—सीधा या अनुकूल। मरद—वीर, शूर। न मूकै—न छोडे न त्यागे। माण—(मान) अभिमान। घणाँ—बहुत। नरिंदा—नरेन्द्रो से, राजाओं से। घेरियो—घिरा हुआ। गिरिदाँ—पर्वतों में।

जिसकी भूमि अत्यन्त विकट अर्थात् अगम्य है, और दिन अनुकूल हैं, जो वीर अभिमान को नहीं छोडता, वह महाराणा बहुत से राजाओ से घिरा हुआ पहाडो मे निवास करता है।

२ पातल राण प्रवाड़—पातल राण—राणा प्रताप। प्रवाड—युद्ध। मल—मल्ल, पहलवान, योद्धा। वाँकी—विकट, भयंकर। घड़ा—सेना। बिभाड—नाशक, विध्वंस करने वाले। खूँदाड़ै—खूँदने वाला। कुण है—कौन है? खुराँ—खुरों से। ते ऊभाँ—तेरी विद्यमानता में, तेरी उपस्थिति में, रहते हुए, जब तक तू खड़ा है।

ऐ विकट सेनाओं के विध्वंस करने वाले और प्रबल योद्धा महाराणा प्रतापसिंह ! आपके रहते मेवाड को खुरों से खूँदने वाला कौन है ?

३ माई एहा पूत जण—माई—माता । एहा—ऐसा । जण—जन, पैदाकर । जेहा—जैसा । सूतो—सोया हुआ । ओध के—ओझ के, चौंक उठता है । जाण—समझकर, जानकर । सिराणै—सिराणैं, सिरहाने ।

हे माता, ऐसा पुत्र पैदाकर जैसा कि राणा प्रताप है; जिसे अकबर सिरहाने का साँप समझकर चौंक पडता है ।

४. अइरे अकबरियाह—अइरे—अरे, हे । अकबरियाह—अकबर। तुहालो—तेरा । तुरकडा—तुर्क, मुसलमान (तुच्छता सूचित करने वाला संबोधन) । नम नम—झुक झुककर । नीसरियाह—निकल गए । सह—सब । राजवी—राजा लोग ।

ऐरे तुरकडे अकबर ! तेरा तेज देखकर बडा आश्चर्य होता है, जिसके सामने महाराणा के सिवाय सब राजा लोग झुक झुक कर निकल गए ।

५ सह गावडियो साथ—सह—सब । गावड़ियो—गायों को । एकण—एक ही । बाडै—बाडे में । नाथ—नकेल, बन्धन, अधीनता, । नाँदै—हुँकरा रहा है, दहाड़ रहा है, गरज रहा है । प्रतापसी—प्रतापसिंह ।

अकबर ने राजारूपी सभी गौओं को एक ही बाडे में बंद कर दिया । परन्तु प्रतापसिंह रूपी साँड उसके बन्धन में नहीं आता है। वह सदा दहाड रहा है ।

६ पातल पाघ प्रमाण—पातल—प्रतापसिंह । पाघ—(पाग) पगड़ी । प्रमाण—प्रामाणिक । साँची—साँची, सच्ची । साँगाहर—राणा

संग्रामसिंह के वंशज या पौत्र। तणी—की। सूँ—सम्मुख। ऊभी—खड़ी। अणी—अनी, अग्रभाग, नोक।

महाराणा साँगा के वंशज प्रताप की पगडी ही सच्ची और प्रमाण है जो सदा अकबर के सामने अनी की भाँति सिर उठाये खडी ही रही (कभी झुकी ही नहीं)।

७ चोथो चीतोडाह—चोथो—स्वामी, स्वत्वाधिकारी। मेवाडाह—मेवाड। चीतोडाह—चित्तौडगढ। बाँटो—पगडी। बाजंती—कही जाती है। तणों—को। माथे—सिर पर। थारे—आपके।

हे चित्तौड के स्वामी, ऐ मेवाडपति महाराणा प्रतापसिंह ! पगडी आपके ही सिर पर कही जाती है। [यवनों के सामने सिर झुकाने वालों के सिर पर पगडी, पगडी नहीं कही जा सकती है। पगडी तो आपके ही सिर पर है जो कभी नत नहीं हुआ)।

८ अकबर समद अथाह—समद—समुद्र। अथाह—गम्भीर। तिहँ—उसमें। तुरक—तुर्क, यवन, मुसलमान। मेवाडो—मेवाडपति। पोयण फूल—(पुरइन पुष्प) कमल पुष्प। प्रतापसी—प्रतापसिंह।

अकबर अगाध समुद्र है जिसमे क्या हिन्दू क्या मुसलमान सभी डूब गए अर्थात् उसके अधीन हो गए, परन्तु मेवाड़ का धनी प्रतापसिंह उस समुद्र मे कमल का फूल है। (जो सदा पानी के ऊपर रहता है)।

९ अकबरिये इक बार—अकबरिया—अकबर ने। इक बार—एक ही बार में। दागल की—कलंकित कर दी। दुनी—दुनियाँ। अणदागल—अकलंकित। असवार चेटक—चेटक का सवार।

अकबर ने एक ही बार मे सारी दुनियाँ को कलंकित कर दिया, परन्तु चेटक के सवार महाराणा प्रताप निष्कलंक रहे।

१० अकबर घोर अँधार—घोर अँधार—घोर अन्धकार । ऊँघाणाँ—ऊँघने लग गए, सो गए । अवर—और । जागै—जागृत है, सजग है, सावधान है । जगदातार—जगत् का दाता । पोहरे—पहरे, पर ।

अकबर-रूपी घोर अंधकार में और सब हिन्दू सो गए परन्तु जगत् का दाता राणा प्रताप (धर्म-रूपी धन की रक्षा के लिए) पहरे पर सजग खड़ा है ।

११. हिंदूपति परताप—पत—लाज । हिन्दुआणरी—हिन्दुओं की । सन्ताप—कष्ट । सत्य सपथ करि आपनी—अपनी शपथ को सत्य करने के लिए ।

हे हिन्दूपति प्रताप ! हिन्दुओं की लज्जा रक्खो । अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए सब कष्टों को सहो ।

१२ चम्पा चीतोड़ाह—चम्पा—चंपा का फूल । चीतोड़ाह—चित्तौडगढ । पोरस—पौरुष । तणो—उसका । सौरभ—सुगन्ध । अलियल—भ्रमर, भौंरा । आभड़िया नहीं—पास नहीं आता है, आकर उससे भिड़ता नहीं है ।

चितौड चंपा है, प्रताप का पौरुष उसकी सुगन्ध है । अकबर-रूपी भौंरा उसके पास नहीं फटकता । (कहा जाता है कि चंपा पुष्प पर भौंरा नहीं बैठता है) ।

१३ पातल जो पतसाह—पातल—प्रताप । पतसाह—बादशाह । मुख हूंतो—मुख से । बयण—बचन । मिहर—सूर्य । पछम दिस—पश्चिम दिशा । माँह—में । ऊगै—उदय हो । कासप रावउत—कश्यप राव-सुत—राजा कश्यप के पुत्र (सूर्य) ।

यदि प्रतापसिंह मुख से बादशाह को बादशाह कह दें तो राजा कश्यप का पुत्र सूर्य पश्चिम दिशा में उदय हो ।

१४ पटकूँ मूछाँ पाण—पटकूँ—फेरूँ। मूछाँ—मूंछों मे। पाण—हाथ। कै—अथवा। निज तन—अपने शरीर पर। करद—कृपाण, तलवार। दीवाण—एकलिंग के दीवान (मेवाड का राज्य महादेव जी का राज्य माना जाता है और राणा लोग उस राज्य के दीवान कहे जाते हैं।) इण—इन। दा महलो—दो मे से।

आपको राजपूती आन की रक्षा करते हुए देखकर अभिमान से मोछों पर ताव दूँ अथवा अधीनता स्वीकार करते देखकर लज्जा से अपने शरीर पर ही तलवार चला दूँ? हे एकलिंगजी के दीवान, इन दो बातो मे से एक बात मुझे लिख दीजिए।

१. तुरुक कहासी—तुरुक—तुर्क, यवन, मुसलमान। कहासी—कहलावेंगे। मुख पतो—मुख से। इण तनसूँ—इस जन्म में। इकलिंग—एकलिंग महादेव। ऊगै—उदय होता है। जाँ—जहाँ से। ऊगसी—उदय होगा। प्राचा—पूर्व दिशा। पतंग—सूर्य।

भगवान् एकलिंग इस जन्म मे प्रताप के मुख से अकबर के लिए "तुर्क" शब्द ही कहलायेंगे, और सूर्यदेव जहाँ सदा उदय होते हैं, वहीं, पूर्व दिशा म ही, उदय होंगे।

२ खुसी हूंत पीथल—खुसी हूंत—प्रसन्नता के साथ, खुशी से। पीथल—पृथ्वीराज। कमध—राठौड। पटको—फेरो। मूछाँ पाण—मोछां पर हाथ। पछटण—पछोडने के लिए। जेत—जब तक। पतो—प्रतापसिंह। कलमा—यवन, कलमा पढने वाले, मुसलमान। (मूल पाठ मे "कमला" शब्द छपा है जो अशुद्ध है।) केवाण—कृपाण, तलवार।

हे राठौर वीर पृथ्वीराज, खुशी के साथ मोछो पर ताव देते रहिये जब तक कलमा पढ़ने वाले यवनों के सिर पर तलवार पछोडने के लिए (अर्थात् चलाने के लिए) प्रतापसिंह मौजूद है।

३. साँग मूँढ सहसी सको—साँग—भाला । मूँड—सिर। सहसी—सहेगा। सम—बराबर वाला, समान। जस—यश। जहर—विष। सवाद—स्वाद। भड—वीर, भट। पीथल—पृथ्वीराज। जीतो—विजय करो। भलाँ—अच्छी तरह से। बण वाद—वाद-विवाद, शास्त्रार्थ। तुरक—तुर्क, यहाँ अकबर से तात्पर्य है। सूँ—से।

राणा प्रतापसिंह सिर पर भाले को सहन करेगा (वह किसी प्रकार अधीनता स्वीकार नहीं करेगा) क्योंकि बराबर वाले का यश विष के स्वाद के तुल्य होता है। हे वीरवर पृथ्वीराज, आप तुर्क से बातों के युद्ध में अच्छी तरह विजय पावे।

संक्षिप्त भूषण

१. जा दिन जनम लीन्हों—उछाह—उत्साह। छठी—जन्म से छठे दिन। छत्र-पति—राजा (छत्र धारण करने वाला)। करन-प्रवाह—राजा कर्ण के दान का प्रवाह। चक्क—(सं० चक्र) दिशा। चाह—चाहना, इच्छा।

जिस दिन पृथ्वी पर भोंसिला राजा शिवाजी ने जन्म लिया उन्होंने वैरियों के किलो के उत्साह को जीत लिया अर्थात् उनका उत्साह नष्ट होगया। छटी के दिन सहज ही में उन्होंने राजाओं का भाग्य जीत लिया और नामकरण के दिन इतना दान दिया गया कि राजा कर्ण के दान के प्रवाह को भी उसने जीत लिया। भूषण कवि कहते हैं कि साहजी के पुत्र शिवाजी ने बाल-क्रीडा में चार दिशाओं के किलों को सहज इच्छा से ही जीत लिया। जब किशोरावस्था (लड़काई) आई तो बीजापुर और गोलकुंडा

को विजय किया और जवान हुए तो दिल्ली के बादशाह औरंगजेब को परास्त किया।

२ जापर साहि तनै सिवराज—तनै-(सं०-तनय) पुत्र। जंपत—कहता है। अलकापति—कुबेर। दीपति—दीप्ति, छवि। गढराज—रायगढ। वारि—जल, यहाँ खाई जिसमे जल भरा रहता है, उससे तात्पर्य है। माची—मकान की कुर्सी।

श्री साहजी के पुत्र शिवाजी जिस रायगढ़ पर अपनी सुन्दर सभा सुरेश (इन्द्र) की सभा के समान करते हैं, भूषण कवि कहते हैं कि उसके वैभव को देखकर कुबेर भी शर्माता है; उसमे तीनों लोको की शोभा मौजूद है, उसकी खाई पाताल के समान, कुर्सी पृथ्वी के समान और ऊपरी भाग अमरावती (इन्द्रपुरी) के समान शोभायमान है।

३ मनिमय महल सिवराज के—जच्छ—यक्ष। किन्नर—देवताओं की एक जाति। हौस—हविस, इच्छा। उत्तंग—ऊँचे। मरकत—मणि, नीलम। घन-समै—वर्षा ऋतु मे। घन पटल—बादलो के समूह। गल गाजहीं—ज़ोर से गरजते हैं।

रायगढ़ मे शिवाजी के मणि-जटित महल ऐसे शोभायमान हैं जिन्हे देखकर यक्ष, किन्नर, गंधर्व, सुर (देवता) और असुर (राक्षस) भी रहने की इच्छा करते हैं। ऊँचे-ऊँचे नीलम जडे हुए महलो मे मृदंग ऐसे बजते हैं मानों वर्षा ऋतु मे उमड घुमड़ कर मेघ-मालाएँ जोर जोर से गर्जन करती हों।

४. मुकतान की झालरनि मिलि—मुकतान—मुक्ता, मोती। नखत—नक्षत्र। अंबर—आकाश। ऊरध—(सं० ऊर्ध्व) ऊँचे पर, ऊपर। तनाव—(फा० तनाव) रस्सी, जिससे तंबू ताना जाता है।

मोतियो की झालरें मणिमालाओ के साथ छज्जो पर ऐसी

शोभित हो रही हैं मानों सन्ध्या के समय लाल आकाश में नक्षत्र (तारे) हों। और जहाँ तहाँ ऊँचे स्थानों पर जड़े हुए हीरों की किरणें ऐसी घनी चमक रही हैं मानों गगन (आकाश) में तने हुए तंबू की श्वेत रस्सियाँ हों।

५ भूषन भनत जहँ परसि कै—पुहुपराग—पुखराज, इस का पीला रंग होता है। पीतपट—पीतांबर, पीला वस्त्र। प्रभा—शोभा। प्रभु—भगवान, कृष्ण। सिन्धु—समुद्र यहाँ इस का प्रयोग सजल (जल से भरे) अर्थ में हुआ है। सिन्धु मेघन की सभा—जलपूर्ण बादलों का समूह। नागरिन—नगर की रहने वाली स्त्रियाँ, चतुर स्त्रियाँ। फटिक—स्फटिक, बिल्लौर पत्थर। विकसंत—विकसित, खिले हुए। अमल—निर्मल, स्वच्छ।

भूषण जी कहते हैं कि वहाँ सजल मेघों का समूह (महलों के शिखर पर जड़ी) पीली पुखराज मणियों को छूकर भगवान कृष्ण के पीतांबर की शोभा प्राप्त करता है। और कहीं चतुर स्त्रियों के मुख स्फटिक मणियों के महलों में ऐसे दिखाई देते हैं मानों स्वच्छ गंगा की लहरों में कोमल कमल खिल रहे हों।

६ आय दरबार बिललाने—बिललाने—व्याकुल हो कर असंबद्ध बातें करने लगे। छरीदार—चोबदार, द्वारपाल। जापता—(फा० जाब्ता) नियम, कायदा। जापता करन हारे—राज-दरबार का कायदा बताने वाले (जो लोग नये व्यक्ति को यह बताते हैं कि दरबार में कैसे उठना बैठना एवं अभिवादनादि करना होता)। मनके—मिले हुये। कुरुब—(अरब) कानून, नियम, प्रबंध। [illegible]। [illegible]। नहि—नहिन। [illegible]—सामना। तारे—आकाश के तारे, आँख की पुतली।

शिवाजी को दरबार में आया हुआ देख कर चोबदार लोग

व्याकुल हो उठे और (दरबार का) कायदा बताने वाले सन्न रह गये, हिले तक नहीं। भूषण कवि कहते हैं कि कोई कोई प्रबन्ध करने वाले सरदार शिवाजी के सामने आकर खड़े हो गये। औरंगजेब भौचक्का सा रह गया, वह शिवाजी की ओर देखता रहा और चकित हो गया। इस प्रकार सारा मामला अनबन होगया—बिगड़ गया। ग्रीष्म के सूर्य के समान शिवाजी के प्रताप को देखकर तारों के समान तुर्कों की आंखों की पुतलियाँ मुँद गईं।

७ छाय रही जितही तितही—छीरधि—क्षीर सागर, दूध का समुद्र। करारी—चोखी, सुंदर। सुधान के—चूने के पुते हुए। सौधनि—महलों को। सोधति—साफ करती। ओप—चमक। तम—अंधकार। तोम—समूह। बगारी—फैलाई।

छीर-सागर के (शुभ्र) रंग के समान सुन्दर शोभा जहाँ तहाँ छाई हुई है और वह स्वच्छ चूने के बने महलों को साफ करके उज्ज्वल चमक दे रही है। भूषण कहते हैं कि चन्द्रमा ने अंधकार के समूह को दबाकर चारो ओर सुन्दर चाँदनी ऐसे फैलाई है, जैसे शिवाजी ने अफजलखाँ को मार कर पृथिवी पर अपनी कीर्ति फैलाई थी।

८. तो सम हो सेस—कैलासधर—कैलाश धारण करता है जिसको, महादेव। सुधा सरवर—अमृत का श्रेष्ठ सरोवर। रावरे—आपके। गुनियै—जानिये। सुनियै—सुनी, है वी।

तुम्हारे यश के समान शुभ्र शेषनाग था, पर वह तो अब पाताल मे रहता है; ऐरावत हाथी था, वह अब इन्द्रलोक में सुना जाता है, हंस मानसरोवर मे जा छुपे हैं, उसी मे शिवजी भी लुप्त हो गए हैं और अमृत का सरोवर भी दुनिया को छोड़कर चला गया है। हे बलवानों और दानियो मे श्रेष्ठ शिवाजी महाराज !

लाखों। कच्छ—कछुए। चय—समूह। सुअप्प—सुन्दर जल या अपना जल। निवाहक—सं० निर्वाह करने वाला, कर्णधार। सुव—सुत, पुत्र। बादबान—(फा०) नाव में कपड़े का पाल, जिसमे हवा भरने पर नौका चलती है। किरवान—स० कृपाण, तलवार।

कलियुग-रूपी अपार समुद्र है जो अधर्म की प्रबल तरंगो से युक्त है, लाखों मुसलमान ही जिसमे कछुए, मछली और मगर-समूह हैं, और जिसमे छोटे-छोटे राजा-रूपी नदी नाले मिलकर नीरस हो जाते हैं (नदियाँ एव नाले जब समुद्र मे मिल जाते हैं तब उनका भी जल खारी हो जाता है), भूषण कहते हैं कि इस प्रकार कलियुग रूपी समुद्र ने समस्त पृथ्वी को घेर कर अपने जल के वश मे कर लिया है (अर्थात् कलियुग-रूपी समुद्र सारे संसार मे फैल गया है), उस समुद्र मे हिन्दू लोग पुण्य का (सौदा) खरीदने वाले वनिये हे। हे शाह जी के पुत्र शिवाजी! आप ही उनको पार उतारने वाले (कर्णधार) है और तलवार-रूपी सुन्दर पाल को धारण करने वाला आपका यश उनका जहाज है।

११ सिंह थरि जाने विन—थरि—स्थली, जगह। जावली—यह प्रान्त कोयना नदी की घाटी मे ठीक महाबलेश्वर के नीचे था। यह एक तीर्थ स्थान था। शिवाजी ने सन् १६५६ में इस स्थान को जीत कर यहाँ प्रतापगढ किला बनवाया था। इसी स्थान पर उन्होंने अफ़ज़ल खाँ को मारा था। भठो—भटी, (भट—सैनिक, भटी—सैनिकों वाला) सेनापति। भटक्यो—भटका, धोखा खाया, भूल की। भभरि—हड़बड़ा कर, घबड़ा कर। काहुवै—किसी ने भी। न हटक्यो—हटका नहीं, रोका नहीं। गाजी—मुसलमानो मे वह वीर जो धर्म के लिए विधर्मियो से युद्ध करे, वीर। मदगल—मद ढालता हुआ, मस्त। कहँ—को।

आकुत—सिद्दी कासिम याकूतखाँ, यह बीजापुर का एक वीर सर
था। सटक्यो—चुपचाप चला गया। आँकुस—अंकुश।

जावली जंगल को सिंह के रहने का स्थान जाने बिना हठी
आदिलशाह ने सेनापति अफजलखाँ रूपी हाथी को भेज
बड़ी भूल की—अर्थात् शिवाजी रूपी सिंह के पराक्रम को
जान कर आदिलशाह ने अफजलखाँ को जावली भेज कर बड़ी भू
की। भूषण कवि कहते हैं कि वीरकेसरी शिवाजी को देख सा
सेना हड़बड़ा कर भाग गई, हृदय में हिम्मत धारण कर कि
ने उन्हें न रोका। शाह जी के समर्थ पुत्र शिवाजी-रूपी सिंह
अफजलखाँ रूपी मदमस्त हाथी को अपने पंजे (बघनखे) के ज
से पछाड़ दिया। उस अफजलखाँ के बिना याकूतखाँ-रूपी महा
बेकार हो अपने (प्रेरणा रूप) अंकुश को ले चुपचाप चला ग
(याकूतखाँ ने अफजलखाँ को शिवाजी से एकान्त में मिलने
सलाह दी थी)।

१२. जेते हैं पहार—पारावार—समुद्र। पैल—प्रबल, प्रवाह
हौंस—हविस, इच्छा। कोट करि—किले बना कर। मघवा—इन्द्र

समस्त पृथ्वी और समुद्र में जितने भी पहाड़ हैं उन्होंने शिव
जी की अपार कृपा को सुन कर अत्यधिक सुख पाया है। भूष
कवि कहते हैं कि उन सब के मन में महाराज शिवाजी के आश्र
में आने की बड़ी हविस पैदा होगयी है, उत्कट इच्छा उत्पन्न होग
है। (शिवाजी पृथ्वी पर के इन्द्र हैं अतएव) पहाड़ों ने तो उन
तलवार-रूपी वज्र से पक्षहीन होने के भय से शरण माँग प्र
कर लिया अर्थात् इस डर से कि कहीं शिवाजी अपने तलवार
रूपी वज्र से हमारे पंख न काट दें, वे स्वयं शिवाजी की शरण
आगये हैं, क्योंकि महापुरुष शरणागत को कष्ट नहीं देते। इ

प्रकार पृथ्वी पर तेजस्वी तथा महाबली शिवाजी रूपी इन्द्र ने इन सब पर्वतों पर किले बना बना कर उन्हे सपक्ष कर दिया अर्थात् अपने पक्ष मे ले लिया। (इस पद मे कवि ने ऐतिहासिक तथ्य को बडी कुशलता से वर्णन किया है। शिवाजी ने अपने प्रबल शत्रुओं से लोहा लेने के लिए आस-पास की पहाडियो पर अनेक किले बनाये थे, और इस प्रकार उन पहाडियो को अपने पक्ष मे कर लिया था जिन पर उस समय तक अन्य किसी का राज्य न था। यह देखकर और शिवाजी के पराक्रम से डर कर आस पास के अनेक पहाडी किलो के मालिक भी शिवाजी की शरण मे आगये थे। उन्हे इस बात का डर था कि कही हमने शिवाजी के विरुद्ध कार्य किया तो शिवाजी हमारा किला नष्ट कर देगे। इसी ऐतिहासिक तथ्य को कवि ने आलंकारिक ढंग से वर्णन किया है और दिखाया है कि जहाँ इन्द्र ने पहाडो को विपक्ष कर दिया था वहाँ आधुनिक इन्द्र रूपी शिवाजी ने उन्हे सपक्ष कर दिया है। पुराणों में लिखा है कि पहले पहाडो के पक्ष थे, वे इधर उधर उडकर जहाँ तहाँ बैठते थे, और इस प्रकार बडा जन-संहार करते थे। अतः इन्द्र ने अपने वज्र से इन पहाडों के पंख काट डाले।

१३ भौसिला भूप बली भुव को—भुजगम—सर्प। भर—भार। तरनि—तरणि, सूर्य। पानिप—आब, कान्ति। दौ—दावाग्नि (सूखे जंगल में चारों ओर से लगने वाली अग्नि)। छीना—क्षीण, हीन, मलीन। करि—हाथी।

वीर भौसिला राजा शिवाजी ने अपनी बलवान भुजा-रूपी शेषनाग से पृथ्वी का भार उठा लिया। भूषण कहते हैं कि उन्होने अपने प्रबल प्रताप-रूपी सूर्य से शत्रुओं को कान्तिहीन कर दिया। दरिद्रता-रूपी अग्नि को हाथी (के दान) रूपी मेघो से नष्ट कर के

पृथ्वी-तल को शीतल कर दिया—अर्थात् हाथियों का दान देकर दरिद्रों की दरिद्रता को दूर कर दिया। शाहजी के पुत्र, कुल के चन्द्रमा शिवाजी ने अपने यश-चन्द्र से चन्द्रमा की छवि को मलिन कर दिया।

१४ बीर बिजैपुर के वजीर—घूघू—उल्लू। चकता—चंगेजखाँ का वंशज औरंगजेब। मुख-रुचि—मुख की कान्ति। द्विजचक्र—१. ब्राह्मणों का समूह, २ चक्रवाक पक्षी। भासमान—सूर्य।

शिवजी के शुभ नाम वाले शाहजी के बेटे प्रतापी शिवाजी ने अपने कृपाण-रूपी सूर्य से समस्त भूमंडल को इस प्रकार तपाया (प्रकाशित कर दिया) जिससे कि बीजापुर के वजीर रूपी निशिचर (राक्षस) और गोलकुंडा के सर्दार रूपी उल्लू दुनियाँ से उड़ गए (दिन में राक्षस और उल्लू कहीं छिप जाते हैं) चंगेजखाँ के वंशज औरंगजेब के मुख-चन्द्र की कान्ति फीकी पड़ गई और द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) रूपी चक्रवाक भोजन-सामग्री से युक्त हो गए अर्थात् इनके प्रताप से सुख पाने लगे, (चकवा चकवी दिन में प्रसन्न रहते हैं)। तुर्क-रूपी कुमुदिनी को मुरझा दिया और हिन्दू-रूपी कमलिनी को अनेक भाँति से प्रफुल्लित कर दिया।

१५. कवि कहैं करन—करनजीत—कर्ण को जीतने वाला, अर्जुन। करनंद—तीर कमान चलाने वाले, धनुर्धारी। [illegible]—छेद, क्षत, घाव। बंब—नगाड़ा। धराधर—पृथ्वी को धारण करने वाला, (राजा या शेषनाग)। अहमेव—अहंकार, घमंड। करनी—करनी करने वाला, [illegible] करने वाला। अदिल—अदिलशाह, बीजापुर का सुल्तान। मीत मरदी—मैत्री। [illegible] निजाम—[illegible] निजामुलमुल्क, यह अहमदनगर के निजामशाही बादशाहों की उपाधि थी।

कवि लोग शिवाजी को (अत्यधिक दान देने के कारण) कर्ण
ा हैं (कर्ण दानवीर के रूप मे प्रसिद्ध हैं), उन्होंने शत्रुओं के
ा मे इस प्रकार घाव किये है कि धनुषधारी लोग उन्हे अर्जुन
ते हैं। शिवाजी ने पृथिवी के पालन करने वाले अन्य सब
ाओं के अहंकार को नष्ट कर दिया, अतः सारे राजा उन्हे
ी को धारण करने वाला शेषनाग कहते हैं। भूषण कवि कहते
क हे शिवाजी ! आपके राजकार्यो को देखकर कोई आपका भेद
पा सकता अर्थात् आपकी राजनीति बडी गूढ है क्योकि
को आदिलशाह कहरी (कहर ढाने वाला), गोलकुडा का
ान कुतुबशाह मनमौजी (जो मन मे आये वही करने वाला)
: बहरी निजाम को जीतने वाले दिल्ली के मुगल बादशाह देव
ू देओ—राक्षस) कहते हैं।

१६. 'पीय पहारन पास न जाहु'—पीय—प्रिय, पति। सोपे—
ं, सौगन्द खिलाकर। रोपे—रुष्ट होने पर। दोपैं—दूषित कर
। पाँच—बचकर। घोपै—घोषणा करके कहते हैं, बार-बार
ं हैं। मूल पुस्तक में अंतिम पक्ति में 'दोपैं' के स्थान पर 'घोपैं'
चाहिए। बहादुर—बहादुर खाँ, सल्हेरि के युद्ध मे जब मुसल्मानों
र्ण पराजय हुआ तब औरंगजेब ने महाबतखाँ और शाहजादा
ज्जम की जगह बहादुरखाँ को सेनापति बनाकर भेजा था। मराठों
डने की इसकी हिम्मत न होती थी इसलिए इसने युद्ध बंद कर
और भीमा नदी के किनारे पेडगाँव मे छावनी डालकर रहने लगा।
इसने बहादुरगढ नामक किला बनाया। दाऊदखाँ—दाऊ-
ाँ दिल्ली का एक बड़ा सरदार और सेनानायक था। जसवंतसिंह—
ाड के राजा थे। दोनों को औरंगजेब ने शिवाजी को जीतने के लिए
था। जसवंतसिंह को शिवाजी ने फोड लिया और पूना में दबे

हुए शाइस्ताखाँ पर एक रात को छद्मवेश में आक्रमण कर दिया। शाइस्ताखाँ की उँगली कट गई, और उसने खिड़की से कूदकर जान बचाई। करणसिंह—बीकानेर के महाराजा रायसिंह के पुत्र थे। इन्होंने सन् १६६३ से १६७४ ई० तक राज्य किया। औरंगजेब ने इन्हें दो हजारी का मनसब दिया था। भाऊ—बूँदी के छत्रसाल हाड़ा के पुत्र थे। ये सन् १६५८ ई० में गद्दी पर बैठे और औरंगजेब की ओर से शिवाजी से लड़े थे।

स्त्रियाँ बहादुरखाँ को सौगंध खिला-खिला कर कहती हैं कि हे प्यारे! आप पहाड़ों (दक्षिणी पहाड़ों) के निकट न जाओ, क्योंकि हे नवाब साहब! भोंसिला राजा शिवाजी के क्रुद्ध होने पर आप को कौन बचाएगा? अर्थात् कोई भी नहीं बचा सकता। उन्होंने शाइस्ताखाँ को भी कैद कर दिया तथा जसवन्तसिंह, करणसिंह और भाऊ जैसे वीरों को भी परास्त करके दूषित कर दिया फिर आपकी क्या सामर्थ्य है? सब गुणवान (पंडित लोग) बार-बार यही कहते हैं कि शिवाजी के वीर सरदारों से कोई भी अमीर उमरा अभी तक बच कर नहीं गया। अर्थात् जितने भी अमीर-उमराव दक्षिण में सूबेदारी अथवा युद्ध करने के लिए गये वे सब वहाँ मारे गये, इस हेतु आप न जाइये।

२३ दानव आयो दगा करि— दानव—राक्षस (यहाँ अफजल खाँ से अभिप्राय है) दीह—दीर्घ, बड़ा। भयारा—भयंकर। मारयो—मारा गया। वार—वार, प्रहार। नरिन्द—(नरेन्द्र) राजा। अरिन्द—[illegible] शत्रु। मृगिन्द—(मृगेन्द्र) सिंह। गयन्द—(गजेन्द्र) हाथी।

जब [illegible] मारा हुआ महाभयंकर दानव (अफजल खाँ) [illegible] करके (छल करने की इच्छा से) [illegible] स्थान पर

आया, भूषण कहते हैं, तब बाहुबली शिवाजी बिना किसी शंका के (बेधड़क) उससे मिलने को पहुँचे। (जब उसने धोखे से शिवाजी पर तलवार का वार करना चाहा तो) शिवाजी ने बघनखे के घाव से उसे नीचे गिरा दिया, (और शीघ्र ही) बीछू शस्त्र (बघनखा) के घाव से गिरे हुए अफजलखाँ के ऊपर ही वे दिखाई देने लगे। राजा शिवाजी अपने शत्रु (अफज़लखाँ) को ऐसे दबाकर बैठे, मानो किसी सिंह ने हाथी को पछाड़ा हो (और वह उस पर बैठा हो)।

१८. साहितनै सिव साहि निसा—निसांक—निःशंक। गढ़-सिंह—सिंहगढ़। सुहानौ—सुहावना, सुन्दर। राठिवरो—राठौर क्षत्रिय। उदैभानो—उदयभानु, एक वीर राठौर क्षत्रिय जो औरंगज़ेब की ओर से सिंहगढ़ का किलेदार था। लोथिन—लाशों। मसानो—श्मशान। सिंहगढ़—इस किले का पहला नाम कोंडाणा था। सन् १६४७ ई० में शिवाजी ने इसे जीता। जयसिंह से संधि करते समय शिवाजी को यह किला, और बहुत से किलों के साथ, औरंगजेब को देना पड़ा था। औरंग-जेब की कैद से छूटने के बाद सन् १६७० में शिवाजी ने तानाजी मालुसुरे को कोंडाणा वापिस लेने के लिए भेजा। अँधेरी रात में तानाजी और उसके भाई सूर्याजी ने धावा किया। घमासान युद्ध हुआ। किला शिवाजी के हाथ आया पर वीर तानाजी लड़ते लड़ते मारा गया। उस पुरुषसिंह की मृत्यु पर शिवाजी ने कहा 'गढ़ आया पर सिंह गया', तभी से इसका नाम सिंहगढ़ पड़ा। इसी घटना का यहाँ वर्णन है।

शाहजी के पुत्र महाराज शिवाजी ने निःशंक हो (निर्भयता-पूर्वक) सिंहगढ़ को रात में युद्ध करके विजय कर लिया। समस्त राठौर क्षत्रिय (जो किले में थे) मारे गए और लड़ कर राठौर सरदार उदयभानु भी इस युद्ध में गिर गया। भूषण कवि कहते हैं कि ऐसा

हो। कवियों ने यमुना के जल का रंग काला और गंगा-जल का रंग सफेद माना है। आंखों से निकला जल भी काजल से मिला होने के कारण काला है, और स्त्रियाँ पहाड़ो पर तो चढ़ी हुई हैं काला जल ऐसे निकलने लगा मानो कलिंद पहाड़ से यमुना जी का स्रोत।

२०. दुवन सदन सबके बदन—दुवन—शत्रु। बदन—मुख।
शत्रुओं के घरों में सब के मुख से आठो पहर (रात-दिन) 'शिव-शिव' शब्द निकलता है। (शिवाजी के भय से शत्रु लोग रात-दिन उनकी चर्चा करते रहते हैं, इस पर कवि उत्प्रेक्षा करता है कि) मानो तुर्क भी रक्षा के लिए शिव (महादेव) का नाम जपते हैं। (हिन्दूशास्त्रानुसार शिव के नाम के जाप से प्राण-रक्षा होती है)।

२१. देखत ऊँचाई उदरत पाग—उदरत—गिरती है। द्यौस—दिवस, दिन। सल्हेरि—यह किला सूरत के पास था था। सं० १६७१ ई० में शिवाजी के प्रधान सेनापति मोरोपंत ने इसे रात ही रात में जीत लिया था। परनाला—एक किले का नाम,जो आजकल के कोल्हापुर से २२ मील उत्तर पश्चिम की ओर था, जिसे सन् १६५९ के अन्त में शिवाजी ने अपने अधिकार में कर लिया था। मई १६६० में बीजापुर की ओर से सिद्दी जौहर ने शिवाजी को पकड़ने के विचार से इसे आ घेरा पर वह सफल मनोरथ न हुआ। किला उसे मिल गया, पर शिवाजी वहाँ से निकल चुके थे। इसके बाद शिवाजी की बीजापुर वालों से संधि हो गई, अत यह किला बीजापुर वालों के हाथ में ही रहा। सन् १६७२ में अली आदिलशाह की मृत्यु होगई। उसके बाद १६७३ में शिवाजी के सेनापति कान्होजी अँधेरी रात में कुल ६० सिपाहियों के सहायता से इस किले पर चढ़ गये। किलेदार भाग गया और वह किला शिवाजी के हाथ

मानो वीरों की भी समस्त पृथ्वी को जीत लिया। भूषण कहते हैं कि उन्होंने अमीर उमराओं (दूसरी पंक्ति मे 'उमराध' के स्थान पर 'उमराव' पाठ चाहिए) की जमीनों को भी छीन लिया (छोड़ा नहीं)। शाहजी के पुत्र शिवाजी की धाक से बडे बडे धैर्यवानों का भी धीरज जाता रहा और मीरों के हृदयो मे ऐसी पीडा बढी कि वे अपने पीर (पैगंबरो) की भी सुध भूल गये।

२८ कामिनि कंत सों जामिनि चंद सो—कंत—पति। जामिनि—रात्रि। दामिनी—बिजली। पावस—वर्षाकाल। सूरति—सूरत, स्वरूप, गुरु। नलिनी—कमलिनी। पूषनदेव—पूषण + देव सूर्यदेव। जाहिर—प्रकट, प्रसिद्ध। खुमान—आयुष्मान, चिरंजीव।

जिस प्रकार अपने पति से स्त्री, चन्द्रमा से रात्रि, वर्षाकाल की मेघ-घटा से बिजली, दान से कीर्त्ति, ज्ञान से सूरत (स्वरूप) अत्यधिक सम्मान से प्रीति, आभूषणो से युवती और नये-सूर्य की कान्ति से कमलिनी शोभा पाती है, वैसे ही चिरंजीव शिवाजी से सारी हिन्दू जाति शोभायमान है, यह बात समस्त ससार में प्रसिद्ध है।

२५ चक्रवती चकता चतुरंगिनी—चकता—मुगल चगेज़खाँ का वंशज औरंगज़ेब। चापि लई—दबा ली। चक—दिशा। दिसि चक—चारों ओर से। दरीन—गुफाओ मे। दुरे—छिप गये। वारिधि—समुद्र। नघ—नाँघा, उल्लंघन किया, पार किया।

चक्रवर्ती औरंगजेब की चतुरगिणी सेना ने चारों ओर से पृथ्वी को दबा लिया (अपने अधीन कर लिया)। भूषण कवि कहते हैं कि बहुत से राजा तो उसके डर के कारण गुफाओं में छिप गये और कितने ही समुद्र पार करके चले गये। ऐसे (दबदबे

२७ कीरति सहित जो प्रताप—मारतंड—सूर्य। कचन—सोना। मृदुता—कोमलता। कुमति—दुर्बुद्धि। पिसानी—पेशानी, मस्तक। मूल पुस्तक में 'निसानी' के स्थान में 'पिसानी' पाठ चाहिए। पानी—आब, चमक।

भूषण कहते हैं कि वीर-केसरी शिवाजी में जो कीर्ति-सहित प्रताप है, उसे मैं सूर्य में तेज चाँदनी (ठंडा प्रकाश) मानता हूँ। उस चिरजीवी में जो उदारता और सुशीलता शोभित है उसे मैं सोने में कोमलता और सुगन्धि कहता हूँ। भूषण जी कहते हैं कि औरंगजेब के मस्तक में कुबुद्धि (हिन्दुओं पर अत्याचार करने का कुविचार) पैदा होने से ही सब हिन्दुओं का भाग्य फिरा (भाग्योदय हुआ, क्योंकि औरंगजेब के अत्याचारों से तंग होने से हिन्दुओं में जागृति हुई जिससे उनका भाग्य फिरा)। शिवाजी में जो सुन्दर दान की कीर्ति है वही सुन्दरता मैंने अनुपम मोतियों की आब (चमक) में देखी है।

२८ दारुन दुगुन दुरजोधन—दारुन—कठोर। अवरंग—औरंगजेब। छल मढ़िकै—कपट से ढक कर, कपट में फँसाकर। धरम—धर्म, धर्मसुत, युधिष्ठिर। पैज—प्रण, टेक। कढ़िकै—निकल कर।

भूषण कवि कहते हैं कि औरंगजेब दुर्योधन से दुगुना दुष्ट है। उसने सारे संसार को अपने कपट में फँसा लिया है। युधिष्ठिर के धर्म, भीम के बल, अर्जुन की प्रतिज्ञा, नकुल की बुद्धि और सहदेव के तेज के प्रभाव से वे पाँचो पाडव (दुर्योधन के बनवाये) सूने लाख के घर से रात को निकल कर अपना उद्धार कर सके थे। परन्तु शाहजी के पुत्र धर्मवीर शिवाजी ने दिल्ली में पाडवों से भी अधिक पराक्रम दिखाया क्योंकि वे अकेले ही उक्त पाँचो गुणों को धारण करके दिन दहाड़े लाखों पहरेदारों के बीच में निकल आए।

२६. बड़ो डील लखि पील को—डील—शरीर। पील—फील, हाथी। सरजा—सिंह, शिवाजी की उपाधि। गुमान—अभिमान।

हाथी का बहुत बडा डील (शरीर) देखकर समस्त पशुओं ने (भय से) वन-स्थली को छोड दिया, परन्तु हे सिंह, तू धन्य है कि तूने ऐसे हाथी का भी घमंड दूर कर दिया अथवा औरंगजेब रूपी हाथी कि विशाल शक्ति को देखकर सब राजा लोग अपना अपना राज्य छोडकर भाग गये, परन्तु हे वीरकेसरी शिवाजी आप ही इस संसार मे धन्य हैं, जिन्होंने उसके गर्व को चूर्ण कर दिया।

३० अरि तिय भिल्लिनि सों कहे—शत्रु-स्त्रियाँ एकान्त गहन वन में जाकर भीलनियों से कहती हैं कि तुम्हारे स्वामी हो आनन्द मे हैं, क्योंकि उनकी शत्रुता सरजा राजा शिवाजी से नहीं है (पर हमारे पतियों का शिवाजी से वैर है। इसलिए व सुखी नहीं हैं)।

३१. महाराज सिवराज तेरे वैर हरम—जनानखाना, अंतःपुर। रामनगर जवार—रामनगर तथा जवार या जौहर नाम के कोंकण के पास ही दो कोरी राज्य थे। सन् १६७२ मे सल्हेरि-विजय के बाद मोरोपंत पिंगले ने बड़ी भारी फौज लेकर उन दो को विजय कर लिया। परवाह—प्रवाह। बैयर—बऊवर, स्त्रियाँ। चुरीन—चूड़ियाँ। तुरकीन—यवन स्त्रियाँ, मुसल्मान स्त्रियाँ।

हे महाराज शिवाजी ! यह देखा जाता है कि आपके वैर के कारण वन जंगल हबशियों के जनानखाने बन गये हैं, अर्थात् जो तातारी हबशी पहरेदार बादशाह के अन्तःपुर में रहते थे, अब बादशाहों के जंगल में चले जाने के कारण वे हबशी गुलाम भी कहीं सभी जंगलों में चले गये हैं। भूषण कवि कहते हैं कि आपके ही वैर के कारण रामनगर और जवार नगर में रक्त की नदियों के प्रवाह बहे। हे समर्थ वीर-केसरी शिवाजी ! आपसे वैर होने से

बीजापुरी शत्रुओं की स्त्रियों के हाथों मे चूडियों के चिह्न ही नहीं रहे अर्थात् सब विधवा हो गई, और आपके ही वैर के कारण आगरे और दिल्ली नगर की मुसलमान-स्त्रियो के चन्द्रमुखों पर सिंदूर की बिंदी दिखाई देती हैं। (मुसलमान स्त्रियां सिंदूर का टीका इसलिए लगाती हैं कि वे भी हिंदू-स्त्रियां ही जान पडे, और उनकी रक्षा हो जाय)।

३२ पूरब के उत्तर के—पछाँह—पश्चिम। मुहीम—आक्रमण, चढाई। गढ कोट—किले। उजर—उज्र, आपत्ति। उबरते—बचते, जिन्दा रहते।

भूषण कवि कहते हैं कि वजीर लोग औरंगजेब से इस प्रकार विनय करते हैं कि हम पूरब उत्तर और पश्चिम देश के सब जबर्दस्त बादशाहो के किलो को भी छीन लेते और पुर्तगाल विजय करने के हेतु समुद्र को भी पार कर जाते, परन्तु (क्या करे) आप हमें शिवाजी पर चढाई करने के लिए भेजते हैं (जहां कि बचना कठिन है)। हजरत! हम मरने से नहीं डरते, और हम तो आपके सेवक हैं, अत. कोई उज्र भी नहीं कर सकते, परन्तु यदि कुछ दिन और जीने पाते तो आपके बहुत से कार्य करते।

३३.महाराज सिवराज चढत तुरंग पर—जात नै दरि—झुक जाती है। गनीम—शत्रु। दरकत—फटती है। खरी—चोटी, खूब अच्छी। सुरत—यह बम्बई प्रान्त में एक ऐतिहासिक नगर है इसे शिवाजी ने सन् १६६४ और १६७० ई० में दो बार लूटा था। उस समय यह बडा भारी बन्दरगाह था।

जब महाराज शिवाजी घोडे पर सवार होते हैं तो बडे-बडे बलवान शत्रुओ की गरदने झुक जाती हैं (जब शिवाजी चढाई करने के लिए चलते हैं तब शत्रु गरदन झुकाकर चलती [illegible]

प्रकट करते हैं अथवा अधीनता स्वीकार कर सिर झुका लेते हैं) और जब इनकी सेना पृथ्वी पर चलती है तो सब दुष्टों (यवनों) की छातियाँ फटने लगती हैं (वे घबराते हैं कि अब क्या करें ? शिवाजी की सेना हम मार डालेगी) । शिवाजी ने दौड कर घाव (मूल पुस्तक मे 'घाघ' के स्थान पर घाव' पाठ चाहिए) (चोट) तो अमीर उमराओ पर किया पर इससे सारी दिल्ली-सेना की नाक कट गई (इज्जत मिट्टी मे मिल गई) शिवाजी ने सूरत नगर को जला कर बादशाह औरंगजेब के हृदय में दाह उत्पन्न कर दिया और ओर उसकी कालिमा समस्त बादशाहत के मुख पर प्रकट हुई (शिवाजी का सूरत जलाने का साहस देखकर औरंगजेब गुस्से मे जलभुन उठा और दिल्ली की सेना उसे बचा न सकी इस कारण सारी बादशाहत के ऊपर कलंक का टीका लग गया) ।

३४ लै परनालो सिवा सरजा—बिगूँचे—घर दबाये, मथ डाले, बरबाद कर दिये । हारि परे—हार कर गिर गये । कूँचे—मोटी नसें जो एड़ी के ऊपर या टखने के नीचे होती हैं । बिकरार—विकराल, भयंकर ।

वीर-केसरी शिवाजी ने परनाले के किले को लेकर (विजय करके) करनाटक तक समस्त देशो (करनाटक के हुबली आदि कई धनी शहरों) को मथ डाला । भूषण कवि कहते हैं कि शत्रुओं के बाल-बच्चे (भय के कारण) भाग कर बडी दूर चले गये और बड़े-बड़े घोर वनों को फाँदते-फाँदते हार कर (शिथिल होकर) गिर पड़े मानों उनके पैरो की नसें ही कट गई हो । कहाँ वे बेचारे सुकुमार राजकुमार और कहाँ वे बडे ऊँचे-ऊँचे विकराल पहाड़ जिन पर शिवाजी क भय के कारण वे चढे थे !

३५. कसत मे वार वार वैसोई वलद होत—कसत—कपित, खेंचते, कसते हुए। वलंद—ऊँचा। समर—युद्ध। निदरत है—नीचा दिखाती है। रूप भरत है—रूप धारण करता है, वेश बनाता है। केते मान—कितने परिमान मे, किस गिनती मे। करवाल—तलवार। हाल—आजकल, इस समय।

(यहा शिवाजी की तलवार को ढाल का रूप दिया गया है जो संसार की रक्षक मानी गई है) भूषण कवि कहते है कि हे राजाओ मे श्रेष्ठ महाराज शिवाजी! आपकी कृपाण बार-बार खेच कर चलाए जाने पर (हिन्दुओ की रक्षा करती हुई) उसी भाँति ऊँची उठती है और युद्ध मे वैसी ही सुदर शोभा को धारण करती है (जैसे कि ढाल)। यह आपकी कृपाण बडी दृढ है और सदा ही यश-रूपी पुष्पो को अत्यधिक धारण करने वाली है (ढाल मे भी लोहे के फूल लगे रहते है और उनसे वह दृढ होती है)। यह बडे-बडे जोरदार गोलो और बाणो को भी लज्जित कर देती है, फिर भला इसके सामने वर्छी, तलवार, तीर और गोलियो की क्या गिनती है, वे तो इसके सामने कुछ भी नहीं कर सकतीं—अर्थात् गोला बारूद आदि से युक्त मुसलमानो की सेना मे भी आपकी तलवार हिन्दुओं की रक्षा कर गोला बारूद आदि सामग्री को लज्जित कर देती है, उनकी व्यर्थता सिद्ध कर देती है। ऐसी यह आपकी करवाल (कृपाण) समस्त ससार के लिए ढाल स्वरूप है (रक्षक है) परन्तु अब वही म्लेच्छो का अंत करती है।

३६ आदि बडी रचना है विरचि की—विरंचि—ब्रह्मा।

सर्व प्रथम ब्रह्मा की सृष्टि बहुत बडी है, जिसमे कि जड-चेतन (चराचर) की रचना की गई है। और उस रचना मे सबसे बडा जीव है क्योंकि उस के हृदय मे ज्ञान विद्यमान है। इन समस्त

जीवो मे पैज (प्रतिज्ञा) मे दृढ होने के कारण प्रतिज्ञा पूरी करने के कारण-मनुष्य-जीव श्रेष्ठ है। मनुष्यों मे राजा बडा है और समस्त राजाओं मे महाराज शिवाजी श्रेष्ठ हैं।

३७ अगर के धूप धूम उठत जहाँ—बगूरे—बगूले, बवंडर अमाप—बेमाप, बेहद । कलावंत—गायक । अलापतीं—गाते थे मतंग—हाथी।

जहाँ पहले शत्रुओं के महलों एव शिविरो मे अगर की धूप जलने के कारण सुगन्धित धुआँ उठा करता था अब वहाँ (शिवाजी से शत्रुता होने के कारण महलो क उजाड होने स) धूल के बडे बडे बगूले उठते हैं। और जहा कलावत (गायक) लोग सुंदर मधुर स्वर मे अलापते थे, अब वहाँ भूत-प्रेत रोते और चिल्लाते हैं। भूषण कवि कहते हैं कि ऐसा मालूम होता है, मानों शिवाजी की शत्रुता के कारण शत्रुओ के उन डेरो पर किसी का शाप पड गया है, अर्थात् किसी के शाप से वे नष्ट हो गए हैं, (क्योंकि) जिन महलो मे पहले गभीर ध्वनि से मृदग गूँजा करते थे, अब वहाँ बडे बडे भयकर सिंह, बाघ और हाथी घोर गर्जना करते हैं, अर्थात् शत्रुओ के डेरे अब जंगल बन गये हैं।

३८ साहितनै सरजा समरत्थ—बलि—राजा बलि, जिसे वामन ने छला था। बेनु—चक्रवर्त्ती राजा वेणु, जिसकी जंघाओं के मथने से निषाद और पृथु की उत्पत्ति हुई। भलि भीख लै—भली भिक्षा लेकर खूब भिक्षा लेकर। नैसुक—थोड़ा सा। धनेस—कुबेर, देवताओं का खजानची।

शाहजी के पुत्र सब प्रकार से समर्थ वीर-केसरी महाराज शिवाजी ने धरनी (पृथ्वी) पर ऐसे-ऐसे उत्तम कार्य किये हैं कि उनके सन्मुख लोग राजा भोज और विक्रमादित्य आदि प्रतापी

राजाओं के नाम भूल गये हैं और बलि तथा वेणु जैसे महादानी राजाओं का यश भी फीका पड़ गया है। भिक्षुक लोग केवल भौंसिला राजा शिवाजी से ही अत्यधिक भिक्षा लेकर राजा बन गये हैं। शिवाजी का सदा ऐसा ही ढंग देखा गया है कि किसी पर थोड़ा-सा ही खुश होने पर उसे कुबेर के समान धनपति कर देते हैं।

२६ मानसर-वासी हंस—मानसर—मानसरोवर। घनसार—कपूर। घरीक—घड़ी एक। सारद—शारदा, सरस्वती। आभ—प्रकाश। सुरसरी—गंगा। पुंडरीक—श्वेत कमल। छक्यो—मस्त, थकित। छीरधि—क्षीर सागर, दूध का समुद्र। कयलास-ईस—कैलास के स्वामी शिवजी। रजनीस—चन्द्रमा। सरीक—शरीक, हिस्सेदार, बराबर।

मानसरोवर मे रहने वाला, हंस-समूह (उज्ज्वलता मे शिवाजी के यश की) समता नहीं कर सकता, चन्दन मे घिसा हुआ कपूर भी घड़ी भर ही (शिवाजी के यश के सम्मुख) ठहर सकता है। नारद और सरस्वती की हँसी मे भी वह आभा कहा और शरद् ऋतु की सुरसरी (गगाजी) मे (शरद् ऋतु मे नदियाँ निर्मल होती हैं) पैदा हुआ श्वेत कमल भी शुभ्रता में उसके बराबर नहीं है। भूषण कवि कहते हैं कि क्षीर समुद्र की थाह लेने में थके हुए (अर्थात् दूध के सागर मे बहुत नहाये हुए) और उसकी (सफेद) फेन को लिपटाए हुए ऐरावत (इन्द्र का सफेद हाथी) को भी (शिवाजी के यश के समान) कौन कह सकता है ? (शुभ्र) कैलास का स्वामी महादेव, और उस महादेव के सिर पर रहने वाला वह निशानाथ चन्द्रमा भी पृथ्वीपति शिवाजी के यश की बराबरी नहीं कर सकता।

दुगध-नदीस—क्षीर-सागर । सुरसरिता—गंगाजी । विधि—ब्रह्मा । रजनीस—चन्द्रमा । करनी—काम । हिराने—खो गये । गिरीस—महादेव । गिरिजा—पार्वती ।

भूषण कहते हैं कि हे शाहजी के पुत्र शिवाजी, तुमने यह जो (त्रिभुवन को अपने श्वेत यश से छा देने का अद्भुत) काम किया है, उससे तैंतीस करोड देवताओं को भी आश्चर्य होता है । तुम्हारी श्वेतकीर्ति मे (सब श्वेत वस्तुओं के) खो जाने से—मिल जाने से, इन्द्र अपने गजराज ऐरावत को ढूँढता फिरता है और इन्द्र का छोटा भाई विष्णु क्षीर-सागर की तलाश कर रहा है, हंस गंगा को खोज रहे हैं, तथा ब्रह्मा (अपने वाहन) हंस को और चकोर चाँद को ढूँढ रहा है, ऐसे ही महादेव अपने पहाड (कैलास) को ढूँढ रहे हैं और पार्वती महादेवजी की खोज कर रही हैं, परन्तु खोजते हुए भी उनको नहीं पाते ।

४४. सिव सरजा तव सुजस में—छवि—शोभा । तूल—तुल्य, समान । मूल पुस्तक में 'तप' के स्थान पर 'तव' पाठ चाहिए ।

हे सरजा राजा शिवाजी ! तुम्हारे उज्ज्वल यश मे समान श्वेत कान्ति वाले (अर्थात् सफेद ही रंग वाले) हंस और चमेली के पुष्प बिलकुल मिल गये हैं, परन्तु वे केवल बोली से (हंस) और सुगंधि से (चमेली के फूल) जाने जाते हैं ।

४५ आनि मिल्यो अरि यों गह्यो—चखन—चक्षु, नेत्र । चाव—आनन्द ।

(जब शिवाजी औरंगज़ेब के दरबार मे गये थे, उस समय का ज़िक्र है) 'शत्रु आकर मिला' यह देखकर, औरंगजेब के नेत्रों में प्रसन्नता झलकने लगी । परन्तु शाहजी के पुत्र शिवाजी ने (उसकी इस प्रसन्नता को जान) अपनी मूछों पर ताव दिया (अर्थात

अँदेस—अंदेशा, संदेह। दउवा—बडवानल, समुद्र की आग। जित-दार—जीतने वाला।

दिन का अनध्याय सा हो गया है, अर्थात् दिन छिप सा गया है, सब दिशाओं मे संध्या सी होगई है, आकाश मे लगकर चारों ओर धूल छा रही है। चील, गिद्ध और कौवों का समूह भयकर शब्द कर रहा है, स्थान स्थान पर चारो ओर अन्धकार छा रहा है। (यह सब देखकर) भूषण कहते हैं कि देश देश के शंकित (डरे हुए) राजा लोग अपना अभिमान गँवा कर आपस मे कहते हैं कि वडवानल से भी (तेज मे) अधिक और चारो दिशाओं को जीतने वाली (जगद्विजयी) शिवाजी की सेना इधर आती मालूम पडती है।

५० वानर बरार बाघ—बरार—बरिआर, प्रबल। बेहर—भयंकर। विग—भेड़िया। बगरे—फैले। बराह—सूअर। जोम—समूह, झुंड। भालुक—भालू, रीछ। लीलगऊ—नीलगाय। लोम—लोमड़ी। ऐंडायल—अड़ियल, मतवाले। गररात—गर्जना करते हैं। गेहन—घरों। गोहन—गोह, छिपकली की जाति का जंतु। गोम—स्थान, अड्डा या गोमायु, गीदड़। खाक—नष्ट। खैरन—खेड़ों में, गाँवो में। खबीस—दुष्ट आत्मा, भूत प्रेत, बोलचाल में बूढ़े और कंजूस आदमी को भी खबीस कहते हैं। खोम—कौम, समूह।

बली एव भयकर बंदर, व्याघ्र, विलाव, भेडिये और सूअर आदि जानवरों के झुंड के झुंड (चारों ओर) फैल गये है। भूषण कवि कहते हैं कि बड़े भयकर भालू (रीछ), नीलगाय और लोमडियाँ शत्रुओं के घरों के भीतर भर गये हैं (अर्थात् उन्होंने वहाँ उजाड़ समझ अपना निवासस्थान बना लिया है)। मतवाले हाथी और गैंडों के झुंड ज़ोर ज़ोर से गर्जना करते हैं और अभिमानी गोहों ने घरो

सेना। दिल्गीर—(फारसी) दुखी, दीन। तनिया—चोली, कंचुकी। तिलक—मुसलमानी ढीला और पिंडली तक लंबा कुर्ता। सुथनियाँ—पायजामा। पगनियाँ—जूतियाँ। घामे—धूप में। घुमराती—घूमतीं। बहियाँ—बाँहें, दूर हुई, अलग हुई। छहियाँ—छाँह। छबीली—छवि वाली, सुंदरी। ताकि रहियाँ—ढूँढ रही हैं। रूखन—रूखों, (पेड़ों)की। बालियाँ—बालों की लटें। बिथुर—बिखरी हुई। आलियाँ—अलियाँ, भ्रमरियाँ। नलिन—कमल। लालियाँ—लालिमा।

भूषण कवि कहते हैं कि युद्ध के लिए शिवाजी की सेना के घोड़े और हाथी सजते ही दीन दिल्ली-निवासियों की दशा अति दुःखमय हो जाती है। घबड़ाहट के कारण मुगलों की स्त्रियाँ चोली, कुर्ते, पायजामे और जूतियाँ पहिने ही बिना सुख-शय्या त्याग कर कड़ी घाम (धूप) में भागती फिरती हैं। जो सुन्दर युवतियाँ पतियों की बाहों से कभी अलग न हुई थीं वे भी अब पेड़ों की छाया ढूँढ रही हैं। उनके मुखों पर बालों की लटें ऐसी बिथुरी (तितर-बितर) पड़ी हुई हैं जैसे कि कमलों पर भौंरियाँ मँडरा रही हों, और भय के कारण उनके मुखों की लाली मलिन हो गई है (अर्थात् भय से और जंगल में इधर-उधर फिरने से उनके मुखों का रंग फीका पड़ गया है)।

५३. ऊँचे घोर मन्दर के अंदर—घोर—बड़ा। मंदर—मन्दिर, महल। मंदर—पर्वत। कन्द मूल—ऐसे पदार्थ जिन में कन्द (मीठा) पड़ा हो, अर्थात् बढ़िया मिठाई। कन्दमूल—कन्द और जड़—गाजर, मूली आदि। तीन बेर—तीन बार। बीन बेर—बेर बटोर कर। भूषन—जेवरों से। भूखन—भूख से। बिजन—व्यजन, पंखा। बिजन—जन रहित अर्थात् जंगल। नगन जड़ातीं—गहनों में नग जड़वाती थीं। नगन जड़ाती—नग्न होने के कारण जाड़े में मरती हैं।

भूषण कवि कहते हैं कि हे वीरवर शिवाजी! मुगल-घराने की जो स्त्रियाँ बड़े-बड़े ऊँचे महलों के भीतर रहती थीं, वे अब आपके भय के कारण ऊँचे ऊँचे भयानक पर्वतों में छिपी रहती हैं। जो पहले बढ़िया मिठाई खाती थी वे अब कंद और मूल (अर्थात् शकरकंद और गाजर मूली आदि जड़े) खाती हैं। जो तीन बार भोजन करने वाली थी वे अब बेर बटोर कर खाती हैं। (नाज़ुक होने के कारण) जिनके अंग गहनों के भार से शिथिल होगये थे अब वे भूख के मारे दुर्बल हो रही हैं। जो सदा पंखा झलवाती थीं वे अब निर्जन जंगल में मारी मारी फिरती हैं और जो रत्नजड़ित गहने पहनती थीं वे अब बिना वस्त्र के नग्न जाड़े में मरती हैं।

५८ उतरि पलंग ते न—सगबग—भयभीत या शीघ्रतापूर्वक। सुहाती—अच्छी लगती। अनखाती—नाराज होती है, झुँझलाती है। बिलखाती—रोती, व्याकुल होती। जोन्ह—चाँदनी। घाती—आत्मघात।

भूषण कवि कहते हैं कि हे शाहजी के सुपुत्र बलवान महाराज शिवाजी! आपके प्रताप को सुनकर शत्रु-स्त्रियाँ व्याकुल हो रुदन करती हैं। जिन सुकुमार स्त्रियों ने कभी पलँग से उतर कर पृथ्वी पर पैर नहीं रक्खा था, अब वे भयभीत हुई हुई रात दिन भागी चली जा रही हैं। वे अत्यन्त व्याकुल हुई हुई हैं और बिलखा रही हैं तथा उन्हें गात (शरीर) ढकने वस्त्र का ध्यान नहीं है। किसी की बात उन्हें अच्छी नहीं लगती उलटा कुछ बोलने पर झुँझला उठती हैं। जो चाँदनी में भी न जाती थीं वे ही अब धूप में भागी जाती हैं और कोई आत्मघात करती हैं, तो कोई छाती पीट पीट कर रोती हैं।

५५ सबन के ऊपर ही—आगे—खड़ा। रहिबे—रहने। पंच-हजारिन—पाँच हजारी। निगरे—समीप। गैर मिसिल—अनुचित। गुसैल—क्रोधी। उर—हृदय। सियरे—शीतल, नम्र। बलकन लागो—उबलने लगे, क्रोधित होने लगे, बिगड़ उठे। उड़ाय गये जियरे—जी उड़ गये, प्राण सूख गये, बहुत घबरा गये। तमक—क्रोध। निरखि—देख कर। पियरे—पीले।

भूषण कवि कहते हैं कि जो शिवाजी सबसे उच्च स्थान पाने के योग्य थे उन्हें औरंगजेब ने अपने पाँच हजारी जैसे छोटे छोटे सरदारों के निकट खड़ा कर दिया। इस अनुचित व्यवहार को देख कर गुस्सावर शिवाजी ने मन में अत्यन्त क्रोधित हो औरङ्गजेब को न सलाम किया, न शीतल वचन ही कहे, उलटे बिगड़ उठे। जिससे समस्त पातसाही (शाही दरबार) के प्राण सूख गये (अर्थात् वे अत्यन्त भयभीत हो गये) शिवाजी का तमक [क्रोध] से लाल मुख देख कर औरंगजेब का चेहरा स्याह तथा सिपाहियों का पाला पड़ गया।

५६. राना भो चमेली—भो—हुआ। भये—हुए। ठौर-ठौर—स्थान-स्थान पर। सिगरे—सब। कुन्द—एक फूल। मकरंद—फूलों का रस। भृग—भौंरा। भ्रमत—घूमता है। मिलिंद—भौंरा। अलि—भौंरा। चपा—पुष्प विशेष, इस पर भौंरा नहीं बैठता।

उदयपुर के राणा चमेली के समान, राजा लोग बेला के समान और सब अमीर कुंद फूल के समान हैं। वह (औरंगजेब) इस फूल-समाज को देखकर भौंरे के समान मंडराता है और स्थान स्थान पर से रस लेता है (कर लेता है अथवा सेवा कराता है) उसका नित्य का यह काम है। किंतु हे वीरवर शिवाजी! तुमने ही समस्त देशों की लज्जा दक्षिण देश में एकत्र कर रखी है

जैसे भौंरा चंपा के फूल को छोड़ कर दूर भाग जाता है वैसे ही वह तुझसे रस (कर) लिये बिना ही दूर भाग गया, सो मालूम होता है कि यदि औरंगजेब भौंरा है तो शिवाजी चंपा का फूल है।

५७ उतै पातसाहजू के—उतै—उधर। ठट्ट —समूह। घन—बादल। कारे—काले। इतै—इधर। सिंहराज—सिंह के समान वीर योद्धा। विदारे—फाड़ दिये। कुम्भ—हाथी का मस्तक। करिन के—हाथियों के। चिकरत—चिंघाड़ते हैं। इखलासखाँ—सन् १६७२ ई० में सलहेरि के युद्ध में इखलासखाँ मुगलों की ओर से सेनापति बनाया गया था। बिहद—बृहद्, बड़ी। झारि डारे हैं—दूर कर दिया है।

उधर बादशाह औरंगजेब के मतवाले हाथियों के झुंड-के-झुंड ऐसे चले मानों काले-काले बादल इकट्ठे होकर उमड़ रहे हों, तो इधर से महाराज शिवाजी के सिंह के समान वीर योद्धाओं ने छूट कर हाथियों के मस्तकों को विदीर्ण कर डाला जिससे वे बड़े ज़ोर-जोर से चिंघाड़ने लगे। शेख, सैयद, मुगल और पठानों की सम्मिलित फौजों को स्वयं मीर (सरदार) इखलासखाँ भी न सँभाल सका। अपनी महान तलवार के बल से महाराज शिवाजी ने हिन्दुओं की मर्यादा की रक्षा की और कई बार दिल्ली का घमंड चूर कर दिया।

५८. छूटत कमान अरु गोली—कमान—तोप। मुरचा—वह स्थान जिस की आड़ में बैठकर योद्धा गोली एवं तीर चलाते हैं। दावा बाँधि—हिम्मत बाँध कर। जोट—जोड़ा, समूह। किम्मति—प्रतिष्ठा। भट—योद्धा। झोट—समूह। कोट—किला।

जब मुसलमानों की तोप, गोलियाँ और बाणों के चलने पर मोर्चों की आड़ में भी बचना कठिन हो रहा था उसी समय महाराज शिवाजी ने अपने साथियों को ललकार कर हिम्मत बाँध कर

ऐसा प्रबल आक्रमण किया कि उससे शत्रु-वीरों के मध्य बड़ा हुल्लड़ मच गया। भूषण कवि कहते हैं कि हे महाराज शिवाजी! मैं आपके साहस का कहाँ तक वर्णन करूँ? आपके वीर-गणों में आपकी इतनी प्रतिष्ठा है कि वे उमंग से मूँछों पर ताव देते हुए कंगूरों पर चढ़ कर शत्रुओं को जख्मी करते हुए किले में कूद पड़े।

५६ कोप करि चढ्यो—धौंसा—नगारा। धुकार—गड़गड़ाहट। दरक्कन—विदारित होते हैं, फटते हैं। कुंभि—हाथी। श्रोनित—शोणित खून। जिनिनाल—एक प्रकार की बन्दूक। करकत हैं—कड़कती हैं। जोम—पराक्रम, उत्साह। दाटि—डाँट कर। चपेटे—चोट खाये हुए।

महाराज शिवाजी ने क्रुद्ध होकर चढ़ाई की है, उनके धौंसे की गड़गड़ाहट से पहाड़ फट रहे हैं। कितने ही मदोन्मत्त हाथी गिर गये हैं और उनसे रुधिर के फव्वारे छूट रहे हैं। लाखों बन्दूकें कड़कड़ शब्द करती हुई कड़क रही हैं (छूट रही हैं)। उन्होंने युद्ध में पराक्रम-पूर्वक कितने ही दुरात्मानियों को काट काटकर मार डाला और कितनों ही को डाँट कर दबा रक्खा है, जिससे उनकी छाती अब तक धड़क रही है। युद्धस्थल में चोट खाये हुए पठान युवा पड़े हुए हैं और रक्त में लिपटे हुए मुगल पड़े तड़फड़ा रहे हैं।

६० दिल्ली-दल दलै सलहेरि—दलै—दलित किये, नष्ट किये। दमक्त हैं—दमकते हैं। किलकना—खुशी की आवाज़ करना। दरार—कलेजा। अलल—शोर। तमका हैं—तैश में आते हैं, उत्तेजित होते हैं। बखतर—कवच, लोहे की झूले। ठमका हैं—ठनठन शब्द करते हैं। गति—चाल (गत)। थंभ—निगम। ताइ गतिबंध पर—पैतरे के साथ। कबंध—धड़। धमका हैं— धम-धम शब्द करते हैं।

जैसे भौंरा चंपा के फूल को छोड़ कर दूर भाग जाता है वैसे ही वह तुमसे रस (कर) लिये बिना ही दूर भाग गया, सो मालूम होता है कि यदि औरंगजेब भौंरा है तो शिवाजी चंपा का फूल है।

५७. उतै पातसाहजू के—उतै—उधर। ठट—समूह। वन—बादल। कारे—काले। इतै—इधर। सिंहराज—सिंह के समान वीर योद्धा। बिदारे—फाड दिये। कुम्भ—हाथी का मस्तक। करिन के—हाथियों के। चिक्करत—चिंघाड़ते हैं। इखलासखाँ—सन् १६७२ ई० में सल्हेरि के युद्ध में इखलासखाँ मुगलों की ओर से सेनापति बनाया गया था। बिहद—बृहद्, बड़ी। झारि डारे हैं—दूर कर दिया है।

उधर बादशाह औरंगजेब के मतवाले हाथियों के झुंड-के-झुंड ऐसे चले मानों काले-काले बादल इकट्ठे होकर उमड़ रहे हों, तो इधर से महाराज शिवाजी के सिंह के समान वीर योद्धाओं ने छूट कर हाथियों के मस्तकों को विदीर्ण कर डाला जिससे वे बड़े जोर-जोर से चिंघाड़ने लगे। शेख, सैयद मुगल और पठानों की सम्मिलित फौजों का स्वयं मीर (सरदार) इखलासखाँ भी न सँभाल सका। अपनी महान तलवार के बल से महाराज शिवाजी ने हिन्दुओं की मर्यादा की रक्षा की और कई बार दिल्ली का घमंड चूर कर दिया।

५८. छूटत कमान अरु गोली—कमान—तोप। मुरचा—वह स्थान जिस की आड में बैठकर योद्धा गोले एवं तीर चलाते हैं। दावा बाँधि—हिम्मत बाँध कर। जोट—जोड़ा, समूह। हिम्मति—प्रतिष्ठा। भट—योद्धा। झोट—समूह। कोट—किला।

जब मुसलमानों की तोप, गोलियां और बाणों के चलने पर मोरचों की आड़ में भी बचना कठिन हो रहा था उसी समय महाराज शिवाजी ने अपने साथियों को ललकार कर हिम्मत बाँध कर

ऐसा प्रबल आक्रमण किया कि उनसे शत्रु-वीरों के मध्य बड़ा हुल्लड़ मच गया। भूषण कवि कहते हैं कि हे महाराज शिवाजी! मैं आपके साहस का कहाँ तक वर्णन करूँ? आपके वीर-गणों में आपकी इतनी प्रतिष्ठा है कि वे उमंग से मूँछों पर ताव देते हुए कँगूरों पर चढ़ कर शत्रुओं को जख्मी करते हुए किले में कूद पड़े।

५९ कोप करि चढ्यो—धौंसा—नगाड़ा। धुकार—गड़गड़ाहट। दरकत—विदारित होते हैं, फटते हैं। कुंभि—हाथी। श्रोनित—शोणित खून। जिनिनाल—एक प्रकार की बन्दूक। करकत हैं—कड़कती हैं। जोम—पराक्रम, उत्साह। डाटि—डाँट कर। चपेटे—चोट खाये हुए।

महाराज शिवाजी ने क्रुद्ध होकर चढ़ाई की है, उनके धौंसे की गड़गड़ाहट से पहाड़ फट रहे हैं। कितने ही मदोन्मत्त हाथी गिर गये हैं और उनसे रुधिर के फव्वारे छूट रहे हैं। लाखों बन्दूकें कड़कड़ शब्द करती हुई कड़क रही हैं (छूट रही हैं)। उन्होंने युद्ध में पराक्रम-पूर्वक कितने ही खुरासानियों को काट काटकर मार डाला और कितनों ही को डाँट कर दबा रक्खा है, जिससे उनकी छाती अब तक धड़क रही है। युद्धस्थल में चोट खाये हुए पठान युवा पड़े हुए हैं और खून में लिपटे हुए मुगल पड़े तड़फड़ा रहे हैं।

६० दिल्ली-दल दलै सलहेरि—दलै—दलित किये, नष्ट किये। दमकत हैं—चमकते हैं। किलकना—खुशी की आवाज करना। कलेजा—कलेजा। अरर—शोर। तमकत हैं—तैश में आते हैं, उत्साहित होते हैं। बखतर—कवच, लोहे की झूलें। झमकत हैं—झमझम शब्द करते हैं। गति—चाल (गत)। बंध—नियम। ताल गतिबंध पर—पैंतरे के साथ। कबंध—धड़। धमकत हैं—धम-धम शब्द करते हैं।

मलहेरि के युद्ध में शिवाजी ने दिल्ली की सेना काट डाली। भूषण कवि कहते हैं कि इसका तमाशा देखने के लिये देवता आ विराजे हैं और (उनके दिव्य शरीर) चमक रहे हैं। कालिका कलेजे का कलेवा करके किलकारी मारती है। भूत-प्रेत शोर करते हुए उत्साहित हो रहे हैं। युद्ध मे कहीं रुड-मुंड पड़े हैं कहीं खून के कुंड भरे है, कहीं हाथियो के झुडों की झूलें झम-झमा रही हैं। (सिर कट जाने पर) धड कधे पर तलवार धारण किये हुए पैंतरे के साथ पृथ्वी पर दौड कर धम धम शब्द करते हैं।

६१ साहि के सपूत—रनसिंह—रण में शेर अर्थात् वीरकेसरी। वाही—चलाई। समसेर—शमशेर, तलवार। कढ़ि कै—काढि कै, निकाल कर। कटक—सेना। कटकिन—सेना वाले, अर्थात् राजा या बादशाह। भू पैं—पृथ्वी पर। सेस—शेषनाग। पढि कै—पढकर। पारावार—समुद्र। ताहि को—उसका। पावत—पाता। सोनित—रुधिर। यहि भाँति—इस भाँति। नादिया—शिवाजी के बैल का नाम। गहि—पकडकर। पैरि कै—पैर कर, तैरकर। कपाली—शंकर। पहार—पहाड। चढि कै—चढ़कर।

शाहजी के सुपुत्र वीर-केसरी शिवाजी ने (युद्ध मे) शत्रुओं के सिर पर ऐसी तलवार चलाई और उस विकट भूमि मे राजाओं की इतनी फौजो को काट डाला कि हमसे शेषनाग के समान पढ कर भी कहा नहीं जा सकता (उसका वर्णन नहीं किया जा सकता)। खून का समुद्र ऐसा बढ रहा है कि कोई उस समुद्र का पार नहीं पा सकता। स्वयं शंकरजी अपने नांदी बैल की दुम पकडकर तैरकर डूबने से बचे हैं और काली मास के पहाड पर चढ़ कर (खून समुद्र मे डूबने से) बची है।

६२ दुग्ग पर दुग्ग जीते—दुग्ग—दुर्ग, किला। उग्ग—(उग्र) शिवजी। उग्ग—उद्गम, ऊँचा, उन्नत अर्थात् पर्वत। करनाटी—करनाटक के, करनाटक पर शिवाजी ने सन् १६७६–७८ ई० में आक्रमण किया था। सुभट—वीर। पनारेवारे—परनाले के। उद्भट—प्रचंड। तारे लगे फिरन—आँखों के तारे (पुतलियाँ) फिरने लगे, होश हवास गुम होने लगे। सितारे गढ धर के—सितारा दुर्ग के स्वामी के। उर—हृदय। दाड़िम—अनार।

भूपण कवि कहते हैं कि वीर शिवाजी ने किले पर किले विजय कर लिये। ऐसा घोर युद्ध किया कि शिवजी (प्रसन्न हो) कैलास पर्वत पर नाचने लगे और अनेकों रुड-मुड फड़कने लगे। जय विजय के बड़े बड़े नगाड़े बजाये गये तब करनाटक देश के सारे राजा भय के कारण सिंहलद्वीप (लंका) की ओर चुपचाप भागने लगे। परनाले वाले बड़े उद्भट (प्रचंड) वीर योद्धाओं का मारा जाना सुनकर और सितारा दुर्ग के मालिक की आँखों की पुतलियाँ फिरने लगीं—अर्थात् उसके होश-हवास गुम हो गये, तथा बीजापुर गोलकुंडा के वीरों एवं दिल्ली के अमीरों के हृदय अनार की भाँति फटने लगे।

६३ गढ़न गॅजाय गढधरन—गँजाय—गंजन कर, नष्ट कर, तोड़ फोड़ कर। सजाय करि—सजा देकर, दंड देकर। धरम दुवार दे—धर्म द्वार देकर, अर्थात् धर्म के नाम पर। बनचारी—वन में फिरने वाले कोल और भील। हजारी—हजारी पद पाने वाले, पंच हजारी, छ हजारी आदि। बजारी—तेली, तमोली आदि। महतो—गाँव के मुखिया, नाजिम के समान पदाधिकारी। डाँडि लीन्हें—दंड लिया, जुर्माना लिया।

भूपण कवि कहते हैं कि साहजी के वीर पुत्र और सिंह के समान साहसी सुपुत्र महाराज शिवाजी ने शत्रुओं के किलों

तोड़कर उनके किलेदारों को दंड दिया और कितनों ही को धर्म के नाम पर भिक्षुओं की भाँति चला जाने दिया। कितने ही गढ़ स्वामियों को वन मे फिरने वाले कोल और भीलों के समान (दीन) बना डाला और कितनों को जेलखाने मे डाल दिया। कितने शेख, सैयद और हजारी पद धारण करने वालो को बाजारू (मामूली) प्रजा की तरह पकड़ लिया। मुग़ल (शाही खानदान के मुसलमान) महतो (गाँव के मुखियो) की तरह, बड़े बड़े महाराज बनियों की भाँति और पठान पटवारियों के समान पकड़ लिये और उनसे जुर्माना ले लिया।

६४ दारा की न दौर यह—दौर—दौड़, धावा। रारि—लड़ाई। खजुहा—जिला फ़तेहपुर में बिंदी के निकट खजुआ या खजुहा एक गाँव है। यहाँ औरंगजेब ने शाहशुजा को हराया था। मीर सहबाल—शाहबाजखाँ नामक सरदार, लाल कवि ने इसका नाम अपने छत्रप्रकाश में लिखा है, परन्तु इसका इतिहास में नाम नहीं मिलता। देहरा—देवालय, मन्दिर। देव को देहरा—ओरछा के राजा वीरसिंहदेव ने मथुरा में केशवराय का देहरा (मन्दिर) बनवाया था, इसे औरंगजेब ने तुड़वा दिया था। गाड़े—दृढ़, दुर्गम। हासिल—खिराज। उगाहत—वसूल करता है। साल को—वर्ष का, सालाना।

(औरंगजेब से कोई सरदार कहता है) यह दारा के ऊपर धावा नहीं है और न यह खजुआ की लड़ाई है। यह सरदार शाहबाजखाँ को कैद कर लेना भी नहीं है और न यह विश्वनाथ जी का मन्दिर है, न गोकुल में अड्डा जमाना है, न वीरसिंहदेव का बनवाया केशवराय का मन्दिर है और न श्री गोपाल जी का मन्दिर है (जिन्हें आप गिरा देंगे) यह तो महाराज शिवाजी बड़े बड़े दृढ़ किलों को जीतता, शत्रुओं को कत्ल करता और स्थान

[illegible] से भालाना [illegible] जा रहा है। हे दिल्लीश्वर ! [illegible] तुम्हारी [illegible] इसे सम्हालते क्यों नहीं ? इसे नागराज रूप शिवाजी का [illegible] जा रहा है (अर्थात् शिवाजी ने अब दिल्ली पर धावा किया है इसे सम्हालना कठिन है, अगर तुम्हें इसे बचाना है, तो बचाओ)।

६५. जिन फन फुत्कार—फुफकार—जहुआ। कठिन—कठोर। बिदलित्यो—विदलित हो गया, कुचला गया। चिकारि—चिंघाड़ कर। पयपान—दुग्ध पान। लवलीन—डूब जाना, विलीन हो जाना। खग—खड्ग, तलवार। खगराज—गरुड़। भुजग—साँप।

जिनके फन की फुफकार से बड़े-बड़े पहाड़ उड़ जाते थे, जिस के भार से (पृथ्वी को धारण करने वाला) कठोर कच्छप मानो कमल की भांति विदलित हो गया था (टुकड़े टुकड़े हो गया था), जिसके विष-समूह से ज्वालामुखी पहाड़ विलीन हो जाते थे जिसके विष की लपटों से दिग्गज चिंघाड़ कर मद उगलते थे, जिसने समस्त संसार को दुग्ध-पान की भाँति पी लिया था, और जिसके विष से समुद्र का पानी खलबला गया था उसी समस्त मुगल-सेना रूप महाभयङ्कर सर्प को, हे महाराज शिवाजी ! आप का खड्ग रूपी खगराज (गरुड़) सहज ही में निगल गया। (अर्थात् जिन मुसलमानों के आतंक से सारा संसार कांपता था, उन्हें शिवाजी ने सहज ही तलवार के ज़ोर से हरा दिया।

६६. मारि करि पातसाही—खाकसाही—(फा०) खाक सियाह, भस्मीभूत, मटियामेट। छिति—पृथ्वी। हद—सीमा। खिसि गईं—खिसक गईं, गिर गईं, नष्ट हो गईं। फिसि गईं—फिस्स हो गईं, नष्ट हो गईं। सूरताई—शूरता। हिसि गईं—(फा० हिस्तन—टूटना) गईं, नष्ट हो   दमाकदार—दमकदार, तड़क भड़क वाले. सजे

बराती । दमामे—नगाड़े । धौंसा— बड़ा नगाड़ा । घहरात—गम्भीर शब्द करते हैं ।

जिन्होंने बादशाहत को नष्ट कर उसे खाक में मिला दिया, और सब सरदारों की पृथ्वी की सीमाओं को बलपूर्वक वापिस ले लिया, जिनके सम्मुख हजारों लोगों की गर्वी, वीरता और हिम्मत सब हवा हो गई (नष्ट हो गई) उन्हीं (शिवा जी) के लाखों दमामे और नगाड़े गर्जते हुए मेघ की तरह (सेना के) आगे इस तरह घहरा रहे हैं जैसे किसी बड़े आदमी की बरात हो। दक्षिणी (मराठे) लोग सजे बजे बराती हैं शिवाजी उनके दूल्हे हैं, और दिल्ली सितारा शहर की दुलहिन है ।

६७ तेरी स्वारी मांझ महा—पंजर—पसली । मचकि—धचक गये, दब गये, टूट गये । विडारे—विदीर्ण किये, नष्ट किये । किरवानन ते—कृपाणों से। अंबिका—अम्बा, काली। अचकि—खा गई। नाँदिया—महादेव का बैल । भार तें—बोझ से । भचकि—लँगड़े हो गये, मोच आ गई । कचकि—कुचल गये ।

हे शक्तिशाली महाराज शिवाजी ! (विजयोत्सव के समय) आपकी सवारी के नीचे आकर कितने गढ़पतियों के पंजर टूट गये। कितनों ही को तुम्हारे वीरों ने तलवार से मार-मार कर नष्ट कर दिया, कितनों ही को गिद्ध खा गये और कितनों को काली खा गई । भूषण कवि कहते हैं कि शिवाजी ने इतने रुंड-मुंडों की माला पहिनी कि उनके बोझ से नाँदिया के चारों पैरों में मोच आ गई। भूमंडल के भयंकर पहाड़ भी (उस सवारी के नीचे आकर) टूट गये तथा शेषनाग के फन एवं कच्छप तक कुचले गये ।

६८. गरुड़ को दावा—को—का । दावा—आतंक, आधिपत्य, अधिकार । नाग—सर्प । नागजूह—हाथियों का झुण्ड । पुरहूत—इन्द्र ।

हारन—पहाड़ों। नाग—समूह। सारग्ड—सम्पूर्ण। नवखण्ड-महिमण्डल—पृथ्वी के नवों खण्ड [भरत, इलावृत्त, किंपुरुष, भद्र, हनुमान, हरि, हिरण्य, राम और कुश]। किरन समाज—किरण-समूह।

भूषण कवि कहते हैं कि जैसे गरुड़ का आतंक सदा नाग (सर्पों) के समूह पर, महाबली सिंह का हाथियों के झुंड पर, इन्द्र का पर्वतों पर, बाज का पक्षियों के झुंड पर, और सूर्य की किरणों का अधिकार नवखण्ड और सारी पृथिवी के अंधकार के समूह पर होता है, उसी प्रकार पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण तक जहाँ-जहाँ बादशाही है वहाँ-वहाँ महाराज शिवाजी का अधिकार है।

६९. वेद राखे बिदित—विदित—प्रकट, प्रसिद्ध। सारयुत—तत्व से युक्त। रसना—जिह्वा। रोटी—जीविका। गर—गला। मीड़ना—मसलना। तेगबल—तलवार के बल से।

महाराज शिवाजी ने अपनी तलवार के बल से वेदों को प्रकट रखा (लुप्त नहीं होने दिया), पुराणों को तत्व से युक्त रखा, (नष्ट न होने दिया) राम नाम को सुन्दर जिह्वा पर रखा। हिन्दुओं की चोटी और सिपाहियों की जीविका रक्खा। कंधों पर जनेऊ और गले में माला की रक्षा की। मुग़लों का मर्दन कर, बादशाहों को मरोड़ कर, और शत्रुओं को पीस कर अपने हाथों में मनो-वाञ्छित वरदान देने का अधिकार रक्खा। हिन्दू राजाओं की राज्य की सीमा रखी, मन्दिरों में देवताओं की रक्षा की और घर में अपना धर्म सुरक्षित रखा।

७० भुज भुजगेस की वैसंगिनी—भुजगेस—शेषनाग। वै संगिनी—(वयस्-संगिनी) आयु भर साथ देने वाली। भुजंगिनी—नागिन। खेदि खेदि—खदेड़ खदेड़ कर। दीह—दीर्घ, बड़ा। बलतर—

कवच। पाखरन—हाथी घोड़ों पर डालने की लोहे की झूलें। रैयाराव—छत्रसाल के पिता चंपतराय का खिताब। परछीने—पक्ष छिन्न, परकटे। पर—शत्रु। छीने—क्षीण, कमजोर। बर—बल।

हे रैयाराव चंपतराय के सुपुत्र महाराज छत्रसाल! आपकी बरछी आपके बाहुरूपी शेषनाग की सदा साथ रहने वाली नागिन है। यह (बरछी) बड़े भयंकर शत्रुदल को खदेड़ खदेड़ कर डसती है (नष्ट करती है) और कवच तथा लोहे की झूलों में ऐसे घुस जाती है जैसे मछली पानी की धारा को तैर कर पार कर जाती है (इतनी तेज है कि लोहे को भी सरलता से काट देती है)। भूषण कवि कहते हैं कि आपके बल का वर्णन कौन कर सकता है, (आपकी बरछी द्वारा कटने से, शत्रु की सेना के वीर परकटे पक्षी की तरह निर्बल होकर पड़े हैं। हे वीर! आपकी बरछी ने दुष्टों के बल छीन लिये हैं।

७१ रैयाराव चंपति को—चढ़ो—चढ़ाई की। समसेर—तलवार। जोम—उत्साह। जमकें—चमकें। गरदें—गरद, धूल। सेलैं—भाले। घन—हथौड़ा। धमकें—चोट। बेहर—बीहड़, भयानक, डरावना। नगारन—घाटियाँ। अगारन—घरों। पगारन—चहार-दीवारी। नगारन की धमकें—नगाड़ों की गड़गड़ाहट।

रैयाराव चंपतराय के पुत्र वीर छत्रसाल जब चढ़ाई करते हैं, तो तलवारें उत्साह से चमकने लगती हैं। धूल उड़कर भादों की घटा के समान आकाश में घिर जाती है (मूल पुस्तक में 'गरडैं' के स्थान पर 'गरदैं' पाठ चाहिए) और (वीरों के) भाले तथा तलवारें जो फिरती हैं वे बिजली के समान चमकती हैं। छत्रसाल के नगाड़ों की गड़गड़ाहट दुर्गम घाटियों और शत्रुओं के महलों की चहारदीवारी

जो लौट जाती है, और उनको [illegible] ग्लानि, उत्साह और गढ़-राजाओं के हृदय में सौतों की सी चोट लगती है।

७२ हैवर हट्ट साजि गैवर—हैवर—हयवर, श्रेष्ठ घोड़े। हट्ट—हट्टे, मोटे ताजे। गैवर—गजवर, श्रेष्ठ हाथी। गरट्ठ—गरिष्ठ, डील डौल वाले, मोटे। ठट्ट—समूह, झुण्ड। रोप्यो रन ख्याल—लड़ाई का विचार किया। रंजक—वह बारूद जो तोप या बंदूक के छिद्र पर आग लगाने के लिए रक्खा जाता है। दगनि—दगना, जलना। अगनि रिसाने की—क्रोधाग्नि। सैद अफगन—सैयद अफगन, यह दिल्ली का एक सरदार था जो छत्रसाल से लड़ने को भेजा गया था। छत्रसाल ने इसे पराजित किया था। सगर सुतन—राजा सगर रघुवंशी थे। इनके साठ हजार पुत्र थे। एक बार राजा सगर ने अश्वमेध-यज्ञ किया। यज्ञ के समय घोड़ा छोड़ा गया। उस घोड़े की रक्षा के लिए सगर के ६०००० पुत्र साथ चले। इन्द्र ने अपना इन्द्रासन जाने के डर से घोड़ा कपिल मुनि के आश्रम में बाँध दिया। सगर के पुत्र जब वहाँ पहुँचे तो घोड़े को बँधा देखकर उन्होंने मुनि को गालियाँ दीं और उन्हें सताया। तंग होकर ऋषि ने उन्हें शाप दे दिया, कि तुम सब नष्ट हो जाओ। तराप—तोप की गर्जना।

उत्तम मोटे ताजे घोड़े सजाकर अच्छे डील डौल वाले हाथियों के समान हृष्ट-पुष्ट मुसलमानों की पैदल सेना के झुंड इकट्ठे हो गये। भूषण कहते हैं कि उस समय चंपतराय के पुत्र महाराज छत्रसाल ने हिंदुओं का रक्षक बनकर रण-क्रीड़ा आरंभ की। उनकी क्रोधाग्नि मानों तोप के बारूद का जलना है जिसने कई हज़ार शत्रुओं को एक ही बार में मार डाला। सैयद अफगन की सेना-रूप सगर के पुत्रों के लिए छत्रसाल की तोपों की गर्जना कपिल मुनि का शाप हो गई (अर्थात् जिस तरह

न बढ़ सकी। सहस्रबाहु—सहस्रबाहु अर्जुन, एक राजा जिसकी सहस्र भुजाएँ थीं। एक बार लंकापति रावण रेवा (नर्मदा) नदी में स्नान कर रहा था। सहस्रबाहु अर्जुन ने उसे दशमुख वाला कोई जन्तु समझ कर पकड़ना चाहा। किन्तु रावण ने जब देखा कि उसे पकड़ने को सहस्रबाहु आ रहा है तब वह पानी में डुबकी लगा गया। तब सहस्रबाहु ने नदी में ऊपर की ओर लेटकर पानी रोक दिया, जिससे नदी का पानी कम हो जाने से रावण दिखाई देने लगा और उसे सहस्रबाहु ने सहज मे पकड़ लिया।

दक्षिण का पठान सरदार सब देशो को जीतता एवं बरबाद करता हुआ आगरे और दिल्ली की सीमा तक आ गया। उसकी घुड़सवारों की सेना रूपी समुद्र ऐसा प्रतीत होता था मानो राक्षसों का समूह हो। भूषण कवि कहते हैं कि हे राजाओं के शिरोमणि छत्रसाल ! आप ने ऐसे युद्ध-विजयी शत्रु को भी केवल अपने दृष्टिपात से ही व्याकुल कर दिया। समस्त भू-मडल के खड-खंड मे बुन्देलखंड के महेवा पात की आपने कीर्ति फैलाई। हे महाबाहु (छत्रसाल) आपने दक्षिण के (बीजापुर के) स्वामी की सेना इस प्रकार रोक ली जैसे सहस्रबाहु ने रेवा नदी की धारा रोकी थी।

७५ राजत अखंड तेज—राजत—शोभा पाता है। छाजत—शोभा पाता है। दिग्गजन हिय साल को—दिग्गजों के हृदय में पीड़ा देने के लिए। आफताब—सूर्य। ताप—गर्मी, अभिमान। दुज्जन—दुर्जन, दुष्ट। तुरी—घोड़ा। कतार—पंक्ति। दीन प्रतिपाल—दीनों की रक्षा करने वाला। साहू—महाराज साहू जी, ये छत्रपति शिवाजी के पौत्र थे। सराहौं—प्रशंसा करूँ।

भूषण कवि कहते हैं कि जिसका अखंडित तेज शोभित हो रहा है, जिसका महान यश छा रहा है, जिसके हाथी दिग्गजों के हृदय में पीडा पहुँचाने के लिए गरज रहे हैं (अर्थात् जिसके हाथियों के चिंघाडने से दिग्गज भी भय खाते हैं), जिसके प्रताप के सम्मुख सूर्य भी मलिन हो जाता है, और दुर्जन गरमी (अभिमान) का त्याग कर जिसका बडा आदर करते हैं, जिसने साज तथा सामान युक्त घोडे, हाथियों और पैदलों की पंक्ति की पंक्तियाँ दान मे दी हैं, आजकल उस जैसा और कौन गरीबों का भरण पोषण करने वाला है ? (अर्थात् कोई नहीं है) इसी कारण मेरी इच्छा अन्य राजाओं के यश वर्णन करने की नहीं होती । या तो अब मैं साहू महाराज का यश-वर्णन करूँगा या महाराज छत्रसाल का यश गाऊँगा ।

७८ किबले को ठौर बाप—क़िबले—फा० क़िबला, मुसलमानों का तीर्थस्थान, पूज्य व्यक्ति या देवता । आगि लाई है—आग लगा दी । मेहर—कृपा, दया । बादि—व्यर्थ । चूक—दोष, गलती, बुराई ।

हे औरंगजेब ! तुमने अपने पिता शाहजहाँ को, जो पूज्य देवता के (समान थे, कैद कर ऐसा घोर अनर्थ किया मानो अपने तीर्थ-स्थान मक्का को जला दिया हो । जो बड़ा भाई दारा । उसको पकड कर कैद कर दिया, तुम्हें कुछ भी दया न आई कि तुम्हारा माँ का जाया सगा भाई है । और अपने भाई मुरादबक्श साथ भी किसी प्रकार का धोखा न करने की तुमने कुरान बीच मे रख कर व्यर्थ ही कसम खाई थी (अर्थात् मुरादबक्श को बादशाह बनाने के लिए कुरान की कसम खाने पर भी तुमने धोके में उसे मार डाला) । भूषण कवि कहते हैं कि हे औरंगजेब सुनो, इतने अनर्थ करने के पश्चात् तुम्हें बादशाहत मिली है ।

७७ उठि गयो—[illegible] [illegible], भोजन, जीविका। धाम—घर। सिंगार—शृंगार, सजावट, शोभा। जसीलो—यशवाला, यशस्वी। धार—संसार। फूटे भाग—भाग्य फूट गये। जूझे—युद्ध में मर गये (मूल पुस्तक में 'जूझे' के स्थान पर 'जूझो' पाठ चाहिए) यशवंतराव—यह यशवंतराव कौन से राजा थे, यह पता नहीं चल सकता। कई लोग इस छन्द को भूषण का बनाया नहीं मानते। भूषणग्रंथावली की प्रायः सब प्रतियों में 'यशवंतराय' के स्थान पर 'भगवंतराय' पाठ है। भराय—भहरा कर।

सिपाहियों को भोजन (जीविका) देने वाला संसार से उठ गया। वीरता के वेश (मर्यादा) को बांधने वाला उठ गया। भूषण कवि कहते हैं कि पृथ्वी से धर्म उठ गया तथा राजाओं और उमराओं की शोभा भी उठ गई। अच्छे आचरण वाला उठ गया, यशस्वी शरीर वाला भी कोई नहीं रहा, अपितु सारे मध्य प्रदेश में मुसलमानों का ही समूह फैल गया। यशवंतराय के मरने से भिक्षुकों की किस्मत फूट गई और हिंदुओं के वंश का आधार भी भहरा कर टूट गया।

७८ आपस की फूट ही तें सारे—टूट्यो—टूट गया, नष्ट हो गया, चौपट हो गया। करते—करने से। पैठिगो—प्रविष्ट हो गया, चला गया। बली—एक दैत्यराज, इसने ९९ यज्ञ किये थे। जब सौवाँ यज्ञ करने लगा तब इन्द्र डरा कि कहीं यह इंद्र-पद न ले ले। अतः उसने विष्णु भगवान से प्रार्थना की। इस पर विष्णु ने बलि राजा की परीक्षा लेने के लिये वामन रूप (बौने का रूप) धारण किया और राजा से ३½ पग पृथ्वी माँगी। जब राजा ने पृथ्वी दान कर दी, तब वामन महाराज ने तीन पगों में आकाश, पाताल और पृथ्वी नाप ली। शेष आधे पग के लिए जब जगह न रही तो उन्होंने वह बलि के सिर

पर रख दिया। वलि उसके भार को न सम्हाल सका और पाताल में जा गिरा। वज्रधर—वज्र को धारण करने वाले, इन्द्र। हिरनाच्छ—प्रह्लाद का ताऊ, हिरण्यकशिपु का ज्येष्ठ भ्राता, इसे विष्णु भगवान ने मारा था, यह बड़ा अत्याचारी दैत्य था। सिसुपाल—शिशुपाल, यह श्रीकृष्ण की फूफी का बेटा था, और चँदेरी का राजा था। यह रुक्मिणी से विवाह करना चाहता था, किन्तु रुक्मिणी श्रीकृष्ण को चाहती थी। अत रुक्मिणी का विवाह जब से श्रीकृष्ण से हुआ तब से शिशुपाल उनसे बहुत जलने लगा। जब पांडवों ने, राजसूय यज्ञ किया तब शिशुपाल ने श्रीकृष्ण को बहुत गलियाँ दी, उस अवसर पर श्रीकृष्ण ने इसे मार डाला। वासुदेव—वसुदेव के पुत्र, श्रीकृष्ण। महिप—महिपासुर, इसे महाकाली ने मारा था। अधम-अधर्म। अधम-विचरते—अधर्म विचार से, पापाचार से।

जैसे आपस की फूट ही से सारे हिन्दू चौपट हो गये, अधिक अत्याचार करने से रावण के वंश का नाश हो गया, इन्द्र से ईर्ष्या करने के कारण राजा वलि पाताल पहुँच गया, चित्त में अभिमान धारण करने के कारण हिरण्याक्ष दैत्य का नाश हो गया, श्रीकृष्ण से वैर करने के कारण शिशुपाल मारा गया, अधर्म के कार्य करने के कारण महिपासुर दानव नष्ट हो गया, और जैसे रामचन्द्र जी के हाथ के स्पर्श से महादेव का धनुप टूट गया, वैसे ही शिवाजी के साथ लड़ने से दिल्ली की बादशाहत टूट गई (नष्ट हो गई)।

गुरु गोविन्दसिंह

शुम्भ-निशुम्भ-प्रताप

१ सुर हारे—सुर—देवता। असुर—दैत्य, राक्षस।

देवता हार गये और राक्षस जीत गये, शुभ-निशुंभ ने अपना सकल दल सजाकर इन्द्र को भगा दिया और (देवताओं का) सब साज समान छीन लिया।

२ छीन भंडार—कुबेर—धनेश, धनपति। दिनेश—सूर्य। निशेश—चन्द्रमा। जलेश—वरुण। ठकुराई—सरदारी, आधिपत्य। सुरधाम—स्वर्ग, इन्द्रलोक। दुहाई—प्रताप का डंका।

कुबेर से उन्होंने खजाना छीन लिया, शेषनाग से मणियों की माला छीन ली। ब्रह्मा, सूर्य, चन्द्र, गणेश और वरुण को जीतकर भगा दिया। तीनों लोकों पर उन्होंने अपना आधिपत्य जमा लिया और दैत्यों को सरदारी देकर वहां भेज दिया। वे लोग शुभ निशुभ के प्रताप का डंका पीटते हुए स्वर्ग में जाकर रहने लगे।

लवीय कुशीय युद्ध

३ रचा वैर वाद—वाद—विवाद, झगड़ा। राय—राजा। अछोह—अस्त्र से बचकर, अछूता।

विधाता ने इस जगत में अपार वैर विवाद रचा है जिसे कोई सुधारक भी मेट नहीं सका। महाराज कामदेव, लोभ और मोह बड़े बली हैं, ऐसा कौन-सा वीर है जो इनसे अछूता बच गया हो।

४ तहाँ वीर बंके—धके—ललकारते हैं। खप्परी—खप्पर, खोपड़ी। खोल—लोहे के टोप। खड़े—खाँडे, चौड़ी तलवारें। बैताल—शिवजी के गणों का एक मुखिया। डौर—डमरू।

गुरु गोविन्दसिंह

शुम्भ-निशुम्भ-प्रताप

१ सुर हारे—सुर—देवता। असुर—दैत्य राक्षस।
देवता हार गये और राक्षस जीत गये, शुंभ-निशुंभ ने अपना सकल दल सजाकर इन्द्र को भगा दिया और (देवताओं का) सब मान सम्मान छीन लिया।

२ छीन भंडार—कुबेर—कोषेश, धनी। दिनेश—सूर्य। निशेश—चन्द्रमा। जलेश—वरुण। ठकुराई—सरदारी, आधिपत्य। सुरधाम—स्वर्ग, इन्द्रलोक। दुहाई—प्रताप का डंका।
कुबेर से उन्होंने खजाना छीन लिया, शेषनाग से मणियों की माला छीन ली। ब्रह्मा, सूर्य, चन्द्र, गणेश और वरुण को जीतकर भगा दिया। तीनों लोकों पर उन्होंने अपना अधिपत्य जमा लिया और दैत्यों को सरदारी देकर वहां भेज दिया। वे लोग शुंभ निशुंभ के प्रताप का डंका पीटते हुए स्वर्ग में जाकर रहने लगे।

लवीय कुशीय युद्ध

३ रचा बैर बाद—बाद—विवाद, झगड़ा। राय—राजा। अगेह—अस्त्र से बचकर, अछूता।
विधाता ने इस जगत में अपार बैर विवाद रचा है जिसे कोई सुधारक भी मेट नहीं सका। महाराज कामदेव, लोभ और मोह बड़े बली हैं, ऐसा कौन-सा वीर है जो इनसे अछूता बच गया हो।

४ तहाँ वीर बकै—बकै—ललकारते हैं। खप्परी—खप्पर, खोपड़ी। खोल—लोहे के टोप। खड़े—खाड़े, चौड़ी तलवारें। बैताल—शिवजी के गणों का एक मुखिया। डौरू—डमरू।

गुरु गोविन्दसिंह

शुम्भ-निशुम्भ-प्रताप

१ सुर हारे—सुर—देवता। असुर—दैत्य राक्षस।

देवता हार गये और राक्षस जीत गये. शुभ-निशुंभ ने अपना सैन्य दल सजाकर इन्द्र को भगा दिया और (देवताओं का) सब मान-सम्मान छीन लिया।

२ छीन भंडार—धनेश—कुबेर, ब्रह्मा। दिनेश—सूर्य। निशेश—चन्द्रमा। जलेश—वरुण। ठकुराई—सरदारी, आधिपत्य। सुरधाम—स्वर्ग, इन्द्रलोक। दुहाई—प्रताप का डंका।

कुबेर से उन्होंने खजाना छीन लिया, शेषनाग से मणियों की माला छीन ली। ब्रह्मा, सूर्य, चन्द्र, गणेश और वरुण को जीतकर भगा दिया। तीनों लोकों पर उन्होंने अपना आधिपत्य जमा लिया और दैत्यों को सरदारी देकर वहां भेज दिया। वे लोग शुभ निशुंभ के प्रताप का डंका पीटते हुए स्वर्ग में जाकर रहने लगे।

लवीय कुशीय युद्ध

३ रचा बैर वाद—वाद—विवाद, झगड़ा। राय—राजा। भकोर—भस्म से धधक्र, अछूना।

विधाता ने इस जगत में अपार बैर विवाद रचा है जिसे कोई सुधारक भी मेट नहीं सका। महाराज कामदेव, लोभ और मोह बड़े बली हैं, ऐसा कौन-सा वीर है जो इनसे अछूता बच गया हो।

४ तहाँ वीर बकै—बकै—ललकारते हैं। खप्परी—खप्पर, खोपड़ी। खोल—लोहे के टोप। खड़े—खाड़े, चौड़ी तलवारें। बैताल—शिवजी के गणों का एक मुखिया। डौरु—डमरू।

७ चवो चांवडी—वैताल—पुराणों के अनुसार भूतों की एक श्रेणी।

कहीं चांवड़ी (चीलें) आवाज़ कर रहीं हैं, कहीं डाकिनी चीख मार रही हैं, कहीं भैरवी, भूत और भैरव बोल रहे हैं, कहीं बाँके वीर वैताल विहार कर रहे हैं, (मूल पुस्तक में "बिकारं" के स्थान पर "विहारं" पाठ चाहिए) कहीं मांसाहारी भूत प्रेत हँस रहे हैं।

८. महावीर गज्जे—वीर योद्धा ऐसे गरजते हैं जिन्हें सुनकर बादल भी लज्जित होते हैं। अपने झंडों को गाढ़ा (पक्का करके) गाड़ते हैं और बढ़े हुए गुस्से से मंडित (शोभित) होते हैं।

९. कृपाणं कटारं—हंकं—कंप।

बाँके वीर कृपाण तथा कटार लेकर और गुस्सा धारण करके भिड़ते हैं। और जब वे भिड़ते हैं तो भूमि में कंप होने लगता है अर्थात् भूमि हिलने लगती है।

१०. मचे सूर—झार—चिनगारी। लोह—लोहे के शस्त्र।

शूरमा शस्त्र ले लेकर जुट गये, उनके अस्त्रों से (आपस में टकराने से) चिनगारियाँ निकलने लगीं। कृपाण कटार तथा अन्य लोहे के अस्त्रों की मार पड़ने लगी।

११. हलब्बी जुनब्बी—सरोहा—राजपूताने का एक स्थान जहाँ की तलवारें प्रसिद्ध हैं इस कारण तलवार को भी सिरोही कहते हैं। कातो—छुरी। सहथियं—बरछियाँ। सेहं—नेजे। सांग—बरछी। रेल पेल—धक्का, धक्की।

हलब देश की, जुनब देश और सिरोही की दुधारी तलवारें, छुरियाँ, कृपाणें और कटारें क्रोधित होकर चलने लगीं। बरछियों, कहीं तेज नेज़ों और भालों की धक्का धक्की होने

२३. तुट्टै खग्ग—तलवारें और टोप टूट कर गिरते हैं (मूल पुस्तक में 'जग्ग' के स्थान पर 'खग्ग' पाठ होना चाहिए) वीर लोग मुख से 'मार-मार' बोलते हैं। धक्कों की धक्का धक्की हो रही है, वीर लोग हक्का-बक्का (हैरान) होकर गिरते हैं।

२४. दलं दीह—दीह—दीर्घ, विस्तृत। दल—सेना।

(कुछ वीर गण) विस्तृत शत्रु सेना को लताड़ने लगे और शत्रु के आधे अंग काटने लगे। वे अयोध (लोहे की लंबी गदा) का प्रहार करते हैं और 'मार-मार' चिल्लाते हैं।

२५. नदी रक्त—गैण—गगन, आकाश। खप्पराली—कापालिका, रणचंडी।

रक्त की नदी भर गई, आकाश में परियाँ फिरने लगीं, काली देवी आकाश में गर्जने लगी और रणचंडी हँसने लगी।

२६. महासूर—मंडे—मंडित, व्याप्त, भरे हुए। लोह—लोहित, लाल। क्रोहं—क्रोध। धुनं—ध्वनि, आवाज़।

वीरगण क्रोध से लाल हुए हुए शोभित होते हैं, वे बड़े गर्व से गर्जते हैं, उनकी गर्जना के सम्मुख मेघ भी लज्जित होते हैं।

२७. छके लोह—छकं—सजावट। लोह—शस्त्र।

वे शस्त्रों की सजावट से सजे हुए हैं, मुख से मार मार चिल्ला रहे हैं। मुख पर उनके सुंदर मूँछें हैं और वे शंका छोड़कर भिड़ रहे हैं।

२८. हकं हाक—खिरे—खिझकर, क्रोधित होकर। ढुकना—एकबारगी धावा करना, टूट पड़ना।

ललकार पर ललकार पड़ रही है, घेरा डाले पड़ी सेना भग रही है। क्रोधित होकर सैनिक चारों ओर से आक्रमण कर रहे हैं और मुँह से 'मारो मारो' कहते हैं।

हुए कई अपस में (आमने सामने) अस्त्र चलाते हैं और (शत्रु के प्रहार से) आधे २ होकर गिर पड़ते हैं।

३६. गजं बाज—हाथी और घोड़े युद्ध में मारे जा रहे हैं, वीर लोग युद्ध में उलझे हुए हैं। निडर होकर वे शस्त्र चलाते हैं और दोनों दल अपनी अपनी जीत चाहते हैं।

३७. गजे लाज—गाजी (वीर गण) आकर गाज रहे हैं, फुर्तीले घोड़े नाच रहे हैं, ललकार पर ललकार पड़ रही है, और सेना भागती फिरती है।

३८. मदं मत्त—अहंकार के मद से मस्त हुए रौद्र रस में रंगे हुए, हाथियों के समूह से सजे हुए वीर गण गुस्से से दौड़ कर भिड़ते हैं।

३९. झमी तेज—झमी—चमकती है। गंगेरी—जल जुलाहा, मकड़ी जैसा छोटा सा जीव जो जल में बड़ी तेज़ी से दौड़ता है। वार—आघात, आक्रमण।

तेज तलवार इस तरह चमकती है जैसे बादलों में बिजली का वेग (वेग से चमकना) हो। योद्धा अपने शत्रु पर इस तरह (तेजी से) वार (आघात) करते हैं जैसे जल के ऊपर गंगेरी तेजी से भागता है।

४०. अपो आप—इस तरह रौद्र रस में रंगे हुए और बड़े मद में मस्त हुए योद्धा आपस में अस्त्र चलाते हैं और दोनों पक्ष अपनी अपनी जीत चाहते हैं।

४१. मचे वीर—मचे—भिड़ गये। झुंकार—हुंकार, भेरी और नगाड़े आदि शब्द। निसानं—नगाड़ा। गंजे—गर्जता है। गहीरं—गंभीर। तच्छ—बिद्ध, बिंधे हुए।

और अंगों से मिलते हैं, अद्भुत भयानक दृश्य उपस्थित है, भेरियों का शब्द होरहा है और ढोल बज रहे हैं, नगाड़े गया शब्द करते हुए गम्भीर गर्जना कर रहे हैं, कहीं रुंड (धड़) कहीं मुंड (कटे हुए सिर) फिर रहे हैं, कहीं तीरों से कटे शरीर पड़े हैं।

४२. चलै स्वग्ग खेतं—चलै—चलती हैं, चलती हैं। खग्ग—खड्ग, तलवार। खतंग—वाण। लोह घुट—शस्त्रों से घुटे हुए, शस्त्रों में सफल।

युद्ध भूमि में कहीं तलवारें चलती हैं कहीं वाणों का खयाल किया जा रहा है, महायोद्धा कहीं कटे कुटे रुल रहे हैं। बड़ी ऐंठ वाले योद्धा वीर वेश धारण किए अस्त्रों से सन्नद्ध हुए इस तरह घूमते हैं जैसे मतवाले हों।

४३. उठी कूह जूहं—कूह—कूक, चिल्लाहट, शोर। जूहं—समूह। समर—युद्ध। सार—शस्त्र। लोह—शस्त्र।

युद्ध क्षेत्र में शस्त्र बज (खड़क) रहे हैं और चिल्लाहट का समूह उठ रहा है (अर्थात् शोर पड़ रहा है) ऐसा प्रतीत होता है मानों प्रलयकाल के मेघ गरज रहे हों। तीरों की भीड़ लग गई है और कमान कड़क रहे हैं। क्रोध के साथ शस्त्र चल रहे हैं, इस तरह बड़ा जंग मचा हुआ है।

४४. विरच्चे महा जंग—विरच्चे—विचरण करते हैं। जुज्झ—युद्ध। पक्खं—पक्खी, पगल।

युद्ध में जवान योद्धा विचरण कर रहे हैं, उन क्षत्रियों के अद्भुत और भयानक खड्ग खुले हुए हैं। वीर लोग रौद्र रस में रंगे हुए युद्ध में रुझे (फँसे) हुए हैं, बड़े पराक्रम के कारण तत्ते (क्रुद्ध)

हुए कई आपस में (आमने सामने) अस्त्र चलाते हैं और (शत्रु के प्रहार से) आधे २ होकर गिर पड़ते हैं।

३६. गजं बाज—हाथी और घोड़े युद्ध में मारे जा रहे हैं, वीर लोग युद्ध में हलके हुए हैं। निडर होकर वे शस्त्र चलाते हैं और दोनों दल अपनी अपनी जीत चाहते हैं।

३७. गजे आन—गाजी (वीर गण) आकर गजे रहे हैं, फुर्तीले घोड़े नाच रहे हैं, ललकार पर ललकार पड़ रही है, और सेना भागती फिरती है।

३८. मदं मत्त—अहंकार के मद से मस्त हुए रौद्र रस में रंगे हुए, हाथियों के समूह से सजे हुए वीर गण गुस्से से दौड़ कर भिड़ते हैं।

३९. झमी तेज—झमी—चमकती है। गंगेरी—जल जुलाहा, मकड़ी जैसा छोटा सा जीव जो जल में बड़ी तेज़ी से दौड़ता है। बार—आघात, आक्रमण।

तेज तलवार इस तरह चमकती है जैसे बादलों में बिजली का वेग (वेग से चमकना) हो। योद्धा अपने शत्रु पर इस तरह (तेज़ी से) वार (आघात) करते हैं जैसे जल के ऊपर गंगेरी तेजी से भागता है।

४०. अपो आप—इस तरह रौद्र रस में रंगे हुए और बड़े मद में मस्त हुए योद्धा आपस में अस्त्र चलाते हैं और दोनों पक्ष अपनी अपनी जीत चाहते हैं।

४१. मचे वीर—मचे—भिड़ गये। भुंकार—हुंकार, भेरी और नगाड़े आदि शब्द। निशानं—नगाड़ा। गंजे—गर्जता है। गहीरं—गंभीर। छच्छ—विद्ध, छिदे हुए।

और आँतों से लिपटे हैं, अद्भुत भयानक दृश्य उपस्थित है, भेरियों का शब्द होता है और ढोल बज रहे हैं, नगाड़े तथा शब्द करते हुए गंभीर गर्जना कर रहे हैं, कहीं रुंड (धड़) कहीं मुंड (कटे हुए सिर) गिर रहे हैं, कहीं तीरों से कटे शरीर पड़े हैं।

४२. चलै खग्ग खेंगं—चलै—चलती है, चलती हैं। खग्ग—खड्ग, तलवार। खतंग—बाण। लोह घुट—शस्त्रों से घुटे हुए, शस्त्रों से युक्त।

युद्ध भूमि में कहीं तलवारें चलती हैं कहीं बाणों का खयाल किया जा रहा है, महायोद्धा कहीं कटे कुटे रुल रहे हैं। बड़ी ऐंठ वाले योद्धा वीर वेश धारण किए अस्त्रों से सन्नद्ध हुए इस तरह घूमते हैं जैसे मतवाले हों।

४३. उठी कूह जूहं—कूह—कूक, चिल्लाहट, शोर। जूहं—समूह। समर—युद्ध। सार—शस्त्र। लोह—शस्त्र।

युद्ध क्षेत्र में शस्त्र बज (खड़क) रहे हैं और चिल्लाहट का समूह उठ रहा है (अर्थात् शोर पड़ रहा है) ऐसा प्रतीत होता है मानों प्रलयकाल के मेघ गरज रहे हों। तीरों की भीड़ लग गई है और कमान कड़क रहे हैं। क्रोध के साथ शस्त्र चल रहे हैं, इस तरह बड़ा जंग मचा हुआ है।

४४. विरुच्चे महा जंग—विरच्चे—विचरण करते हैं। जुज्झ—युद्ध। वक्खं—बक्खी, बगल।

युद्ध में जवान योद्धा विचरण कर रहे हैं, उन क्षत्रियों के अद्भुत और भयानक खड्ग खुले हुए हैं। वीर लोग रौद्र रस में रँगे हुए युद्ध में रुझे (फँसे) हुए हैं, बड़े पराक्रम के कारण तत्ते (क्रुद्ध)

हुए कई अपस में (आमने सामने) अस्त्र चलाते हैं और (शत्रु के प्रहार से) आधे २ होकर गिर पड़ते हैं।

३६. गजं वाज—हाथी और घोड़े युद्ध में मारे जा रहे हैं, वीर लोग युद्ध में उलझे हुए हैं। निडर होकर वे शस्त्र चलाते हैं और दोनों दल अपनी अपनी जीत चाहते हैं।

३७. गजे आन—गाजी (वीर गण) आकर गर्ज रहे हैं, फुर्तीले घोड़े नाच रहे हैं, ललकार पर ललकार पड़ रही है, और सेना भागती फिरती है।

३८. मदं मत्त—अहंकार के मद से मस्त हुए रौद्र रस में रँगे हुए, हाथियों के समूह से सजे हुए वीर गण गुस्से से दौड़ कर भिड़ते हैं।

३९. झमी तेज—झमी—चमकती है। गंगेरी—जल जुलाहा, मकड़ी जैसा छोटा सा जीव जो जल में बड़ी तेज़ी से दौड़ता है। वार—आघात, आक्रमण।

तेज तलवार इस तरह चमकती है जैसे बादलों में बिजली का वेग (वेग से चमकना) हो। योद्धा अपने शत्रु पर इस तरह (तेजी से) वार (आघात) करते हैं जैसे जल के ऊपर गंगेरी तेजी से भागता है।

४०. अपो आप—इस तरह रौद्र रस में रँगे हुए और बड़े मद में मस्त हुए योद्धा आपस में अस्त्र चलाते हैं और दोनों पक्ष अपनी अपनी जीत चाहते हैं।

४१. मचे वीर—मचे—भिड़ गये। भुंकार—धुकार, भेरी और नगाड़े आदि शब्द। निशाणं—नगाड़ा। गंजे—गर्जता है। गहीरं—गंभीर। तच्छ—विद्ध, बिंधे हुए।

[illegible]) में कहीं [illegible] (लोहे के टोप) और शूरवीरों की टोली [illegible] पड़ी है।

४९. कहूँ मुच्छ—सखनं—सधान, कटे हुए।

कहीं मूँछों सहित मुख पड़े हैं, कहीं शस्त्रों से कटे हुए (घायल) [illegible] हैं, कहीं लोहे के टोप और तलवारें पड़ी हैं, कहीं बड़ी बड़ी [illegible]ड़ियाँ पड़ी हैं।

५०. गहे मुच्छ—वंकी—बाँकी, सुंदर। हंकी—अहंकारी, [illegible]भिमानी।

सुंदर मूँछों को पकड़े हुए (अर्थात् मूँछों पर हाथ फेरते हुए) कितने ही अभिमानी वीर आकर शोभित हुए हैं। ढालों का ढका-ढक शब्द हो रहा है और चारों ओर हलचल पड़ी है।

५१. खुले खग्ग—पक्खं—पक्खी, कमर।

खून से भरी हुई नंगी तलवारें लिए महावीर युद्धभूमि में फिरते हैं, वीर वैताल और भूत-प्रेत नाचते हैं, डंके और डमरू बजते हैं, (मूल पुस्तक में 'वछे' के स्थान पर 'वजे' चाहिए) और शंखों का शब्द हो रहा है मानों बड़े बड़े पहलवान् एक दूसरे की कमर में हाथ डाले हुए भिड़ रहे हों।

५२. जिन सूरन—सूरन—शूरवीरों ने। सामुहिं—सम्मुख। संज्यो—किया। आहुटे—इकट्ठे हुए। सार—अस्त्र। धर—धारण करके। धूमगुक—धुएँ से रहित। वासवलोक—इन्द्रलोक, स्वर्ग।

जिन शूरवीरों ने सम्मुख होकर बलपूर्वक युद्ध किया, उन वीरों में से काल ने एक को भी जीता न छोड़ा। सब क्षत्रिय रणभूमि के खेत में तलवार और खंडे लेकर आ इकट्ठे हुए थे और वे सब धुएँ रहित अस्त्रों की धार को धारण करके इस संसार के बंधन से

छूट गये। टुकड़े टुकड़े होकर वे सब रणक्षेत्र में मर गये पर किसी ने भी पैर पीछे नहीं दिया। (उनकी वीरता देख आकाश में) अपार जयकार हुआ और वे सब स्वर्ग को सिधार गये।

५३. इह विध—इस प्रकार घोर संग्राम हुआ, वीर लोग सूर्य-लोक को सिधार गये। उस लड़ाई का मैं कहाँ तक वर्णन करूँ क्योंकि अपनी (अपने कुल की) प्रभा (कीर्ति) अपने मुँह से वर्णन नहीं की जाती।

५४. लवी सर्व—लव के वंश वाले जीत गये और कुश के वंशज हार गये। जो वीर बचे थे वे प्राण लेकर (युद्ध भूमि से) भाग गये। उन्होंने जाकर काशी में वास (बसेरा) कर लिया और वहाँ रहकर चारों वेद पढ़ने लगे, और वहाँ ही बहुत वर्ष तक रहते रहे।

श्रीकृष्ण चरित्र

५५. है भगवान्—पुतना—पूतना नाम की एक राक्षसी थी, वह कंस की प्रेरणा से गोपी का वेष धर स्थनों पर विष लगाकर श्रीकृष्ण को दूध पिलाने आई थी, इस तरह कृष्ण को मारना चाहती थी। पर बालक कृष्ण ने उसे पहचान लिया और मार डाला। क्रुध—कुपित हो कर। रच्छ—रक्षा। हरनाक्षस—हिरण्याक्ष, प्रल्हाद के पिता हिरणकश्यप का बड़ा भाई था और बड़ा अत्याचारी था। भगवान ने वाराह रूप धारण कर इसे मारा था। प्रह्लाद की रक्षा के लिए भगवान ने हिरण्यकशिपु को छाती फाड़ कर मारा था। यहाँ शायद गुरु जी का हिरण्याक्षस से उसके भाई हरिण्यकशिपु से तात्पर्य है। उर—छाती।

बलवान भगवान प्रकट हुए हैं, गोप सब कहते हैं कि इन्होंने पूतना को मारा है। इन्होंने ही कुपित हो कर (रामावतार में)

राक्षस रावण को मारा था और विभीषण को राज्य दिया था। इन्होंने ही हिरण्याक्ष की छाती फाड़ कर प्रल्हाद की रक्षा की थी। हे महाराज नंद! सुनो, इन्हीं सब लोकों के स्वामी ने अब हमारी देह का उद्धार किया है।

५६. कुप के जिन—घटका—घटिका, घड़ीभर, थोड़ा समय।

क्रोधित हो कर जिन्होंने क्षणभर में बाली को मार दिया, और बली रावण की सेना को मार कर जिन्होंने विभीषण को राज दिया और क्षणभर में लंका को जैसे का तैसा (अर्थात् जैसी पहली थी, वैसी ही) कर दिया। जिन्होंने शत्रु मुर राक्षस को मारने में घड़ी भर समय भी न लगाया और जिन्होंने (रावण के बंधन से छुड़ा कर) सीता के दुःख को दूर किया है। उस भगवान् ने ब्रज भूमि में गौओं के बहाने (ग्वाल रूप धारण करके) खेल किया है। मूल पुस्तक में पाँचवीं पंक्ति में 'मुर मारि दियो घटकान करी रिप' के स्थान में 'मुर मारि दियो घटका न करी रिप' और आठवीं पंक्ति में 'रू गऊअन' के स्थान मे 'सु गऊअन' पाठ चाहिए।

५७. जाहि सहस्र फणी—सहस्र फणी—शेषनाग।

जिन्होंने जल में शेषनाग के शरीर पर सो कर क्रीड़ा की है, जिन्होंने विभीषण को राज्य दिया और रावण को क्रुद्ध होकर पीड़ा दी; जिन्होंने संसार में चर-अचर (जड़-चैतन्य) और हाथी (जैसे बड़े) तथा कीड़े (जैसे छोटे) जीव बनाये हैं, और जो देवताओं तथा दैत्यों में झगड़ा कराने वाले हैं वे भगवान ब्रजभूमि में खेलते हैं।

६६. वीर बड़ो—गोरस—दूध-दही।
हम जैसे बड़े वीर को छोड़ कर यह कौन है जिसके माथे पर केसर का टीका लगाया है ? गोकुल के गाँव में इसने ग्वालों के साथ मिलकर सदा दूध दही (चुरा चुरा कर) खाया है और सुनो इसने शत्रुओं (जरासंध) के डर से (मथुरा को) छोड़ कर द्वारिका में जा-कर अपने प्राण बचाये थे। सबको सुना कर उसने ऐसी बातें कहीं और क्रोध से भर गया।

६७. बोलत भयो—तब शिशुपाल कोप में भर कर, भारी गदा हाथ में लेकर खड़ा हो गया और क्रोध बढ़ाकर उसने सारी सभा को सुनाकर कहा 'गूजर (ग्वाला) होकर तू यदुराज कहलाता है' तथा दोनों आखें नचाकर (कृष्ण को) गाली दी। उसे सुनकर फूफी के वचनों को याद करके व्रजनायक चुप होकर रह गये।

६८. फूफी वचन—कृष्ण ने फूफी के वचनों को चित्त में धर कर (स्मरण करके) सौ गाली तक क्रोध न किया। अब वह (कृष्ण) खड़े हो गये पर शिशुपाल ने कुछ भय न माना। तब यदुवीर कृष्ण ने सुदर्शन चक्र हाथ में लिया।

६९. लेकर चक्र—पिख हैं—देखेंगे।
कृष्ण हाथ में चक्र लेकर खड़े हो गये और क्रोध में भर कर उन्होंने इस तरह बात कही—फूफी के वचन मान कर मैं अब तक चुप रहा, मैंने तुम्हारा नाश नहीं किया। तू ने सौ गाली से एक अधिक कह ली है और तूने जानबूझ कर अपनी मृत्यु चाही है। अब इस स्थान पर जितने राजा हैं वे देखेंगे कि या तो मैं ही नहीं रहूँगा और या तू ही नहीं रहेगा।

७०. कोप कै उत्तर—कानी—मर्यादा, प्रतिष्ठा।

गया। चित्त में बहुत क्रोध बढ़ा कर उन्होंने शत्रु पर चक्र फेंक कर
चलाया। वह उस के कंठ में आ लगा और (उसने) गला काट दिया
जिस से वह पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसे देख कर मन में यह उपमा
आई मानों किसी ने आकाश से सूर्य को मार गिराया हो।

७४. काट कै सीस —पारथ—पार्थ, अर्जुन।

कृष्ण ने शिशुपाल का सिर काट दिया और वे गुस्से में भर कर
दोनों आंखे नचाने लगे। (तथा बोले) इस सभा में और कौन
बली है (कौन अपने को हम से बली समझता है) वह भी हम से
युद्ध कर ले। अर्जुन, भीम आदि जितने भी वीर थे सब बहुत डर
गये और चुप हो रहे। श्याम कवि कहते हैं कि ऐसे सुन्दर स्वरूप
के ऊपर मैं बलि जाता हूँ।

७५ जोत जिती अरि —हुती—थी। बीयो—अन्य, दूसरा।

शत्रु के भीतर जितनी ज्योति थी वह सब श्याम के मुख में
आ गई। श्याम कवि कहते हैं कि जो बड़े अभिमानी थे उन में से
कोई भी बोल न सका (और यह सोच कर) सब चुप रहे कि इन्हों
ने बाँके वीर शिशुपाल को मार दिया है जिसकी राजधानी चन्द्रा-
वती थी। इन के समान जग में दूसरा कोई नहीं है, श्री यदुवीर ही
वास्तविक प्रभु हैं।

७६—एक कहै जदुराय—भट—वीर। घायो—मार दिया।
हुतो—था। (मूल पुस्तक में तीसरी पंक्ति में 'हतो' के स्थान में 'हुतो'
होना चाहिए)।

कुछ कहते हैं कि यदुराज (कृष्ण) बड़ा वीर है जिसने शिशु-
पाल जैसे बली को मार डाला। जो शिशुपाल इन्द्र, सूर्य और यम
से भी (बली) था उसे इसने यमलोक भेज दिया। जिस समय ज

में आया उस समय उस शिशुपाल को निमेषमात्र में (आँख पलक मारने के समय भर) में मार दिया। चौदह लोकों को बनाने वाला श्री ब्रजनाथ ही वास्तविक प्रभु है।

७७. चौदह लोकन—बखान्यो—क्रोधित हुआ।

यह चौदह लोकों का कर्ता है, साधु संतों ने अपने मन में यही समझा। देव और अदेव सब इसी के बनाये हुए हैं और वेदों से इसके गुण जान कर वर्णन किये जाते हैं। (पद्य की तीसरी चौथी पंक्ति का शुद्ध पाठ यह है—"देव अदेव किये सब याही के, वेदन ते गुन जानि बखान्यो") वीरों ने हरि को बड़े वीर के रूप में देखा और राजाओं ने उसे राजाओं से क्रोधित हुआ हुआ देखा और वहाँ जितने शत्रु खड़े थे उन्होंने श्याम को वास्तविक काल समझा।

७८. श्री ब्रजनायक ठाढ़े—श्री ब्रजनायक वहाँ हाथ में सुदर्शन चक्र लेकर बहुत जोश और क्रोध से भरे हुए खड़े थे। उस समय वे मानों काल के समान वेश बनाये हुए सभा में गर्जे कि और कौन ऐसा शत्रु है जो मुझे हृदय में (बड़ा) नहीं मानता। वह ऐसा रूप था जिसे देखकर शत्रुओं के प्राण निकल जाते हैं पर संत उसी रूप को देख कर जीते हैं।

जोधराज

त्रोटक छंद

बादशाह अलाउद्दीन जिन दिनों दिल्ली पर राज्य कर रहा था उन दिनों राजपूतों में शिरोमणि वीर हम्मीर रणथंभौर के सुदृढ़ पहाड़ी दुर्ग पर शासन कर रहा था। एक दिन बादशाह अलाउद्दीन ने अपने मुगल सरदार मीर महिमाशाह पर क्रुद्ध होकर उसे देश से निकाल दिया। अलाउद्दीन के डर से उसे कोई आश्रय न देता था। घूमते-घामते मीर महिमाशाह वीर हम्मीर के दरबार में पहुँचा। सच्चा क्षत्रिय शरणागत को कैसे छोड़ सकता था! वीर हम्मीर ने महिमाशाह को अभय-दान दिया। बादशाह अलाउद्दीन ने वीर हम्मीर को बहुत डराया धमकाया पर क्षत्रिय अपना वचन पलटना नहीं जानते—"तिरिया तेल, हमीर हठ चढ़ै न दूजी बार"। फलतः युद्ध हुआ। बादशाह ने अपने सेनानायक मुहम्मदअली को रणथंभौर पर आक्रमण के लिए भेजा। दूसरी ओर से राव हम्मीर के चाचा राव रणधीर ने उसका उत्तर दिया। उस युद्ध में मुहम्मदअली और उसका सहायक अज़मतखाँ मुसल्मानों की ८० हज़ार सेना के साथ मारे गये। राजपूतों के केवल एक हज़ार जवान मारे गये। मुसल्मान-सेना रण का मैदान छोड़ कर भाग गई। कुछ दिन बाद उन्होंने राव रणधीर के छाड़गढ़ को घेर लिया। जहाँ पाँच बरस तक घेरा पड़ा रहा। तब राव हम्मीर ने अपने छोटे भाई के दोनों राजकुमारों को चित्तौर से बुलाया जो बादशाह के सेनानायक मीर जमाल के साथ लड़ते हुए अपनी १६ लाख सेना समेत धराशायी हुए।

धरैं—धरती में डालते हैं। धर—धड़। डहक—डाँक, ललकार खलं—दुष्टों को।

बाण छूट रहे हैं, और हाथियों के मस्तक फूट रहे हैं। वे छूटते हुए बाण ऐसे दिखाई देते हैं, मानों धूल के मध्य में पंख धारी सर्प उड़ रहे हों। बलवान् हाथों से तलवारें चल रही हैं अथवा योद्धा लोग एक हाथ में सांग लिए हैं और दूसरे हाथ से तलवार चला रहे हैं, और दुष्टों (शत्रुओं) को ललकार कर उनके धड़ों को धरती में गिरा देते हैं।

८ मुख अग्ग बढ़े—मुख अग्ग बढ़े—मुख के सम्मुख आकर। रणधीर—राव रणधीरसिंह, राव हम्मीरसिंह के चाचा। अरे—भिड़ते हैं। पतिसाह—बादशाह। अजमन्त—एक मुसलमान सरदार का नाम। असीनु सहस्स—असी सहस्र सेना।

ज्योंही रणधीरसिंह आगे बढ़कर लड़ने लगे, त्योंही उनसे बादशाह के वीर भिड़ गए। रणधीरसिंह को आगे बढ़ा हुआ देख कर अजमतखां और मुहम्मदअली एक साथ ही अस्सी हज़ार सेना लेकर दौड़ पड़े।

९. तिहिं द्वंद अमंद—तिहिं—उन्होंने। द्वंद—युद्ध। बिलन्द किया—बुलन्द किया, खूब ज़ोरों से किया। झेलि लियो—सह लिया। वर—श्रेष्ठ, वीरोचित। बैन कहे—शब्द कहे। पन धारि धर्न—घोर प्रतिज्ञा करके।

उन दोनों (अजमतखां और मुहम्मद अली) ने बड़े ज़ोरों का युद्ध किया किन्तु रणधीरसिंह ने उस भयानक आक्रमण को सह लिया (रोक लिया)। तब रणधीर ने मन में क्रोध कर और

[illegible] प्रतिमा [illegible] शब्द कहे। (मूल पुस्तक में 'वन [illegible]' के स्थान में '[illegible]' पाठ चाहिए।

१०. महिमंद अली —मुख आन जुर्यो—सम्मुख आकर भिड़ा। कमान—धनुष (मूल पुस्तक में 'कान' के स्थान पर 'कमान' पाठ चाहिए)। उर—छाती, वक्षस्थल।

तब मुहम्मदअली रणधीरसिंह के सामने आकर भिड़ गया और उन दोनों वीरों में बड़ा घोर युद्ध होने लगा। उसी काल अजमतखाँ ने हाथ में धनुष उठाया (और लक्ष्य पर बाण छोड़ा।) उसका बाण रणधीरसिंह के हृदय को चीरता हुआ पार निकल गया।

११. रणधीर सुकोपि कैं—साँग—बरछा, भाला।

इस पर रणधीरसिंह ने कुपित होकर अपनी साँग उठाई (और इस प्रकार जोर से मारी कि) अजमतखाँ के शरीर को फाड़ कर बाहर निकल गई। जब अजमतखाँ रणक्षेत्र में गिर पड़ा तब मुहम्मदअली फिर आ पहुँचा।

१२ रणधीर सु कोपि—मति भुल्लि रहै—भूल में न रहना अर्थात् सावधान हो जाओ। किरवान—तलवार। मंझि—मध्य।

मुहम्मदअली ने कुपित हो कर रणधीर सिंह से कहा—अब मेरे हाथ देख, अब भूल में न रहना (और यह कहते ही उसने) राव रणधीर के अंग पर तलवार का वार किया। तलवार टोप को काटती हुई कुछ रणधीर के सिर में घुस गई।

१३. तब कोप कियो—तनं—शरीर पर। अमंदबली—अत्यन्त बलवान्। हली—हिल गई, हलचल मच गई।

तब रणधीरसिंह ने मन में क्रोध किया और उसने बड़े जोर से

मुहम्मदअली के शरीर पर तलवार चलाई। तलवार की चोट से अत्यन्त बलशाली मुहम्मदअली धराशायी हो गया। उसके गिरते ही बादशाह की सेना में हलचल मच गई।

१४. लुथि लुत्थि परै—लुथि लुत्थि परै—लोथ पर लोथ गिरने लगीं। खंजर—कटार। धर—धरती। रीस—रिस, क्रोध। कीन प्रणं—जिन्होंने प्रण किया हुआ है।

(रणधीर सिंह के साथ) और बहुत से चौहान वीर भी मुसलमानों से भिड़ गए और लोथ पर लोथ कट कट कर गिरने लगीं। चौहानों की कटारें (यवनों के) शरीरों को पार करने लगीं। प्रणधारी चौहान वीरों के क्रुद्ध होने पर मुसलमानों के सिर धरती पर गिरने लगे। कइयों के हाथ कट गए और कइयों के पैर कट कट कर गिर गए।

१५. यहि भाँति भिरे—बलखीजु परै—बलख के योद्धा गिर पड़े। कालिय—काली। अट्ट सुहास—अट्टहास।

चौहान वीरों ने इस प्रकार भयंकर युद्ध किया कि बादशाह की सेना मुड़ कर (पीठ दिखा कर) भाग खड़ी हुई। अस्सी हजार बलख के योद्धाओं को रणक्षेत्र में पड़ा हुआ देखकर काली अट्टहास करती हुई हँसने लगी।

१६. चहुआन परै—सुरलोक—स्वर्ग।

एक हजार चौहान वीर भी जो रणक्षेत्र में गिरे थे, वे सब के सब स्वर्गलोक में जा कर रहने लगे अर्थात् स्वर्गलोक में पहुँच गये।

१७. असी सहस—उस रणक्षेत्र में मुहम्मदअली और अज-

सेना के साथ बादशाह के पच्चीस हजार बलख के योद्धा खेत रहे और राव रणधीरसिंह के ९ हजार जवान मारे गए।

१८. भज्जी फौज सब—बादशाह की सारी सेना भाग खड़ी हुई और उसके दो नामी मीर (मुहम्मदअली और अजमतखाँ) भी युद्ध में मारे गए। ऐसी विपत्ति के समय में बादशाह गजनी के पीरों को याद करने लगा।

१९. इतैं कुमर चित्रंग—कुमर चित्रंग—राजकुमार चित्रंग या चतुरंग जिसे कुमार ने वीरगति पाने से पहले चित्तौर जाने और कुमार 'रतन' की तथा रणथंभ की प्रजा का रक्षा करने का आदेश दिया था। मीर आरब्ब—अरबी मीर मीर जमालखाँ, जिसने पहले पृथ्वीराज चौहान को पकड़ा था, और जिसे अब अलाउद्दीन ने चित्तौड़ के कुमारों को पकड़ने का भार सौंपा था। निसानं—नगाड़े। पावस—वर्षाऋतु। मेघ—बादल। गज्जं—गरज रहे हैं।

इधर राजकुमार चित्रंग के वीर लड़ाई में जुट गये। उधर अरब के मीर जमालखाँ के वीर युद्ध के लिए छूटे। दोनों ओर से बड़े जोर से युद्ध के बाजे बजने लगे। वे ऐसे प्रतीत होते थे मानों वर्षा ऋतु के बादल गरज रहे हों।

२०. दुहूँ ओर खंडं प्रचंडं—खंडं—खांडे। प्रचंडं—भयंकर। नुभारी—बड़ा। छुटे नाल गोला बँदूकं नुभारी—भारी बन्दूकों के नालों से गोले छूटने लगे। भयो सोर घोरं—बड़ा भारी शोर हुआ। धुँवा घोर घोरं—बड़ा भयंकर धुँवा छा गया। गई बुद्धि—सुध-बुध मारी गई, होश-हवाश गुम होगये। सुज्झै नहीं नैन ओरं—आँखों को कुछ नहीं सूझता था।

दोनों ओर से बड़े बड़े खांडे चलने लगे और भयंकर अ
वाली बन्दूकों की नालों से गोलियाँ छूटने लगीं। भयंकर
मच गया और चारों ओर घना धुँआ छा गया। इस युद्ध
भयंकरता से सब के होश हवास गुम होगये और नेत्रों को
भी नज़र न आने लगा।

२१. करैं सेल खेलं—सेल खेलं—साँग का खेल। हँके—ललका
वहैं तेग— तलवारें चलती थीं। कौतुक्क—विस्मय-कारक युद्ध घट

रणबाँकुरे महावीर बर्छों और भालों का खेल खेलने ल
अर्थात बड़े जोरों से भाले मारने लगे। भालों की मार से अंग-अ
फटने लगे और दोनों ओर के योद्धा एक दूसरे को ललकारने लगे
तलवारें चलने लगी और शरीरों के टुकड़े-टुकड़े करने लगीं। इ
विस्मयकारी युद्ध-क्रीड़ा को देख कर काली हँसने लगी।

२२. वहैं जम्म दंडं करैं—कढ़ै अन्त—अंतड़ियाँ निकल आती
हैं। हथ्थ मथ्थं परै—गुथ्थम गुथ्था हुए पड़े हैं। रुंड—धड़। हँके—
हाँक, ललकार।

वहीं योद्धाओं की यम-दंड के समान भुजाएँ बड़े जोर से चलने
लगीं। कहीं किसी की अँतड़ियाँ निकल आती हैं और किसी के
सिर फूट जाते हैं। कहीं बाँके वीर गुत्थम-गुत्था पड़े हैं कहीं सिर
और धड़ उठ खड़े होते हैं, और कहीं मुंड जोर से ललकार रहे हैं।

२३. उतैं मीर जामील ध्यायो—हँकारं—ललकारता हुआ।
खान—खान बल्हनसी या बाल्हनसी जो कुमार चतुरंग के साथ चित्तौड़
से आया था और हम्मीर की सेना में था। वारि-पारि—आर पार
हो गया।

उधर से मीर जमील (जमालखाँ) ललकारता हुआ दौड़ा और इधर से खान वल्हनसी दौड़ कर उस से सहसा भिड़ गया। उधर से मीर जमील ने ललकारते हुए बाण छोड़ा जो खान के घोड़े के आर पार होगया।

२४. परयो खांन को वाजि—वाजि—घोड़ा। फुट्टौ सु अंगं—उसका शरीर फूट गया। सुतो—वह तो।

शरीर फूट जाने से खान का घोड़ा गिर पड़ा। खान दूसरे घोड़े पर चढ़ कर फिर से युद्ध करने लगा। खान ने जमील के शरीर पर बरछा मारा जिससे वह मीर पृथ्वी पर मूर्छित हो कर गिर पड़ा। मूल पुस्तक में "परयौ घुम्मि भीरं" के स्थान में "परयौ झुम्मि मीरं" पाठ चाहिए।

२५. दोउ सैन देखैं भिरे—लग्ग वग्गं—[illegible]। उप्पर—हमला। सुठान्यौ—विचार किया।

दोनों सेनाएँ देख रही थीं कि वे दोनों वीर—मीर [illegible] और खान वाल्हनसी—लड़ रहे हैं और कुमार भी उनने [illegible] होगये। कुमारों पर युद्ध का भारी बोझ पड़ा जान कर [illegible] हम्मीर ने हमला करने का विचार किया।

२६. लियो बोलि—सजोदरं—संजोदर नाम के [illegible] को। ऊपरं—सहायता। बाल्हु—वल्हन भी। करूरं—क्रूर, [illegible] निर्दयी।

राणा हम्मीर ने वीर संजोदर को बुलाया, [illegible] कुमारों की सहायता के लिए जाने को कहा। [illegible] था, और खान वल्हन भी शूर था। दोनों ही [illegible] थे इसलिए वे बड़े क्रूर थे।

लोहे का टोप कट गया और तलवार उसके माथे पर जाकर लगी। तब मीर जमाल और वाल्हनसी गुत्थमगुत्था हो गये।

कटारं कुमारं चलायो—सत्थं—साथी।

इस समय कुमार (चतुरंग) ने मीर जमाल पर भयंकर कटार चलाई जिससे घायल होकर वह (जमाल) रणस्थली में गिर गया। यह देखकर जमाल के साथी क्रुद्ध होकर दौड़े और वीर वाल्हनसी को मार कर धरती पर गिरा दिया।

३२. तबै खाँन कुमार—पार्यो—लिटा दिया, गिरा दिया। नवोनो—जवान।

तब खान कुमार महिमाशाह क्रोध में भरा दौड़ा और उसने बहुत सी अरबी सेना को पृथ्वी पर सुला दिया। और तब वीर संखोदर ने भी खूब जंग किया, कितने ही अरबी नौजवानों को युद्ध भूमि में गिरा दिया।

३३. किते सेल खेलं—वार पारं—इस पार से उस पार तक। भभंक्कै—भड़कते हैं, क्रोध से उबलते हैं। घटै—लगते हैं। पंनारं—परनाले।

कितने ही वीर लोग इस ओर से उस ओर तक बरछियों का खेल करते हैं। जब घाव लगते हैं तो वे क्रोध से भड़कते हैं, और घाव से खून के परनाले छूटते हैं। भारी तलवारें तेज़ी से चलती हैं, और सिर पर पड़ती हैं, बड़े बड़े धड़ उछलते हैं, और काले मुंड नीचे गिरते हैं।

३४. परे दोय कुमारं—अच्छरी—अप्सरी, अप्सरा। अकथ्थं—अकथनीय, जिसका वर्णन न हो सके। भीर—विपत्ति। सोरा—शूर, वीर। बुभक्खं—भक्षण किया, समाप्त किया।

वियोगी हरि

वीर-बाहु

१. खल-खंडन मंडन-सुजन—खल-खंडन—दुष्टों का नाश करने वाली। मंडन-सुजन—सज्जनों की शोभा बढ़ाने वाली। अरि-विहंड—शत्रु-नाशक। बरिबंड—बलवान। सिंधुर-सुंड-से—हाथी की सूँड के समान। सुभट-चंड-भुजदंड—शूर-वीर की बलवान् और प्रचंड भुजाएँ।

दुष्टों को काटने वाली, शत्रुओं को नाश करने वाली और सज्जनों की रक्षा करने वाली वीरवर की प्रचंड बलवान् भुजाएँ हाथी की सूँड के समान शोभित हैं।

२. कटि कटि जे रण में—रण—युद्ध। कृपाण-व्रत-त्राण—तलवार-व्रत की रक्षा अर्थात् क्षात्र-धर्मप्रतिपालन। हुलसि कैं—प्रसन्न होकर। वारिये—न्यौछावर कीजिए। तिन—उन।

क्षात्र-धर्म की रक्षा करती हुई जो भुजाएँ रणक्षेत्र में कट-कट कर गिर पड़ती हैं, उन पर क्यों नहीं हँसते हँसते अपने प्राण न्यौछावर करते?

३. बड़े बडे बरबाहु के—बरिबंड—बलवान्। दुवन-दर्प—दुष्टों का अभिमान। दब्बत—चूर्ण कर देते हैं। जे—जो। ते—वे।

बड़ी-बड़ी लंबी भुजाओंवाले तो कितने ही बलवान् होते हैं, परन्तु दुष्टों के अभिमान को चूर्ण करनेवाली भुजाएँ दूसरी ही—निराली ही—होती हैं।

वीर नेत्र

४ होति लाख में एक—अग्नि-वर्न—आग के रंग की, अ जैसी प्रज्ज्वलित। दहि करति—जला कर राख कर देती है, भस्म क देती है। दुवन-दाह-दल—शत्रुओं के बड़े दल को।

आग जैसी प्रज्ज्वलित लाखों में कोई एक ही आँख होती जो विशाल रिपु-दल को देखते ही जला कर राख कर देती है।

५. नयन कंज, खंजन, मधुप—कंज—कमल। खंजन—एक पक्षी विशेष, कवि लोग जिसके रक्तिम नेत्रों की उपमा लाल नयनों से दिया करते हैं। मधुप—भ्रमर, भौंरा। मद—मदिरा, शराब। मीन—मछली। लोहित—अरुण, रक्त, लाल। अनुपम—अद्वितीय। उपमान—जिससे समानता बताई जाती है।

नेत्र कमल, खंजन, भ्रमर, मदिरा, मृग और मछली के समान तो हैं ही, परन्तु रक्त और अंगारा ये दो उनके अनुपम उपमान हैं अर्थात् उनको खून की तरह या आग के अंगारे की तरह क्रोध से लाल कहना अधिक उपयुक्त है।

६ सुभट नयन अंगार—अचरजु—आश्चर्य। लखातु—दिखाई देता है। उमह-जलु—उत्साह का जल।

वीरों के नेत्र अंगारे के समान हैं पर उनमें एक आश्चर्य दिखाई देता है कि ज्यों-ज्यों उनमें उत्साह-रूपी जल पड़ता है त्यों-त्यों वे और धधकते जाते हैं।

७. जात्र क्रुटि रति-रंग—रति-रंग-रंगी—काम-क्रीड़ा-में लगी हुई। अलसौंहीं—अलसाई हुई। सहज-ओज-ज्वाला-ज्वलित—स्वाभाविक पराक्रम की ज्योति से प्रकाशित। जुग लाख—लाखों युग।

काम-क्रीड़ा के रंग में रँगी हुई और अलसाई हुई उन आँखों

का फूट जाना ही अच्छा है, किन्तु स्वाभाविक तेज से प्रकाशित आँखें लाखों युग युग जीवित रहें।

८. सुरत रंग कहँ सुरत—रति-क्रीड़ा। दृगनि में—आँखों में। रण-ओज-उदोतु—युद्ध के तेज से प्रज्वलित। कज्जल—काला, श्याम।

कहाँ तो आँखों में रति-क्रीड़ा का रंग! और कहाँ रणोन्माद का तेज! इससे (रण ओज की कान्ति से) मुख उज्ज्वल होता है और उस रति-रंग से मुख में कालिख लगती है।

९. युद्ध, रक्त, दग—युद्ध-रत्त-दग-रक्त—युद्ध में रत नेत्र की लालिमा। लाग—सम्बन्ध। दाग—कलंक।

युद्ध में रत नेत्र की लालिमा का रक्त की लालिमा से क्या सम्बन्ध? रक्त की लालिमा से तो दाग लगते हैं और इससे हृदय का दाग मिटता है।

१०. सहज सूर सैननि—सहज—स्वाभाविक। सूर—वीर। सील-ओज-संचार—शील और तेज का संचार। एकै रस—एक रूप। निवसतु—निवास करते हैं। पानिप—जल, कान्ति। अंगार—अंगारा।

जो स्वाभाविक वीर है उसकी आँखों में शील और तेज का संचार इस प्रकार दिखाई देता है मानों पानी (कान्ति) और अंगारे एक रूप होकर निवास करते हों।

११. जदपि रुद्ध बल तेज—रुद्ध बल-तेज को—रुके हुए या छिपे बल पराक्रम का। दिपतु—प्रकाशित होता है। तऊ—तोभी। अन्तर ओज-उजासु—भीतर के तेज का प्रकाश।

यद्यपि इस शूरवीर ने अपने रुद्ध बल और तेज का कभी प्रकाश नहीं किया तो भी आभ्यन्तर तेज का प्रकाश महावीर के नेत्रों में प्रकाशित हो रहा है।

ऐ वीरवर छत्ता (बुंदेलखंड-केसरी छत्रसाल) तुम्हारी उस प्रलय-कारिणी लपलपाती हुई तलवार ने दुष्टों के सिरों को खाते-खाते भी अभी तक डकार तक न ली।

१६. बसै जहाँ करवाल- करवाल—तलवार। बाल—बाला, सुन्दरी। निवसति—बस सकती है, रह सकती है। ज्वाल—ज्वाला, अग्नि की लपटें। मालती-माल--मालती की माला।

ऐ करवाल! जहाँ तू बसती है वहाँ कोई बाला कैसे रमण कर सकती है? भला कहीं मालती की माला और अग्नि की ज्वाला एक साथ रह सकती हैं?

१७. धारि सील असि बालिके—धारि सील—शील धारण करके, शीलवती बन कर। असि-बालिके—तलवार रूपी बालिके। सयानी—समझदार। हठीली—हठी, जिद्दी। इठलाहट बानि—मचलने की आदत, इतराने की बान।

अरी तलवार रूपी बालिके, तू अब क्या सयानी हो गई है, जो तू अब अपने उग्र स्वभाव को छोड़ कर सुशीला होगई है? अरी हठीली! तूने अब अपनी वह पुरानी मचलने की आदत क्यों छोड़ दी? अर्थात् युद्ध में नंगी नाचने के बजाय अब तू म्यान रूपी परदे में क्यों बैठने लगी है।

१८. तड़ित और तरवार में—तड़ित—बिजली। दुरि जाय—छिप जाती है।

बिजली और तलवार में समता किस तरह हो सकती है, ज्योंही यह तलवार दमक कर चमकती है, त्योंही वह (बिजली) छिप जाती है। बिजली काले बादलों में होती है, पर तलवार से

२२. सुभट लाल—असि-दूतिका—तलवार रूपी दूती।
ड़ी—खड़ी। सुमुखि—सुवदनी, सुन्दर स्वरूप वाली।
यानी—चतुर। मानिनि—मान का हुई, प्रियतम से रूठी हुई।
सुधा-बाल—पृथ्वी रूपी बाला। कौ—का। गहावति पानि—हाथ
कड़वाती है।

ऐ सुभट ! यह सुन्दर मुखवाली और अत्यंत चतुर असि-दूतिका
तलवार रूपी दूती) सम्मुख खड़ी है, मानिनी (मान-वती—
रूठी हुई) वसुधा रूपी वाला का हाथ यही पकड़वाती है।
अर्थात् जिस तरह रूठी हुई नायिका को मनाकर दूती उसका हाथ
नायक को पकड़ाती है, वैसे ही यह तलवार रूपी दूतिका शत्रु को
मारकर पृथ्वी रूपी वाला का हाथ पकड़ाती है।

२३. रमति अंत नहिं—रमति—रमण करता है। अन्त—
अन्यत्र। कंत—पति। कुल-कामिनी—कुल-वधू। दुगामिनि—दो गामिनी,
दो से गमन करने वाली। सती—पतिव्रता।

यह कुल-वधू तलवार प्रीतम को छोड़कर अन्यत्र रमण नहीं
कर सकती है। भला, कहीं पतिव्रता सौभाग्यवती नारी परपुरुष-
गामिनी होती है ? अर्थात् जिस तरह पतिव्रता अपने पति को छोड़
कर दूसरे के पास नहीं जाती, वैसे ही तलवार वीर पुरुष को छोड़
कर दूसरे के पास नहीं जाती।

२४. रण-नायक-भामिनि—रण-नायक-भामिनि—रण वीर की
वधू। नई—हुई। रति-माल—प्रेम-माल।

ऐ कुल-कामिनी तलवार ! तू ही युद्ध-वीर की पतिव्रता पत्नी
है जो अन्तिम समय में भी प्रीतम-कंठ से लिपट कर रति-माला
बन गई है। [जिस प्रकार कुल वधू-पति के मरने पर उसके साथ

जाती है, उसी प्रकार तलवार भी अन्त समय में रणनायक रूपी अपने स्वामी के कंठ का आलिंगन करती रहती है अर्थात् वीर तलवार से भेंट कर ही मरते हैं।]

२५. सोनित नील असीन—नील—नाली। असीन—तलवारें। पै—पर। रुधिर-बिन्दु कृत—रक्त के बिन्दुओं द्वारा बनी हुई। तमाल-लतान—तमाल वृक्ष पर लिपटी हुई लताएँ। वधूटी-माल—बीरबहूटियों की माला।

नीली तलवारों पर रक्त बिन्दुओं द्वारा बनी चित्रकारी (जाली) ऐसी प्रतीत होती है मानों तमाल वृक्षों से लिपटी हुई लताओं पर बीरबहूटियाँ शोभित हो रही हों।

धनुष-बाण

२६ देखत ही वह वह कुटिल—कुटिल—टेढ़ा। कुटिल—दुष्ट। सरल—सीधा। अरि—शत्रु। अथिर—अस्थिर। ज्यों—जैसे ही। थिरात—स्थिर हो जाता है (मूल पुस्तक में 'थिरात' के स्थान पर 'थिरात' पाठ चाहिए) तिपन—बहुत तीव्र। लहराता—सनसनाता हुआ चलता है।

उस कुटिल धनुष को देखते ही डर के मारे दुष्ट सीधा हो जाता है वैसे ही ज्यों ही वह तेज़ बाण लहराता है (सनसनाता हुआ छूटता है) त्यों ही अस्थिर स्थिर हो जाता है अर्थात् आगे बढ़ता हुआ शत्रु मरकर स्थिर हो जाता है।

२७. बिसिख-भुजंग तुव—बिसिख-भुजंग—बाण रूपी सर्प। तुव—तेरे। फुंकरत—फुंकार मारते हैं। नभ-लगि—आकाश तक। मंडरात—मंडराते हैं, ऊपर चक्कर लगाते हैं। अरि-अपजस—शत्रु का अपयश। सुजस—सुयश।

२४. प्रलय-हासु जब कालिका—प्रलय-हासु—प्रलय काल का अट्टहास। दहक-दंत-दुति-दमक ते—प्रज्ज्वलित दान्तों की प्रभा की चमक से। सूर्यशत—सैकड़ों सूर्य। मन्द—प्रभाहीन।

जब कालिका स्वच्छन्द स्वाभाविक रूप से प्रलय काल का अट्टहास करती है, उस काल उसके प्रज्ज्वलित दांतों की प्रभा से सैकड़ों सूर्य मंद पड़ जाते हैं।

२५. अट्टहासु करि धारि त्यों—मौलिमाल—मुंडमाला। अविलम्ब—शीघ्र।

(तांडव नृत्य में शिव) के साथ अभिनय करने वाली आदि-अभिनेत्री जगन्माता! अब शीघ्र ही अट्टहास कर और मुंड-माला धारण करके प्रलय का नाट्य कीजिए।

२६. कर्षतु रवि-रथ-चक्र—कर्षतु—खींचते हैं। रवि-रथ-चक्र—सूर्य के रथ के पहियों को। नित—सदा। नभ—आकाश। तांडव—शिव एवं शक्ति का एक प्रकार का भयंकर नृत्य। माँह—में। जन-सीस पै—भक्त के सिर पर। बाहँ—भुजा। छाहँ—छाया।

नभ-मंडल में ताण्डव नृत्य करते समय जो बाहें नित्य सूर्य के रथ के पहियों को खींच देती हैं, हे माता! आप की उन बाहों की छांह सदा भक्तों के सिर पर रहे।

२७. या भारत-आरति हरौ—भारत-आरति—भारतवर्ष की पीड़ा को। सोई—वही। द्रुत—अविलम्ब, शीघ्र। जासु—जिसके। प्रलय-पगु—प्रलय करने वाले चरण। शवहू—मृतक भी। शिव—महादेव।

वह महाशक्ति ही शीघ्र आकर इस आर्त भारत की पीड़ा का हरण करे जिसके प्रलय-कारी चरणों के स्पर्श मात्र से शव (मृत-शरीर) भी शिव बन जाता है।

मारुति-प्रतिज्ञा

४४. उठि ठाड़ो ह्वै है—ठाड़ो—खड़ा। ह्वैहै—हो जायगा जवै—जब। सधनु—धनुष सहित। सुमित्रानन्द—लक्ष्मण। पथ श्रम—मार्ग की थकान। रघुचन्द—रामचन्द्र।

जब लक्ष्मण मेघनाद की शक्ति से अचेत होगये और वैद्य सुषेण ने कहा कि यदि प्रातःकाल सूर्य निकलने से पहले तक संजीवनी बूटी न आई तो लक्ष्मण का जीना असंभव है तब हनुमान प्रतिज्ञा करते हुए कहते हैं—"हे रघुनाथ! मैं अपने मार्ग-जनित श्रम से उत्पन्न पसीने को उसी समय पोंछूगा जब अचेत पड़े हुए लक्ष्मण फिर से हाथ में धनुष लेकर उठ खड़े होंगे।

जो लगि मूरि न लाऊँ मैं—जौ लगि—जब तक। मूरि—संजीविनी बूटी। मारुति—पवन पुत्र हनुमान। तौ लगि—तब तक तात—सूर्य। सिसु केलि—बाल क्रीड़ा। मुख ना खोलियो—मुहँ न दिखाना, उदय न होना। प्रात—प्रातःकाल।

हनुमान जी भगवान् सूर्य को सम्बोधित करते हुए कहते हैं, "हे तात! मेरी बाल-क्रीड़ा को याद कर तुम तब तक उदय न होना जब तक मैं संजीवनी बूटी लेकर नहीं लौटता हूँ। (हनुमानजी ने बचपन में सूर्य को निगल लिया था अब उसको वही याद दिला रहे हैं कि संजीवनी बूटी लेकर मेरे लौटने तक तुम उदय न होना, नहीं तो मैं तुम्हें फिर निगल जाऊँगा।

[भीष्म-प्रतिज्ञा]

४६. रहिहों अस्त्र गहाय कैं—गहाय कै—पकड़वा कर। निज प्रण—अपनी प्रतिज्ञा। यदुराज—श्रीकृष्ण।

कृष्ण ने प्रण किया था कि महाभारत के युद्ध में न तो वे हथियार ही हाथ में लेंगे, और न लड़ेंगे ही। इधर भीष्म की प्रतिज्ञा थी कि युद्ध में वे कृष्ण को अवश्य शस्त्र ग्रहण करावेंगे, उसी का कवि ने यहाँ उल्लेख किया है। हे हरि! अपने प्रण की लाज रख कर तुमको आज अस्त्र पकड़वा के ही रहूँगा। या तो यहाँ भीष्म ही रहेगा अथवा यदुराज तुम ही रहोगे, अर्थात् दो में से एक को अपना प्रण छोड़ना ही पड़ेगा।

४७. शरनि ढाँपि रविमण्डलहिं—शरनि—बाणों से। ढाँपि—आच्छादित कर, ढककर। रवि-मंडलहिं—सूर्य के मंडल को। शोणित-सरित—रक्त की नदी। अन्हाय—स्नान कर। सौं—सौगन्ध, शपथ। युद्ध-मधि—युद्ध में।

हे भगवान्, तुम्हारी ही सौगन्ध! मैं आज लोहू की नदी में स्नान करके तथा सूर्यमंडल को अपनी बाणवर्षा से आच्छादित कर (इस प्रकार युद्ध को भयंकर रूप दे) मैं आप को अस्त्र-ग्रहण करवाकर ही रहूँगा। यही मेरी प्रतिज्ञा है।

४८. तेरी ही सौं युद्ध मधि—शान्तनु-सुत—शान्तनु का बेटा भीष्म। मेटि हौं—मिटा दूँगा। पारथ-रथ-सारथी—अर्जुन के रथ के सारथी अर्थात् श्री कृष्ण। यदुराज—श्री कृष्ण।

हे यदुराज! मैं शान्तनु-सुत आज तुम्हारी ही शपथ खा कर कहता हूँ कि युद्ध में मैं तुम्हारा ही बल पाकर (तुम्हारे ही बूते पर—तुम भक्त के प्रण को अवश्य रखोगे—इस विश्वास पर) तुम्हारे प्रण को भंग करूँगा।

४९. इत पारथ रथ सारथी—दृढ़-प्रण-बीर—दृढ़ प्रतिज्ञा वाले वीर। तिलहू—तिल भर भी। टारे टरैं—हटाए हटें।

इधर अर्जुन के रथ के सारथी श्री कृष्ण हैं, उधर रणधीर भीष्म हैं। दोनों ही दृढ़-प्रतिज्ञ हैं अतएव दोनों ही अपनी प्रतिज्ञा से तिलभर भी टालने से नहीं टलते।

५० मुख श्रम सीकर—श्रम-सीकर—पसीना। दग—नेत्र। अरुण—लाल। रण-रज-रंजित—युद्ध की धूल से धूसरित। पटु—पट, वस्त्र, पीताम्बर। गहि—पकड़ कर। धाये—दौड़े। सुवेश—मनोहर वेश में।

(परन्तु अंत में भक्त की रक्षा के लिए भगवान् श्री कृष्ण अपना प्रण भंग कर और चक्र हाथ में लेकर भीष्म पितामह की ओर बढ़े। उस समय उनकी जो अवस्था थी आगे के पदों में उसका कवि ने बड़ा ही स्वाभाविक और मनोहर चित्र खींचा है) श्रीकृष्ण के ललाट पर पसीने की बूंदें झलझला रही थीं, नेत्र लाल हो रहे थे बाल रण-भूमि की धूल से धूसरित थे, पीताम्बर वायु में फहरा रहा था ऐसे सुन्दर रूप में प्रभु चक्र हाथ में लेकर योद्धा के रूप में भीष्म की ओर दौड़े।

५१. कच रज-रंजित—कच—केश, वाल। रज-रंजित—धूल से भरे हुए। रुधिर-मिलि—रक्त से मिले हुए। श्रमकण—पसीने की बूँदें।

श्री कृष्ण के वाल धूल से धूसरित हो रहे हैं, अंग पर रुधिर के कणों के साथ पसीने की बूँदें झलक रही हैं, एक ओर वायु से पीताम्बर फहरा रहा है, ऐसे वेश में भगवान् हाथ में सुदर्शन चक्र लिए, अस्त्र न धारण करने का अपना प्रण तोड़ कर भीष्म की ओर दौड़े।

५२. जन वत्सल पारथ-सखा—जन-वत्सल—भक्तवत्सल। पारथ-सखा—अर्जुन के मित्र। मेटि के—भंग करके।

हे भक्त-वत्सल, अर्जुन के परम सखा, यदुराज श्रीकृष्ण! आप धन्य हैं, जिन्होंने अपने प्रण को भंग करके अपने भक्त भीष्म-पितामह की लाज रख ली।

५३. प्रण कीनों बहुवीर जग—बहुवीर—अनेक वीरों ने। टेक—शपथ। आजुलौं—आजतक।

संसार में प्रण अनेकों वीरों ने किए हैं, सौगन्ध भी अनेकों वीरों ने ली है (और अपने प्रण को कइयों ने निभाया भी है) परन्तु (इतना सब कुछ होते हुए भी) आज तक भीष्म के व्रत के समान एकमात्र भीष्म का ही व्रत है।

५४. समसरि कासों कीजिए=समसरि—बराबरी। कासों—किससे। भीष्म-व्रतवान—भीष्म या भयंकर व्रत वाला।

भीष्मपितामह की तुलना किससे की जाय, उसकी बराबरी का तो कोई उपमान मिलता ही नहीं। सच पूछिए तो उस भीष्म प्रण करने वाले भीष्म के समान केवल भीष्म ही है और कोई नहीं।

अर्जुन-प्रतिज्ञा

५५. भानु अस्तलौं आजु जौ—भानु-अस्त लौं—सूर्यास्त तक। जौ—यदि। बच्यौ—बचा रहा, जीवित रहा। जयद्रथ-जीव—जयद्रथ के प्राण। तनु=शरीर। जारिहौं=जला डालूँगा।

यदि आज सूर्यास्त तक जयद्रथ जीता बच गया, तो गांडीव धनुष को तोड़ताड़ कर, चिता जलाकर उसमें अपने शरीर को भस्म कर दूँगा।

५६. लै न सक्यो हरि—हरि—श्रीकृष्ण। अधन—नं पारथ—अर्जुन। क्लीब—नपुंसक, कायर, नामर्द। [illegible]

हे हरि ! यदि आज मैं उस अधम जयद्रथ के प्राण न ले सका तो मैं अर्जुन नामर्द कहलाऊँगा और अब से गांडीव को कभी हाथ में नहीं उठाऊँगा।

[कन्ह-प्रतिज्ञा]

५७. तो रक्खौं ढिल्लिय तख्त—तो—तुझे, यहाँ सम्राट् पृथ्वीराज से अभिप्राय है। ढिल्लिय तख्त—दिल्ली के राज-सिंहासन पर भुजन—भुजाओं से। ठिल्लि—ठेलकर, धकेल कर। कनवज—कन्नौज-नरेश। वज्र-पैज—वज्र-प्रतिज्ञा, अटल प्रतिज्ञा। असि—ऐसी। कन्ह-लौं—काका कन्ह की भाँति। को—कौन। अज—आज।

वीर काका कन्ह प्रतिज्ञा करते हुए सम्राट् पृथ्वीराज से कहते हैं कि, कन्नौज-नरेश जयचंदको अपनी भुजाओं से धकेलकर मैं तुझे ही दिल्ली के राज-सिंहासन पर बिठाऊँगा। आज कन्ह की भाँति ऐसी वज्र-प्रतिज्ञा करने वाला इस पृथ्वी पर कौन है ?

बादल-प्रतिज्ञा

५८. जौ न स्वामि निज उद्धरौं—स्वामी=प्रभु, मालिक। निज = अपने। उद्धरौं = मुक्त करूँ।

बादशाह अलाउद्दीन के कारागार से अपने पति महाराज भीमसी (भीमसिंह) को मुक्त कराने के लिए जब महारानी पद्मिनी ने अपने चचेरे भाई बादल से सहायता माँगी, तब उसने यह वीर प्रतिज्ञा की कि यदि मैं अपने स्वामी का उद्धार न करूँ तो अपने बादल नाम को कलंकित करूँ। यही नहीं अपितु मेवाड़ का जल भी कभी न पीऊँगा और न जीते-जी मूँछ ही रखाऊँगा।

५९. इन भुजन तें वैरि दल = वैरि-दल = अरिदल, शत्रु की सेना।

"यदि इन भुजाओं से शत्रु-दल को ठेल कर न ले जा सका तो मैं जीते जी कभी मुँह न दिखाऊँगा और वादल नाम पर कलंक लगा दूँगा।

प्रताप-प्रतिज्ञा

६०. मूँछ न तौलों ऐंठिहौं = न ऐंठिहौं = ताव नहीं दूँगा।

महाराणा प्रताप प्रतिज्ञा करते हुए कहते हैं, कि जब तक मैं चित्तौड़ के क़िले को स्वाधीन न कर पाऊँगा तब तक मैं अपनी मूँछों पर ताव नहीं दूँगा और मैं अपने को भुजा-हीन समझूँगा।

६१. महल नहिं पगु—जब तक मैं चितौड़ के किले पर फिर आजादी का झंडा न फहरा पाऊँगा तब तक राजमहलों में चरण न रखूँगा और जंगलों में झोपड़ी बना कर रहूँगा।

वीर-प्रतिज्ञा

६२. हौं हूँ सिंह-कुमार = हौंहूँ = मैं हूँ। सिंह-कुमार = सिंह का बच्चा। मदमंत = मद से मस्त, मदान्ध। कुंभहि = मस्तक को। नखनु = नाखूनों से। विदारि हौं = विदीर्ण कर दूँगा।

यदि मैं सिंह का बच्चा हूँ, तो उस दुष्ट मदान्ध हाथी के गंडस्थल को नाखूनों से विदीर्ण कर दूँगा और उसके दाँत उखाड़ डालूँगा।

६३. हौ हूँ आजु अगस्त्य—अंचिहौं = पीजाऊँगा, आचमन कर जाऊँगा। अंजुरिन = अंगुलियों से। सहज = आसानी से। सोखिहौं = शोषण कर लूँगा। छुद्र = तुच्छ।

यदि मैं अगस्त्य हूँ तो आज ही इस अभिमानी क्षुद्र समुद्र को अंजुलियों से पान कर जाऊँगा और इस प्रकार सहज ही में इ

सुखा डालूँगा। (अगस्त्य एक अँजुली भर में सारे समुद्र को पी गए थे, ऐसी पौराणिक कथा है।)

६४. हौं हुँ मघवा वज्र—मघवा-वज्र—इन्द्र का वज्र। भूधर शृंग—पर्वत शिखर, पहाड़ की चोटी। खेह—धूल।

यदि मैं इन्द्र का वज्र हूँ तो इस अभिमानी दुष्ट पर्वत-शिखर को चूर-चूर करके धूल में मिला दूँगा। (पहले समय में पर्वतों के भी पंख हुआ करते थे, उन्हें इन्द्र ने अपने वज्र से काट दिया था ऐसी पौराणिक कथा है।)

द्रौपदी-केश-कर्षण

६५. कृष्णा कच कर्षण लखत—कृष्णा-कच-कर्षण—द्रौपदी के केशों का खिंचना। लखत—देखता है। धिक—धिक्कार है। नतग्रीव—गर्दन झुकाए। पौरुप—पुरुपार्थ, विक्रम। बाहुबल—भुजा का बल।

द्रौपदी के बालों को खिचते हुए देख कर भी मस्तक को झुकाए बैठे रहने वाले पार्थ! तेरे लिए धिक्कार है! तेरे पुरुपार्थ को धिक्कार है, तेरे बाहुबल को धिक्कार है और इस तेरे गाँडीव को धिक्कार है।

६६. खैंचत खल तिय-पट—खल—दुष्ट, यहाँ दुःशासन से अभिप्राय है। तिय-पट—स्त्री का वस्त्र। धर्मराज—युधिष्ठिर।

दुष्ट दुःशासन स्त्री का वस्त्र खींच रहा है तो भी तुम तलवार नहीं खींचते हो। हे धर्मराज! ऐसे धर्म, धैर्य और ज्ञान को सौ बार धिक्कार है।

६७. छाँड़ि कहा कृष्णा कचनु—छाँड़ि—छोड़ दे। करषत—खींचता है। मांड़ि उमाहु = उत्साहित होकर। केस-कृसानु—केश रूपी अग्नि। कौरव-कानन-दाहु—कौरव रूपी वन को भस्म।

अरे दुष्ट ! छोड़ दे, उत्साहित होकर क्यों द्रौपदी के बालों को खींचता है । याद रख, वह केश-रूपी अग्नि कौरवों के कुल-रूपी-वन को जला कर राख कर देगी ।

६८. धिक दिल्ली हतभागिनी--हतभागिनी=अभागिनी, गाज = वज्र, बिजली ।

ऐ दुर्भागिनी दिल्ली, तुझे धिक्कार है, अभी तक तू निर्लज्ज होकर खड़ी है ! भरी सभा में द्रौपदी के केशों को खींचे जाते समय तेरे सिर पर वज्रपात क्यों न हो गया ?

६९. गई न धँसि पाताल तूँ—पट-हीन—वस्त्र-हीन ।

ऐ दुर्भागिनी, दिन-दिन निर्धन और आधीन रहने वाली दिल्ली ! तू द्रौपदी को वस्त्रविहीन देख कर पाताल को क्यों न चली गई ? तुझ ऐसी निर्लज्ज को बारबार धिक्कार है !

पद्मिनी-जौहर

७०. वह चित्तौर की पद्मिनी - सुलतान—सुल्तान अलाउद्दीन । सिंहिनी-अधरानु—सिंहिनी के ओठों का । मधु-पान—अमृत पान ।

ऐ सुलतान अलाउद्दीन, तू उस चित्तौड़ की पद्मिनी को कैसे पा सकता है ? बतला क्षुद्र कुत्ते ने सिंहनी के अधरों का अमृतपान कब किया है ? अर्थात् कभी नहीं ।

७१. चंचरीक ! चित्तौर- चंचरीक--भौंरा, अलाउद्दीन से अभिप्राय है । चम्पक-माल-सौं--चंपा की माला की तरह ।

ऐ भ्रमर ! (अलाउद्दीन) तुझे चित्तौड़ में पुष्परस नहीं मिलेगा, तेरे लिए रानी पद्मिनी चम्पक-माल ही सिद्ध होगी । (कहते हैं चम्पा के पुष्प पर भौंरा नहीं बैठता ।)

भारतवर्ष के इतिहास की प्रश्नोत्तरी

(दूसरा भाग)

[ले०—डा० सोमदत्त सूद, बी. ए., कन्या महाविद्यालय, जालंधर]

इसमें यूरोपियन व्यापारियों के भारतवर्ष में आने से लेकर आज तक
का भारत का इतिहास प्रश्न और उत्तर के रूप में दिया गया है। मू० ।=)

हिन्दी साहित्य के इतिहास की प्रश्नोत्तरी

[ले०—श्री देवचन्द्र विशारद]

इस पुस्तक में हिन्दी साहित्य का सारा इतिहास प्रश्न और उत्तर
के रूप में समझाया गया है । परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रायः सारे
प्रश्न इसमें आ गये हैं । पुस्तक ३० अक्टूबर १९३९ तक छप जायगी ।

भारतवर्ष के इतिहास का चार्ट (वर्तमान युग)

इसमें भारत का वर्तमान युग का इतिहास दिया गया है। मूल्य ≡)

हिंदी-भूषण-निबंधमाला

(तीसरा संस्करण)

(ले०—श्री शंभुदयाल सक्सेना, साहित्यरत्न, सेठिया कालेज, बीकानेर)

इस पुस्तक में हिन्दी-भूषण परीक्षा में पहले १०–१२ वर्षों में आए
हुए लगभग ४५ विषयों पर विस्तृत निबन्ध और लगभग इतने ही
खाके (Outlines) दिए गये हैं । भाषा शुद्ध और सरल है । पृष्ठ
संख्या ३०० से भी अधिक और मूल्य १।) मात्र । निबन्ध के पत्र में ही
सब से अधिक विद्यार्थी फेल होते हैं; इसलिए इसकी एक प्रति अवश्य
खरीदिए ।

लोकोक्तियाँ और मुहावरे

(ले०—डा० बहादुरचन्द्र शास्त्री, ऐम. ए., ऐम. ओ. एल., डी. लिट.)

हिन्दी में प्रचलित लोकोक्तियों और मुहावरों के भिन्न भिन्न अर्थ
तथा अपनी भाषा में उनका प्रयोग किस तरह किया जाता है, यह सब
जानने के लिए इस पुस्तक की एक प्रति अवश्य खरीदिए । हिन्दी-रत्न,
हिन्दी-भूषण और मैट्रिकुलेशन के प्रत्येक विद्यार्थी को यह पुस्तक अवश्य
पढ़नी चाहिए । मूल्य ॥)

के बाद रात को वह मशालों के प्रकाश में किले की टूटी हुई दीवार बनवा रहा था—उसके घाव भर रहा था—तब उसी समय अकबर ने उसे अपनी बंदूक का निशाना बनाया।

८०. पत्ता-लौं अकबर अनी—पत्ता लौं—पत्ते की भाँति।

अकबर-अनी—अकबर की सेना। प्राण-प्रसून—प्राण रूपी पुष्प।

वीरवर पत्ता ने अकबर की सेना को पत्ते की भाँति उड़ाकर, फिर मातृ-भूमि चित्तौड़ पर अपने प्राण-पुष्प चढ़ा दिए।

८१. लाज आज मेवाड़ को—हे जयमल, और पत्ता, आज मेवाड़ की लाज बस तुम्हारे ही हाथ में है। फूल के समान अपना शीश हँसते-हँसते इस पर चढ़ा देना।

८२. जहँ जयमल पत्ता वहीं—नेह—प्रेम, स्नेह।

युद्ध-भूमि में जहाँ जयमल होता था वहीं पत्ता भी दिखाई देता था। ये दोनों एक प्राण दो देह थे। इन दोनों का प्रेम आज भी मेवाड़ में अमर है।